04 - 2025 में चमकीली बनी रहेगी आर्थिकी

05 - नये चीनी वायरस से चिन्ता में डूबी दुनिया

A Daily News Magazine

भोपाल

मंगलवार, 7 जनवरी, 2025

06 - बजट के अभाव में स्कूलों की मरम्मत नहीं हुई, जर्जर शालाओं में...

07 - स्वास्थ्य सेवाओं का सशक्तिकरण सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता...

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष -22 अंक-128 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

विदेशी पर्यटकों को भी पर्याप्त तवज्जो देना जरूरी

वीर सांघवी

मुझे लगता है कि आप में से कई लोग छुट्टी पर हैं। आप में से कुछ लोग नए साल का स्वागत करने के लिए अभी-अभी घर लौटे हैं। तो, आइए इस हफ्ते भारत में छुट्टियां मनाने पर गौर करें। यह कॉलम तब लिखा जा रहा है जब मैं श्रीलंका में अपनी छुट्टियां खत्म कर रहा हूं, जो भारत से थोड़ी ही दूरी पर है, लेकिन बहुत कम खर्चीला है और भारत में जितना मैं कर सकता था, उससे ज़्यादा मज़ेदार है।

और अगर आप रेगुलर सोशल मीडिया यूजर हैं तो आपको पता होगा कि हर कोई गोवा के 'फेवरेट हॉलिडे डेस्टिनेशन' का टैग खोने के बारे में पोस्ट कर रहा है या फिर उन शानदार छुट्टियों की तस्वीरें पोस्ट कर रहा है जो वह हमसे कुछ ही दूरी पर स्थित विदेशी देशों में बिता रहे हैं। लेकिन सोशल मीडिया पोस्ट पर भरोसा मत करिए। आंकड़ों पर नज़र डालिए। भारत सरकार ने हमें बताया है कि उम्मीद है कि 2047 तक भारत में 100 मिलियन विदेशी पर्यटक आएंगे। यह बहुत ज़्यादा लगता है, लेकिन दुनिया के बाकी हिस्सों की तुलना में यह कोई बड़ी बात नहीं है। इसलिए, भारत के लिए अगले 20 साल तक उस 100 मिलियन लक्ष्य तक पहुंचना पूरी तरह से संभव होना चाहिए। सिवाय इसके कि, जब तक कुछ नाटकीय रूप से नहीं बदलता, यह नहीं होगा। 100 मिलियन के आंकड़े तक पहुंचने के लिए, विदेशी पर्यटकों के आने की संख्या में कम से कम 15 प्रतिशत की वृद्धि की ज़रूरत होगी। सच्चाई यह है कि पर्यटकों की संख्या बढ़ने के हमारे सबसे अच्छे चरण (2001 से 2019 तक) के दौरान रहे, हम केवल 8.5 प्रतिशत की दर से ही बढ़ पाए और अब, पर्यटकों का आना सच में घट रहा है। हम 2019 में 10.9 मिलियन के शिखर पर थे और फिर कभी उस संख्या तक नहीं पहुंचे।

यह अजीब है क्योंकि दुनिया भर में टूरिज्म फल-फूल रहा है। जब भारत में 10.9 मिलियन टूरिस्ट आए, तब भी दुबई, एक अकेला शहर था, जहां 16.7 मिलियन पर्यटक गए। 2024 की पहली छमाही में, दुबई ने 2019 की इसी अवधि की तुलना में 11 प्रतिशत अधिक विजिटर्स को आकर्षित किया, लेकिन उसी अवधि के दौरान, भारत की संख्या में 10 प्रतिशत की गिरावट आई।

बीते दस साल में हमने यह रुख अपनाना शुरू कर दिया है कि भले ही विदेशी यात्री हमारे यहां न आना चाहें, हमें कोई फर्क नहीं पड़ता। भारतीय मध्यम वर्ग आगे बढ़ रहा है। उसे यात्राएं करना पसंद है। भारतीय हमारे देश की पर्यटक स्थलों में इस कमी को भर देंगे। यह कुछ हद तक समझ में आता है। स्पेन और फ्रांस जैसे देशों का इतनी बड़ी संख्या में पर्यटकों को लुभाने का बड़ा कारण यह है कि यूरोपीय संघ के भीतर आसान पहुंच उन्हें यूरोपीय लोगों के लिए डोमेस्टिक डेस्टिनेशन की तरह बनाती है और हमारे जैसे देशों के लिए डोमेस्टिक डेस्टिनेशन बड़ा लाभ देता है- यह हालांकि, स्थिर है। विदेशियों को बम विस्फोट या स्वास्थ्य संबंधी किसी खतरे से डर लग सकता है, जैसा कि हमारे साथ पहले भी अक्सर होता रहा है, लेकिन भारतीय यात्रा करते रहेंगे। अमेरिका को ही देख लीजिए। अमेरिकी पर्यटक वीज़ा लेना आसान बनाने या अपने हवाई अड्डों पर इमिग्रेशन की कतारों को कम करने की कोशिश नहीं करते, इसका एक कारण यह है कि उन्हें विदेशी पर्यटकों की सच में परवाह नहीं है। संयुक्त राज्य अमेरिका में दो-तिहाई से अधिक पर्यटन उनके अपने देश के यात्रियों से आता है। इसलिए, उन्हें अपने होटलों को भरने या अपने पर्यटक स्थलों को भरने के लिए विदेशी पर्यटकों की जरूरत नहीं है।

अगर आप किसी इंडियन डेस्टिनेशन पर गए हैं (उदाहरण के लिए गोवा या जयपुर) तो आपको पता होगा कि अब भारतीय पर्यटकों की संख्या विदेशियों से कहीं अधिक है। यहां तक कि आगरा में भी, जो पहले विदेशी पर्यटकों पर निर्भर था, आप पाएंगे कि भारतीय पर्यटकों की संख्या बढ़ती जा रही है। तो, क्या हमें अपनी पर्यटन नीति पर पुनर्विचार करना चाहिए? क्या हमें विदेशियों पर ध्यान देना बंद कर देना चाहिए?

हां और नहीं, क्योंकि समस्या यह है कि भारतीय भी अपने देश के पर्यटन स्थलों से तेजी से दूर होते जा रहे हैं। गोवा इसका एक उदाहरण है। मैं खुद कई सालों तक, मैं हर क्रिसमस और नए साल पर गोवा जाता था। लेकिन पिछले दो सालों से, मैंने जानबूझकर गोवा से परहेज किया। एक प्रमुख कारण लागत है। थाईलैंड गोवा के मुकाबले बहुत सस्ता है। अधिक से अधिक भारतीय शहरों से कई सस्ती उड़ानें हैं और थाई बजट होटल गोवा की तुलना में बेहतर और सस्ते हैं। गोवा में बहुत कम अच्छे लग्जरी होटल भी हैं। ये आमतौर पर बैंकॉक के अधिक संख्या वाले और बेहतर लक्जरी होटलों की तुलना में अधिक महंगे हैं।

श्रीलंका की तरह, अन्य पास की डेस्टिनेशन और भी सस्ती है। इस साल सोशल मीडिया पर वियतनाम की ओर से अच्छा प्रयास किया गया। मैं यह देखकर हैरान हूं कि अब यह कितना अच्छा है। और जबकि सुदूर पूर्व में लगभग हर डेस्टिनेशन भारतीय पर्यटक स्थलों के लिए एक गंभीर प्रतियोगी है, मिडल ईस्ट भी अचानक खुल गया है। पांच साल पहले अगर आप मुझसे कहते कि भारतीय नए साल के लिए उज्बेकिस्तान या कजाकिस्तान जाएंगे तो मैं हंसता, लेकिन मेरे जानने वाले ज़्यादातर लोग मिडिल ईस्ट को चुन रहे हैं, क्योंकि वहां की उड़ानें सिर्फ तीन घंटे की होती हैं, होटल अच्छे और सस्ते हैं और बाकी सब चीज़ें प्रतिस्पर्धी कीमतों पर उपलब्ध हैं।

ज़्यादातर मध्यम दूरी वाली हॉलिडे डेस्टिनेशन के लिए वीजा अब कोई समस्या नहीं है। थाईलैंड अब भारतीयों को बिना वीजा के आने की अनुमति देता है। दूसरे देश भी यही कर रहे हैं। इस बात की भी भावना है कि पर्यटकों को कितना महत्व दिया जाता है। अगर भारतीय विदेश में छुट्टियां बिताना पसंद करते हैं, तो हमें इतनी परवाह क्यों है?

ठीक है, क्योंकि पर्यटन अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा है। भारत की जीडीपी में टूरिज्म का योगदान 2002-2003 में 5.8 प्रतिशत से घटकर 2019-20 में 5.2 प्रतिशत हो गया। अभी भी, हम कोविड के दौर से उबर नहीं पाए हैं और अभी भी महामारी से पहले के स्तर तक नहीं पहुंच पाए हैं। क्या कोई रास्ता है? लेकिन यह यह राजनेताओं पर निर्भर है। कई स्थलों में राजनेता पर्यटन से आर्थिक रूप से लाभ कमाते हैं जबकि इसे प्रोत्साहित करने के लिए कुछ भी करने से बचते हैं। यहां तक कि केंद्र सरकार भी पर्यटन को प्राथमिकता नहीं मानती।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

गुरु गोबिंद सिंह जी की जीवन यात्रा सभी के लिए प्रेरणादायी : सीएम

स्कूलों में पढ़ाई जाएगी साहिबजादों के बलिदान की गाथा: मोहन यादव

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि गुरू गोबिंद सिंह ने देश और धर्म के गौरव की रक्षा तथा मूल धर्म की स्थापना के लिए अपने चार साहिबजादों और परिवार का जो बलिदान दिया उसके लिए संपूर्ण राष्ट्र नतमस्तक है। देश के स्वाभिमान और संस्कृति को विदेशी आक्रांताओं के खिलाफ अपने परिवार को कुर्बान कर देने वाली गुरू जी की जीवन यात्रा सभी के लिए प्रेरणादायी है। गुरू गोबिंद सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना कर यह बताया कि देश और संस्कृति के लिए हथियार उठाकर बहादुरी के साथ लड़ना जरूरी है। धर्म, संस्कृति और इतिहास को बचाने का उनका प्रयास सम्पूर्ण विश्व के सामने एक प्रभावी, अतुलनीय और अद्भुत उदाहरण है। हर युग और हर काल में उनकी शहादत याद रखी जाएगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव सिखों के 10वें गुरू खालसा पंथ के संस्थापक गुरू गोबिंद सिंह जी के प्रकाश पर्व पर गुरूद्वारा हमीदिया रोड में मत्था टेकने के बाद उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि गुरू गोबिंद सिंह इस रूप में भी भाग्यशाली थे कि उनके परिवार के छोटे से छोटे बच्चे में भी देश, धर्म व संस्कृति के लिए गौरव की अनुभूति थी और वह अपने धर्म और जीवन मूल्यों के लिए बलिदान देने के लिए तत्पर था। गुरू गोबिंद सिंह ने कई आध्यात्मिक प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास किया। उन्होंने सभी गुरूओं के पवित्र वचनों को एकत्र करते हुए गुरू ग्रंथ साहब को पंथ के मार्गदर्शक का स्वरूप प्रदान किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि साहिबजादों के बलिदान को शालेय पाठ्यक्रम में शामिल किया जाएगा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वीर बालकों की शहादत के दिन, वीर बाल दिवस मनाने का निर्णय लिया। साथ ही ननकानासाहिब कॉरीडोर सहित अनेकों सौगातें समाज को प्रदान की हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि गुरू तेगबहादुर जी के 350वें शहीदी पर्व सहित अन्य आयोजनों में राज्य शासन की ओर से हरसंभव सहयोग प्रदान किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने वीर बाल दिवस 26 दिसम्बर के मौके पर गुरूद्वारा हमीदिया रोड की व्यवस्थाओं को संभालने वाले बच्चों का सम्मान किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव का स्मृति-चिन्ह भेंटकर अभिवादन किया गया। उन्होंने गुरूद्वारे में सेवा भी की और उपस्थित जनसमुदाय का अभिवादन किया। इस अवसर पर सुश्री नेहा बग्गा का सम्मान भी किया गया।

सुप्रभात

मलाल है मगर इतना मलाल थोड़ी है
ये आंख रोने की शिद्दत से लाल थोड़ी है
बस अपने वास्ते ही फ़िक्रमंद हैं सब लोग
यहां किसी को किसी का ख़याल थोड़ी है
परों को काट दिया है उड़ान से पहले
ये ख़ौफ़ ए हिज्र है शौक़ ए विसाल थोड़ी है...
मज़ा तो तब है कि हम हार के भी हंसते रहें
हमेशा जीत ही जाना कमाल थोड़ी है...
लगानी पड़ती है डुबकी उभरने से पहले
गुरूब होने का मतलब ज़वाल थोड़ी है...!!!

– परवीन शाकिर

द्रौपदी की साड़ी जैसे हैं केजरीवाल के वादे

मायावती के भतीजे बोले-ये फेंकते जाएं, हम लपेटते जाएं

नई दिल्ली (एजेंसी)। बसपा सुप्रीमो मायावती के भतीजे और पार्टी के नेशनल को-ऑर्डिनेटर आकाश आनंद का अरविंद केजरीवाल पर दिया बयान चर्चा में है। आकाश आनंद रविवार को दिल्ली के कोंडली में प्रचार कर रहे थे। उन्होंने कहा कि केजरीवाल के वादे ऐसे हैं, जैसे द्रौपदी की साड़ी। ये फेंकते जाएं और हम लपेटते जाएं। आकाश आनंद पहले नेता नहीं हैं, जिन्होंने कोई विवादित बयान दिया है। दिल्ली विधानसभा के चुनाव प्रचार के दौरान कई नेताओं के ऐसे बयान आ रहे, जिन पर विवाद हो रहे हैं। रविवार को ही भाजपा नेता रमेश बिधूड़ी ने प्रियंका गांधी के गालों जैसी सड़क बनाने का बयान दिया था।

प्रधानमंत्री मोदी ने जम्मू रेल डिवीजन का किया उद्घाटन

कहा-2014 तक 35 फीसदी रेलवे ट्रैक का इलेक्ट्रिफिकेशन था, अब 100 फीसदी के करीब है

नई दिल्ली/श्रीनगर (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए जम्मू के नए रेलवे डिवीजन और तेलंगाना में चरलापल्ली न्यू टर्मिनल स्टेशन का उद्घाटन किया। पीएम ने ईस्ट कोस्ट रेलवे के रायगढ़ रेलवे डिवीजन भवन की आधारशिला भी रखी। पीएम ने कहा- पिछला एक दशक भारतीय रेलवे के ऐतिहासिक ट्रांसफॉर्मेशन का रहा है। रेलवे इन्फ्रास्ट्रक्चर में एक विजिबल चेंज आया है। इससे देश की छवि बदली है और देशवासियों का मनोबल भी बढ़ा है। प्रधानमंत्री ने कहा- पिछले 10 वर्षों में रेल कनेक्टिविटी का अद्भुत विस्तार हुआ है। 2014 तक देश में सिर्फ 35 फीसदी रेल लाइनों का इलेक्ट्रिफिकेशन हुआ था। आज हम रेल लाइनों के शत-प्रतिशत इलेक्ट्रिफिकेशन के करीब हैं। बीते 10 वर्षों में 30 हजार किमी. से ज्यादा नए रेलवे ट्रैक बिछाए गए हैं। पीएम ने कहा- हमारा जम्मू-कश्मीर आज रेल इंफ्रास्ट्रक्चर में नए रिकॉर्ड बना रहा है। उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेल लाइन की चर्चा आज पूरे देश में है। ये परियोजना जम्मू-कश्मीर को देश के और हिस्सों के साथ और बेहतरी से जोड़ेगी। इसी परियोजना के तहत दुनिया के सबसे ऊंचे रेलवे आर्च ब्रिज चिनाब का काम पूरा हुआ है।

कोरोना जैसे चीनी वायरस का भारत में तीसरा केस

बेंगलुरु (एजेंसी)। चीन में फैले कोरोना जैसे वायरस एचएमपीवी का भारत में तीसरा केस मिला है। अहमदाबाद में सोमवार को 2 महीने के बच्चे में ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस का संक्रमण मिला। इससे पहले, सोमवार सुबह कर्नाटक में 3 महीने की बच्ची और 8 महीने के बच्चे में यह वायरस मिला था। दोनों बच्चों की जांच बेंगलुरु के एक अस्पताल में की गई थी। गुजरात के अहमदाबाद में 2 महीने के बच्चे को तबीयत खराब होने पर 15 दिन पहले हॉस्पिटल में एडमिट कराया गया था। उसे बच्चे को सर्दी और तेज बुखार था। शुरुआती 5 दिन उसे तक वेंटीलेटर पर भी रखा गया था। इसके बाद हुई जांचों में वायरस के संक्रमण का पता चला। कर्नाटक के दोनों केस के बारे में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताया कि बच्चे रुटीन जांच के लिए अस्पताल पहुंचे थे।

पीथमपुर की रामकी फैक्ट्री में खाली किए जा सकेंगे कंटेनर

हाईकोर्ट में एमपी सरकार बोली-गुमराह करने से हालात बिगड़े, अगली सुनवाई 18 फरवरी को

भोपाल। यूनियन कार्बाइड का जहरीला कचरा पीथमपुर में जलाने के फैसले को चुनौती देने वाली याचिका पर सोमवार को हाईकोर्ट में सुनवाई हुई। चीफ जस्टिस सुरेश कुमार कैत और जस्टिस विवेक जैन की डिवीजन बेंच के सामने सरकार ने कहा- मिस लीडिंग से यह स्थिति बनी। हालात बिगड़े हैं। अदालत में मध्यप्रदेश सरकार की ओर से महाधिवक्ता प्रशांत सिंह ने कहा, '3 दिसंबर को हाईकोर्ट ने यूनियन कार्बाइड फैक्ट्री से जहरीले कचरे को हटाने के लिए चार हफ्ते की समय-सीमा तय की थी। सरकार को चेतावनी भी दी थी कि अगर निर्देश का पालन नहीं किया गया तो अवमानना की कार्यवाही की जाएगी। इसलिए हमें 6 सप्ताह का समय दिया जाए।' इस तर्क को स्वीकार करते हुए हाईकोर्ट ने सुनवाई की अगली तारीख 18 फरवरी दी है। महाधिवक्ता प्रशांत सिंह ने कहा, हाईकोर्ट ने राज्य सरकार को आदेश दिया था कि यूनियन कार्बाइड का रासायनिक कचरा वैज्ञानिक तरीके से नष्ट किया जाए। उसी आदेश के अनुसार, राज्य सरकार ने ग्रीन कॉरिडोर बनाकर पुलिस, डॉक्टर और प्रशिक्षित लोगों की टीम के जरिए इसे कंटेनरों में पैक किया और पीथमपुर ले गए। इससे पहले कि इस रासायनिक कचरे को नष्ट किया जाता, पीथमपुर के आसपास जनता ने कानून-व्यवस्था बिगाड़ने की कोशिश की।

तीन स्टेप में जलेगा कचरा

यूनियन कार्बाइड के कचरे को लेकर भोपाल गैस पीड़ित संघ के सदस्य आलोक प्रताप सिंह ने भी साल 2004 में एक याचिका लगाई थी। उनकी तरफ से सीनियर एडवोकेट नमन नागरथ आज कोर्ट में उपस्थित रहे। उन्होंने बताया- हाईकोर्ट ने यूनियन कार्बाइड के रासायनिक कचरे को नष्ट करने की कार्यवाही के तीन चरण बनाए थे। पहले चरण में रासायनिक कचरे को इंसुलेटर में जलाकर नष्ट करना है। दूसरे चरण में फैक्ट्री डिसमेंटल की जानी है और तीसरे चरण में जमीन के भीतर जो नुकसान हुआ है, उसे ठीक करना है। पहले चरण की कार्यवाही में इस कचरे को भोपाल से पीथमपुर पहुंचाया गया है। एडवोकेट नमन नागरथ ने कहा- आज राज्य शासन ने एक हलफनामा हाईकोर्ट में प्रस्तुत किया। इसमें कोर्ट को बताया कि मामले में सरकार क्या-क्या स्टेप्स ले चुकी है। कोर्ट ने आदेशित किया है कि पब्लिक में जो असंतोष है, सरकार उसे अपने स्तर पर दूर करे।

छत्तीसगढ़ में नक्सल ब्लास्ट, 8 जवान शहीद

● ड्राइवर भी मारा गया, सड़क पर 10 फीट का गड्ढा हुआ ● 25 फीट ऊंचे पेड़ पर मिला गाड़ी का मलबा, कई घायल

रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बीजापुर में नक्सलियों ने बड़ा हमला किया है। जवानों को ले जा रहे एक वाहन पर ब्लास्ट किया गया। बताया जा रहा है कि पुलिस की टीम नारायणपुर से सर्च ऑपरेशन के बाद लौट रही थी। इस दौरान एक पुलिस वाहन को नक्सलियों ने उड़ा दिया है। शुरुआती जानकारी के अनुसार आठ जवान और एक ड्राइवर शहीद हुआ है। नक्सलियों से यह ब्लास्ट दो बजकर 15 मिनट पर किया है। सभी शहीद जवान डीआरजी के हैं। बीजापुर में हुए इस हमले ने पूरे राज्य को हिला कर रख दिया है। सोमवार को कुटरू इलाके में नक्सलियों ने जवानों से भरे एक बख्तरबंद गाड़ी को निशाना बनाया। जानकारी के अनुसार, वाहन पर आईईडी ब्लास्ट किया गया। इस धमाके में नौ जवान शहीद हो गए हैं। कई अन्य जवान गंभीर रूप से घायल भी बताए जा रहे हैं। बस्तर रेंज के आईजी ने पुष्टि की है।

मुख्यमंत्री साय बोले-

जल्द छत्तीसगढ़ से नक्सलवाद का खात्मा होगा- छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा, आज आईईडी विस्फोट में हमारे 8 जवान और एक ड्राइवर शहीद हुए हैं। मैं उनकी शहादत को नमन करता हूं, उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि देता हूं। उनकी शहादत व्यर्थ नहीं जाएगी। जिस तरह से लगातार नक्सलियों को परास्त किया जा रहा है, उससे वे हताश हैं और ऐसी कायराना हरकतें कर रहे हैं।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 18 °c

न्यूनतम 13°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ मंगलवार, 07 जनवरी 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

प्रयागराज में श्रद्धालुओं को दिखेगा शहर का भव्य स्वरूप

गुमनाम शहीदों की दिखेगी गाथा, रात में रोशन होंगे चौराहे

प्रयागराज (एजेंसी)। प्रयागराज में लगने जा रहे महाकुंभ की विश्व के सबसे बड़े सांस्कृतिक, आध्यात्मिक तथा ऐतिहासिक आयोजन का स्वरूप इस बार बदला नजर आएग। मेला क्षेत्र के अलावा शहर को भी नया रूप देने की तैयारी की जा रही है। महाकुम्भ 2025 से पहले प्रयागराज अपनी पुरातन महिमा के साथ-साथ आधुनिक चकाचौंध से सजा दिखेगा। इसकी शुरुआत भी हो गई है। प्रयागराज स्मार्ट सिटी लिमिटेड की ओर से संगम नगरी की ऐतिहासिक गरिमा को संजोते हुए शहर को स्मार्ट बनाने का कार्य किया जा रहा है। ऐसे में यहां आने वाले पर्यटकों और श्रद्धालुओं को अलग ही नजारा दिखेगा। इसको देखते हुए शहर के विभिन्न स्थानों का सौंदर्यीकरण एवं कायाकल्प किया जा रहा है, जिससे आने वाले लोगों को और शहर वासियों को स्मार्ट प्रयागराज का अनुभव हो सके। देश की आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले अमर शहीदों को समर्पित यह शहीद स्मारक स्मार्ट सिटी लिमिटेड की तरफ से 2.5 करोड़ रुपए की लागत से तैयार किया गया है।

रात्रि में प्रयाग की सुंदरता में चार-चांद लगा रहे इलुमिनेशन टावर

स्मार्ट सिटी मिशन के तहत प्रयागराज में बनाए गए इलुमिनेशन टावर्स शहर में विशेष कर रात्रि के समय आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं। इस परियोजना के तहत, 44 लाख रुपए की लागत से बालसन चौराहे पर तीन चमकते हुए टावर स्थापित किए गए हैं। इनमें से दो टावर 7 मीटर ऊंचे हैं, जबकि एक टावर 10 मीटर ऊंचा है। ये टावर्स पूरी तरह एलईडी लाइट से लैस हैं, जिससे सुंदरता तो बढ़ती ही है साथ ही ऊर्जा की खपत में भी कमी आती है। इन टावरों को पूरी तरह से डस्ट एवं वॉटर प्रूफ मटेरियल से बनाया गया है। महाकुंभ जैसे आयोजन को देखते हुए प्रयागराज को आकर्षक और शानदार बनाने के लिए यह टावर स्थापित किए गए हैं, जो शहर की भव्यता को और बढ़ाएं।

संक्षिप्त समाचार

तमिलनाडु गवर्नर ने बिना स्पीच दिए विधानसभा से किया वॉकआउट

- कहा-राष्ट्रगान का अपमान हुआ

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाड़ के विधानसभा सत्र के दौरान सोमवार को सदन में हाईलेवल ड्रामा हुआ। राज्यपाल आरएन रवि ने राष्ट्रगान के अपमान का आरोप लगाते हुए अभिभाषण देने से इनकार कर दिया और सत्र बीच में ही छोड़कर विधानसभा से चले गए। इससे पहले फरवरी 2024 में भी वे ऐसा कर चुके हैं। परंपरा के अनुसार, सदन की कार्यवाही शुरू होने पर राज्य गान तमिल थाई वल्थु गाया जाता है और आखिरी में राष्ट्रगान गाया जाता है लेकिन राज्यपाल रवि ने इस नियम पर आपत्ति जताते हुए कहा कि राष्ट्रगान

दोनों समय गाया जाना चाहिए। राज्यपाल के इस व्यवहार पर सीएम स्टालिन ने कहा कि यह बचकाना और लोकतांत्रिक परंपराओं का उल्लंघन है। जब राज्यपाल अपने संवैधानिक कर्तव्यों का पालन नहीं कर सकते, तो वे इस पद पर क्यों बने हुए हैं। यह राज्य के लोगों का अपमान है। राजभवन ने एक बयान में कहा, आज तमिलनाडु विधानसभा में एक बार फिर भारत के संविधान और राष्ट्रगान का अपमान किया गया। राष्ट्रगान का सम्मान करना हमारे संविधान में निहित है।

अपने ही दो बर्खास्त अफसरों को पकड़ नहीं पाई पंजाब पुलिस

कहां हैं डीएसपी गुरशेर सिंह और एआईजी राज जीत हुंडल

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब पुलिस अपने ही भ्रष्ट अधिकारियों को पकड़ने में नाकाम रही है। ये अधिकारी गंभीर अपराधों के आरोपी हैं और फरार हैं। हम बात कर रहे हैं बर्खास्त एआईजी राज जीत सिंह हुंडल और डीएसपी गुरशेर सिंह संधू की। पुलिस की इस नाकामी की कड़ी आलोचना हो रही है। खासकर इसलिए क्योंकि पुलिस ने कुछ अन्य जघन्य अपराधों को कुछ ही दिनों में सुलझा लिया है। पंजाब पुलिस के इंस्पेक्टर जनरल (मुख्यालय) सुखचैन सिंह गिल ने साल के

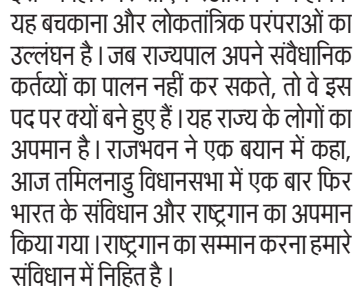

अंत में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में पुलिस के कामकाज की तारीफ की थी। उन्होंने कई बड़े मामलों को सुलझाने में पुलिस की सफलता पर जोर दिया लेकिन बर्खास्त एआईजी राज जीत सिंह हुंडल और डीएसपी गुरशेर सिंह संधू को गिरफ्तार करने में पुलिस की नाकामी पर उन्होंने कुछ नहीं कहा। बता दें कि हुंडल दो साल से ज्यादा समय से फरार हैं। हुंडल को 17 अप्रैल, 2023 को बर्खास्त कर दिया गया था। हुंडल ने ज़मानत पाने के लिए हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट का दरवाज़ा भी खटखटाया है। वहीं संधू पर गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई का पुलिस हिरासत में टीवी इंटरव्यू करवाने का आरोप है। उन पर जालसाजी और भ्रष्टाचार के भी आरोप हैं। डीएसपी संधू के बारे में कहा जाता है कि वह विदेश भाग गया है। पंजाब पुलिस ने उसे सेवा से हटा दिया था।

युवा शक्ति की सहभागिता से होगा विकसित भारत का निर्माण : सारंग

प्रधानमंत्री मोदी की उपस्थिति में चयनित दल राष्ट्रीय युवा उत्सव में देंगे प्रस्तुति

भोपाल। खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में हमारी युवा शक्ति को प्रोत्साहन देने के निरंतर प्रयास हो रहे हैं। आज का युवा न केवल राष्ट्र का वर्तमान है, बल्कि कल का नेतृत्वकर्ता भी है। विकसित भारत 2047 का सपना तभी साकार होगा, जब हमारे युवा अपनी ऊर्जा, संकल्प और सृजनशीलता को राष्ट्रहित में लगाएंगे। श्री सारंग ने कहा कि युवाओं को अपने अधिकारों के साथ अपने कर्तव्यों के प्रति भी सजग रहना होगा। देश के प्रति समर्पण की भावना और कर्तव्य का बोध ही वह आधार है, जो हमारे युवाओं को अद्वितीय बना सकता है। मंत्री श्री सारंग सोमवार को भोपाल स्थित तात्या टोपे स्टेडियम में 28वें राज्य स्तरीय युवा उत्सव का शुभारंभ कर संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने विज्ञान प्रदर्शनी का भी अवलोकन किया। यह उत्सव 8 जनवरी तक चलेगा। इसमें प्रदेश के 10 संभागों से 15 से 29 वर्ष की आयु वर्ग के लगभग 350 युवा प्रतिभागी भाग ले रहे हैं। इस राज्य स्तरीय युवा उत्सव के विजेता 11-12 जनवरी को नई दिल्ली में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मुख्य आतिथ्य में आयोजित राष्ट्रीय युवा उत्सव में भाग लेंगे। मंत्री श्री सारंग ने युवाओं का आहवान करते हुए कहा कि समाज और राष्ट्र के निर्माण के लिये अपना सर्वश्रेष्ठ दें, जिससे मानव जाति उन्हें सदैव याद रखे। युवा उम्र से नहीं जज्बे से होते है। युवा शक्ति ही देश में नये आयाम स्थापित करती है।

समाज और राष्ट्र के निर्माण में युवाओं की महती भूमिका है। श्री सारंग ने युवाओं को पर्यावरण, पानी और बिजली बचाने का भी संदेश दिया। उन्होंने कहा कि मेहनत और लगन से ही सफलता अर्जित की जा सकती है। ईमानदारी और अनुशासन के साथ संयम की भी जरूरत है। अपने दायित्व निर्वहन करना ही जिम्मेदारी है। युवाओं में कर्तव्य बोध होना बहुत जरूरी है। सशक्त और संस्कारी युवा ही मध्यप्रदेश और देश की पहचान बने।

युवा उत्सव प्रतिभाओं को निखारने में सहायक

अपर मुख्य सचिव श्री मनु श्रीवास्तव ने कहा कि युवा उत्सव प्रतिभाओं को निखारने में सहायक सिद्ध होगा। युवाओं में युवा उत्सव की भावना केवल उत्सव तक ही सीमित न रहे बल्कि जीवन में ऊर्जा और उमंग के साथ हमेशा बनी रहे। खेल उत्सव का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन कर सरस्वती वंदना के साथ हुआ। इस अवसर पर समूहों द्वारा आकर्षक सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गई।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव के मुख्य आतिथ्य में होगा उत्सव का समापन

तीन दिवसीय राज्य स्तरीय युवा उत्सव का समापन 8 जनवरी को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मुख्य आतिथ्य में होगा। समापन समारोह में प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मानित किया जाएगा, जो 12 जनवरी को नई दिल्ली में आयोजित 28वें राष्ट्रीय युवा उत्सव में मध्यप्रदेश का प्रतिनिधित्व करेंगे। 28वां राष्ट्रीय युवा उत्सव इस वर्ष 10 से 12 जनवरी 2025 को नई दिल्ली के भारतमंडपम में आयोजित किया जा रहा है। इसमें देशभर के 15 से 29 वर्ष के लगभग 7500 प्रतिभागी हिस्सा लेंगे। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी इस महोत्सव में स्वयं उपस्थित रहेंगे और युवाओं से संवाद करेंगे। इस वर्ष राष्ट्रीय युवा उत्सव का आयोजन 'पंच प्राण' और 'आजादी के अमृत महोत्सव' के उपलक्ष्य में किया जा रहा है। इसका उद्देश्य देश के युवा प्रतिभाओं को एक सशक्त मंच प्रदान करना है, जहां वे अपनी कला और कौशल का प्रदर्शन कर सकें। प्रदेश में जिला, संभाग और राज्य स्तर पर आयोजित इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से युवाओं को राष्ट्रीय मंच तक पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा है। इस महोत्सव के जरिए युवा प्रतिभाओं को सशक्त मंच उपलब्ध कराना और उन्हें देश की प्रगति में योगदान के लिए प्रेरित करना मुख्य उद्देश्य है। इस आयोजन में समूह लोक गीत, समूह लोक गायन, पेंटिंग, भाषण, विज्ञान मेला, कहानी लेखन और कविता लेखन जैसी 7 विधाओं में राज्य स्तरीय प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं। राज्य स्तरीय युवा उत्सव के विजेता 8 जनवरी की रात्रि को भोपाल से नई दिल्ली के लिए रवाना होंगे, जहां वे 12 जनवरी तक आयोजित राष्ट्रीय युवा उत्सव में भाग लेंगे।

यूपी में 56 महिला विधायकों के सम्मेलन की तैयारियां शुरू

कानपुर (एजेंसी)। कॉमनवेल्थ पार्लियामेंट्री एसोसिएशन द्वारा आयोजित आठ जनवरी को बिठूर में यूपी-उत्तराखंड की महिला विधायकों का प्रतिनिधित्व, सदन की कार्यवाही में सहभागिता बढ़ाने और संसदीय लोकतंत्र को मजबूत करने में महिला सदस्यों की भूमिका पर मंथन होगा। इसमें उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड की महिला विधायकों के साथ ही सांसद भी भाग लेंगी। सम्मेलन का शुभारंभ आठ जनवरी को सामूहिक फोटोग्राफी से होगा। इस आयोजन को लेकर तैयारियां शुरू हो गई हैं। सोमवार को फायर सर्विस से लेकर पुलिस कमिश्नर अखिल कुमार, ज्वाइंट पुलिस कमिश्नर हरीश चंदर समेत अन्य अधिकारियों ने कार्यक्रम स्थल सिंहपुर, बिठूर स्थित होटल इटरनिटी का निरीक्षण किया। सबसे पहले विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना का संबोधन होगा।

बीपीएससी कैंडीडेट्स प्रदर्शन में घिरे पीके जाएंगे जेल

- कंडीशनल बेल लेने से कर दिया इनकार, जेल जाने को तैयार
- कोर्ट अपने फैसले पर कायम, कहा- ऐसा प्रदर्शन दोबारा न हो

पटना (एजेंसी)। जनसुराज के संस्थापक प्रशांत किशोर को जेल भेजने की तैयारी है। उन्हें 14 दिनों की न्यायिक हिरासत में भेजा जा सकता है। पटना सिविल कोर्ट के बाहर इसे लेकर तैयारियां शुरू हो गई हैं। पटना के गांधी मैदान में आमरण अनशन पर बैठे जनसुराज के संस्थापक प्रशांत किशोर को पुलिस ने सोमवार सुबह गिरफ्तार किया था। वो 2 जनवरी की शाम 5 बजे से बीपीएससी अभ्यर्थियों के समर्थन में आमरण अनशन पर थे। पटना सिविल कोर्ट में उनकी पेशी हुई। आईजी आरती उपाध्याय की कोर्ट से उन्हें 25 हजार के निजी मुचलके पर

बेल मिल गई है। कोर्ट में पेशी के दौरान प्रशांत किशोर ने खुद बहस की। उन्होंने जज को बताया कि किस तरीके से पुलिसिया बर्बरता की गई। कोर्ट से जमानत मिल गई है, लेकिन प्रशांत किशोर सशर्त जमानत लेने के लिए तैयार नहीं हैं। प्रशांत किशोर बेल बॉन्ड पर साइन नहीं कर रहे हैं। उनकी ओर से जुडिशियल कस्टडी की मांग की गई है। दरअसल कोर्ट ने कहा है कि आगे से ऐसी कोई भी काम नहीं करेंगे जिसकी वजह से आम लोगों को दोबारा परेशानियों का सामना करना पड़े। पीके इसका विरोध कर रहे हैं। जज अपने फैसले पर कायम हैं। इससे पहले आज सुबह 4 बजे पटना पुलिस ने गांधी मैदान से उन्हें जबरन हटाया। इस दौरान पुलिस को भारी विरोध का सामना भी

करना पड़ा। समर्थक का दावा है कि हटाने के दौरान एक पुलिस वाले ने प्रशांत किशोर को थप्पड़ भी मारा और जबरन वहां से उठाकर एंबुलेंस में बैठाया। वीडियो में दिख रहा है कि धरने पर बैठे प्रशांत किशोर को पुलिस उठाने के लिए जोर-जबर्दस्ती कर रही है। इस बीच उनके साथ बैठे बाकी लोग प्रशांत के हाथ-पैर पकड़कर उन्हें पुलिस से बचाने की जद्दोजहद करने लगते हैं। पुलिसकर्मी इन लोगों को खींचकर हटाती है। इस खींचतान के बीच एक कार्यकर्ता प्रशांत को पीछे से आकर पकड़ लेता है। पुलिस उसे हटाने के लिए कार्यकर्ता के सिर पर एक थप्पड़ मारती है, तभी प्रशांत उसे बचाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाते हैं। इसी आधार पर कार्यकर्ता दावा कर रहे हैं कि पुलिस ने थप्पड़ प्रशांत किशोर को मारा था। हालांकि, बाद में पुलिस प्रशांत को चारों ओर से घेरकर बैठे कार्यकर्ताओं को हटाती है। जिस चादर पर प्रशांत बैठे थे, उसे खींचकर हटाती है और प्रशांत को उठाकर ले जाती है। पुलिस ने पहले से प्रशांत किशोर को हटाने की तैयारी कर ली थी।

संसाधनों से समृद्ध और निवेश संभावनाओं से परिपूर्ण है शहडोल : मुख्यमंत्री

शहडोल में प्रदेश की 7वीं रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव 16 जनवरी को

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि शहडोल जिले में समृद्ध खनिज संपदा, सांस्कृतिक विरासत और रणनीतिक भौगोलिक स्थिति के चलते औद्योगिक विकास की अपार संभावनाएं है। प्राकृतिक संसाधनों और औद्योगिक अवसरों से परिपूर्ण इस क्षेत्र में अब औद्योगिक निवेश के नए द्वार खुलेंगे। शहडोल में 16 जनवरी 2025 को आयोजित होने वाली प्रदेश की 7वीं रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव (RIC) इस दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है, जो क्षेत्रीय विकास के साथ औद्योगिक विस्तार के लिए एक महत्वपूर्ण मंच साबित होगा।

प्रमुख कोयला उत्पादक क्षेत्र है शहडोल- खनिज संपदा से भरपूर शहडोल जिला भारत के प्रमुख कोयला उत्पादक क्षेत्रों में से एक है और यहां की भूमि फायर क्ले, मीथेन गैस और अन्य महत्वपूर्ण खनिजों से समृद्ध है। सोहागपुर कोलफील्ड, जो एशिया के सबसे बड़े कोयला भंडारों में से एक है, ऊर्जा उत्पादन और खनन उद्योगों के लिए शहडोल को रणनीतिक महत्व प्रदान करता है। यहां की वन संपदा, जैव विविधता और जैविक उत्पाद इसे वन आधारित उद्योगों और औषधीय उत्पादों के क्षेत्र में एक प्रमुख स्थान बनाती है। शहडोल की भौगोलिक स्थिति इसे औद्योगिक और लॉजिस्टिक्स केंद्र के रूप में और अधिक महत्वपूर्ण बनाती है। यह जिला मध्यप्रदेश को छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों से जोड़ता है। बेहतर सड़क और रेलवे नेटवर्क होने से यह क्षेत्र व्यापार और माल परिवहन के लिए उपयुक्त है। यह क्षेत्र औद्योगिक क्लस्टर के रूप में विकसित होने की क्षमता भी रखता है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने वर्ष 2025 को 'उद्योग वर्ष' के रूप में घोषित किया है। इस पहल का उद्देश्य राज्य को निवेश और औद्योगिक विकास का हब बनाना है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव का विजन है कि शहडोल जैसे खनिज संसाधन संपन्न क्षेत्र को औद्योगिक और आर्थिक केन्द्र में विकसित किया जाए। उनके नेतृत्व में राज्य सरकार ने निवेशकों को आकर्षित करने के लिए कई प्रगतिशील नीतियों को लागू किया है। इनमें सिंगल विंडो क्लीयरेंस प्रणाली, भूमि और कर प्रोत्साहन, विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) और औद्योगिक पार्कों की स्थापना शामिल है।

औद्योगिक विकास की नई संभावनाएँ होंगी सृजित- शहडोल रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव (RIC) से निवेश और औद्योगिक विकास के लिए नई संभावनाएं सृजित होंगी। इस कॉन्क्लेव में निवेशक, उद्यमी और नीति-निर्माता मिलकर क्षेत्र की क्षमताओं और संभावनाओं पर विचार-विमर्श करेंगे। यह आयोजन न केवल शहडोल की औद्योगिक क्षमताओं को प्रदर्शित करेगा, बल्कि इसे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय निवेश मानचित्र पर स्थापित करने में भी मदद करेगा। फरवरी-2025 में भोपाल में होने वाली ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट शहडोल की औद्योगिक संभावनाओं को वैश्विक मंच पर ले जाने का एक और बड़ा अवसर होगी।

पहले शिवसेना यूबीटी अब शरद पवार की पार्टी ने की तारीफ

महाराष्ट्र के सीएम देवेंद्र फडणवीस का फैन बन रहा है विपक्ष

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस की तारीफ विपक्ष कर रहा है। शिवसेना यूबीटी के बाद अब राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी एसपी भी सीएम के कामों की तारीफ करती नजर आ रही है। खास बात है कि यह घटनाक्रम ऐसे समय पर हुआ है, जब पवार परिवार के बीच सुलह की चर्चाएं जोर पकड़ रही हैं। बारामती सांसद और वरिष्ठ नेता शरद पवार की बेटी सुप्रिया सुले ने कहा है कि सिर्फ फडणवीस ही हैं, जो गंभीरता से काम कर रहे हैं। रिपोर्ट के अनुसार, सुले ने फडणवीस के गढ़चिरौली दौरे को लेकर कहा, देवेंद्र फडणवीस पहले दिन से ही एक्शन में हैं। ऐसा लगता है कि वह एकमात्र हैं, जो सक्रिय होकर काम कर रहे हैं।

छत्तीसगढ़ पत्रकार मौत केस

पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में सिर पर मिले 15 बड़े निशान

जगदलपुर/बीजापुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ में बीजापुर जिले के पत्रकार मुकेश चंद्राकर हत्याकांड का मुख्य आरोपी और मास्टरमाइंड सुरेश चंद्राकर गिरफ्तार हो गया है। चंद्राकर को स्पेशल इन्वेस्टीगेशन टीम ने 5 जनवरी की देर रात हैदराबाद से गिरफ्तार किया। फिलहाल उससे पूछताछ की जा रही है। आरोपी सुरेश, पत्रकार मुकेश चंद्राकर का चचेरा भाई है।

मामले में सुरेश के 3 सगे भाइयों समेत 4 आरोपी पहले ही पकड़े जा चुके हैं। मुकेश की पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में सिर पर चोट के 15 निशान मिले थे। कितनी बुरी तरह हत्या की गई, इसका अंदाजा इसी बात से लगा सकते हैं कि लिवर के 4 टुकड़े मिले, गर्दन टूट गई और हार्ट फट गया था। 5 पसलियां भी टूटी हुई थीं। पोस्टमॉर्टम करने वाले डॉक्टर के मुताबिक दो या दो से अधिक लोगों ने मुकेश की हत्या की है। मुकेश के शरीर पर इतना तेज वार किया गया है कि शरीर के कई अंग जख्मी हो गए। मीडिया से बात करते हुए डॉक्टर ने बताया कि उन्होंने 12 सालों में कभी ऐसा केस नहीं देखा। सुरेश चंद्राकर पेशे से ठेकेदार है और राजनीति से भी जुड़ा हुआ है।

समय सीमा में नर्सिंग कॉलेज की काउंसलिंग प्रक्रिया करें पूर्ण : उप मुख्यमंत्री शुक्ल

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने मंत्रालय, भोपाल में लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग के विभिन्न विषयों की विस्तृत समीक्षा की और आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने नर्सिंग कॉलेजों की काउंसलिंग प्रक्रिया एवं मान्यता से संबंधित अद्यतन स्थिति की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने उच्च न्यायालय द्वारा निर्देशित समय-सीमा के भीतर समस्त प्रक्रियाओं को पूर्ण करने के निर्देश दिए, ताकि छात्रों को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े।

एचएमपीवी वायरस की स्थिति पर रखें सतत निगरानी– उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने मेडिकल कॉलेजों में पे-प्रोटेक्शन से संबंधित प्रस्ताव को तैयार कर कैबिनेट अनुमोदन के लिए शीघ्र प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। उन्होंने एचएमपीवी वायरस की वर्तमान स्थिति पर विशेष ध्यान देने को कहा। उन्होंने केंद्र सरकार के निर्देशों के अनुरूप सतत निगरानी रखने और आवश्यक स्वास्थ्य व्यवस्थाओं की तैयारी रखने के निर्देश दिए।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग के अधोसंरचनात्मक विकास कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार और सुधार हेतु अधोसंरचना विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए। प्रमुख सचिव लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा श्री संदीप यादव, आयुक्त स्वास्थ्य श्री तरुण राठी और संचालक लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा (नर्सिंग एवं पैरामेडिकल) श्री मनोज सरियाम उपस्थित रहे।

मंत्री राकेश शुक्ला की 'अपनत्व सेल्फी' बनी जनता और कार्यकर्ताओं के चेहरे की मुस्कान..

भोपाल। अमूलन देखने में आता है कि जनता और कार्यकर्ता जब मंत्री से मिलने आते हैं तो सेल्फी बनती है लेकिन जब सरकार के मंत्री ही कार्यकर्ताओं और जनता के बीच जाकर खुद ही मोबाइल से सेल्फी ले तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए। जी हां मोहन सरकार में नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा मंत्री राकेश शुक्ला कुछ ओर मंत्रियों से हटकर है। मंत्री राकेश शुक्ला के भोपाल स्थित बंगले पर मिलने वालों का ताता लगा रहता है। ऐसे में सेल्फी भी होती है लेकिन मंत्री राकेश शुक्ला ने जनता और कार्यकर्ताओं से सीधे जुड़ाव का नायाब तरीका खोजा है। मंत्री राकेश शुक्ला के यहां मिलने वाले लोगों को अपनत्व का एहसास हो। इसको लेकर मंत्री राकेश शुक्ला स्वयं ही मोबाइल से सेल्फी लेकर जनता और कार्यकर्ताओं को देते हैं। मंत्री राकेश शुक्ला के 'अपनत्व' दुलार से बंगले आने वाले कार्यकर्ताओं के चेहरो पर एक अजीब सी मुस्कान दिखलाई पड़ती है।

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो सांसद विष्णुदत्त शर्मा ने सोमवार को निर्माणाधीन प्रदेश कार्यालय में लेंटर (छत) का कार्य शुरू होने से पहले विधि-विधान से पूजा-अर्चना की। इस अवसर पर प्रदेश कार्यालय मंत्री डॉ. राघवेन्द्र शर्मा उपस्थित रहे।

नहीं लगा सीएम का जनता दरबार, कई फरियादी पहुंचे

अफसरों ने लिए शिकायती आवेदन,लोगों ने कहा–उम्मीद थी मुख्यमंत्री मिलेंगे

भोपाल। भोपाल में सीएम डॉ. मोहन यादव के जनता दरबार लगाने की खबर सुनकर प्रदेशभर से लोग सीएम हाउस पहुंच गए। हालांकि यहां जनता दरबार की कोई तैयारी नहीं थी। अधिकारियों ने लोगों से शिकायती आवेदन लिए और समस्याओं के समाधान का भरोसा दिया। लेकिन मुख्यमंत्री से न मिल पाने के कारण लोग निराश नजर आए। सीहोर जिले के चंदेरी गांव का किसान एमएस मेवाड़ा अन्य किसानों के साथ कार में छोटा सा हल लेकर मुख्यमंत्री से मिलने पहुंचे। उन्होंने कहा, चैनल्स और अखबारों में यह खबर देखी थी कि आज सुबह 10:00 बजे से 12:00 बजे तक मुख्यमंत्री जी जनता की

समस्याओं का समाधान करेंगे। ऐसे में हम लोगों ने सोचा कि हमारे सीहोर जिले के चंदेरी, नयाखेड़ा रामपुर के किसानों को सड़क न होने से समस्या हो रही है। सीएम को हल भेंट करेंगे और साफा बांधकर उनका स्वागत करेंगे ताकि हमारे गांव की रोड की समस्या हल हो जाए। हमारे गांव रायपुर नया खेड़ा में अनुसूचित जाति बस्ती में रोड नहीं है। उसकी फाइल वल्लभ भवन में चल भी रही हैं। हमें उम्मीद थी कि मुख्यमंत्री जी मिलेंगे लेकिन मुलाकात नहीं हो पाई।

मैहर से आई बहन ने कहा–बिल्डर ने भाई की हत्या करा दी– मैहर जिले के लटा गांव की साधना गौतम मुख्यमंत्री निवास पहुंचीं। उन्होंने बताया कि उनके भाई ने भोपाल के कटारा हिल्स इलाके में एक बिल्डर से फ्लैट खरीदा था। बिल्डर ने उनके भाई की हत्या करवा दी। अब, भाई का फ्लैट खाली पड़ा होने के बावजूद, वहां बिल्डर उन्हें तरह-तरह से परेशान कर रहा है। साधना बताती हैं उनके फ्लैट पर शराब पीकर बहुत सारे लोग आते हैं। मेरे और मेरे पति के ऊपर आरोप लगाए जाते हैं कि मैं और मेरे पति गांजा बेचते हैं, हमें गांजा बेचने के आरोप में थाने में बंद करने की धमकियां दी जा रही हैं। थाने में शिकायत करने पर टीआई ने गाली-गलौज की और 181 पर की गई शिकायत वापस लेने का दबाव बनाया। तीन-चार गुंडे मुझे इतना परेशान कर रहे हैं कि मैं अपने बच्चों को लेकर दूसरों के घर में पड़ी हुई हूं। मेरे रहने के लिए घर तक नहीं है। मैं आज मुख्यमंत्री जी से मिलने के लिए आई थी। लेकिन मुलाकात नहीं हो पाई। बुरहानपुर से आई सरिता पटेल ने बताया कि गौरव और निरंजन नागर से उन्हें लगातार प्रताड़ित किया जा रहा है। हमारे घर की बिजली और पानी का कनेक्शन काट दिया गया है। बाथरूम के बाहर कैमरे लगा दिए गए हैं, जहां हमारी बच्चियां नहाती हैं। मैं यहां 10 बार भोपाल मुख्यमंत्री के ऑफिस आ चुकी हूं लेकिन यहां पर आवेदन ले लेते हैं, कोई कार्रवाई नहीं होती। पुलिस थाने से लेकर वहां के सारे अधिकारी मिले हुए हैं। मेरी कोई सुनवाई नहीं हो रही हैं। सरिता बताती है, अधिकारी कहते हैं कि आपका मामला कोर्ट में चल रहा है।

3 लाख 11 हजार राम नाम लिखकर बनाया राम दरबार

इंदौर की बेटी की पांच महीने की मेहनत,लॉकडाउन में खुद से पेंटिंग करना सीखा

भोपाल। इंदौर की 16 साल की अंजनी पोरवाल की राम दरबार की पेंटिंग सभी का ध्यान आकर्षित कर रही है। इस अद्भुत पेंटिंग में अंजनी ने तीन लाख 11 हजार बार राम नाम लिखा है। यह पेंटिंग अपने आप में अद्भुत है। दूर से देखने पर पेंटिंग में सामान्य राम दरबार की तस्वीर लगती है, लेकिन जैसे ही पास से उसे देखा जाता है, तो पता चलता कि इसमें राम नाम लिखा हुआ हैं। अंजनी 11वीं क्लास की स्टूडेंट हैं और इंदौर के रेवेन्यू नगर में रहती है। पेंटिंग बनाने में उन्हें पांच महीने का समय लगा। इस कृति को उन्होंने रणजीत हनुमान मंदिर में भेंट किया है। अंजनी बताती हैं कि पहले उन्हें पेंटिंग/ड्राइंग का कोई शौक नहीं था, लेकिन लॉकडाउन में खुद से पेंटिंग करना सीखा। धीरे-धीरे उन्हें इसमें रुचि बढ़ी और वह अलग-अलग तरह की पेंटिंग बनाने लगीं। अंजनी पेन आर्ट, चारकोल आर्ट, पेंसिल आर्ट और पेंटिंग करती हैं। अंजनी के घर में उनकी कई पेंटिंग सजी हुई हैं और जब भी कोई आता है, तो उसे यह लगता है कि यह किसी प्रोफेशनल ने बनाई है। अंजनी बताती हैं कि राम दरबार की इस तस्वीर को बनाने में उन्हें पांच महीने का समय लगा। अलग-अलग पेन से उन्होंने तीन लाख 11 हजार बार राम का नाम लिखकर राम दरबार बनाया। अलग-अलग पैन के रंगों का समागम देखने में काफी सुंदर लगता है। राम दरबार की इस तस्वीर को अंजनी ने अपने परिवार के साथ रणजीत हनुमान मंदिर में भेंट की है। हालांकि दो दिन के लिए उन्होंने यह तस्वीर वापस ली है, ताकि वह प्रदर्शनी में सभी को दिखा सकें। इसके बाद वह इसे फिर से मंदिर में भेंट करेंगी। अंजनी ने एक और तस्वीर बनाई है, जिसमें हनुमान जी का चेहरा है और इसमें रामायण के सभी प्रसंग देखने को मिलते हैं। कई लोगों ने इस तस्वीर को बहुत पसंद किया है। अंजनी को भी यह तस्वीर काफी पसंद है। इस तस्वीर के लिए अंजनी को गोल्ड मेडल भी मिल चुका है, साथ ही इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स का प्रमाणपत्र भी प्राप्त हुआ है। हाल ही में इंदौर आए बागेश्वर धाम के पं. धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री के लिए भी अंजनी एक तस्वीर लेकर उनसे मिलने गई थीं, लेकिन उनकी मुलाकात नहीं हो सकी। पोरवाल परिवार में हमेशा से धार्मिक माहौल रहा है। अंजनी जब पांच महीने की थीं, तब से उनका परिवार हर साल मेहंदीपुर बालाजी दर्शन के लिए जाता है। अंजनी के नाना भी उन्हें रोजाना रणजीत हनुमान मंदिर दर्शन कराने के लिए ले जाते रहे हैं। इसलिए उनका जुड़ाव बचपन से ही धार्मिक गतिविधियों से रहा है। अंजनी कहती हैं कि जब भी वह ड्राइंग करती हैं, तो उन्हें लगता है कि वह भगवान की पेंटिंग बना रही हैं, खासतौर पर हनुमान जी की, क्योंकि हनुमान जी से उनकी काफी आस्था जुड़ी है। अंजनी ने ज्यादातर हनुमान जी की पेंटिंग बनाई हैं और सभी सफल रही हैं। अंजनी ने अपने घर के पैसेज में दीवार पर एक सुंदर हाथी की पेंटिंग बनाई है। इसके अलावा घर में रणजीत हनुमान जी के अलग-अलग स्वरूप में तस्वीरें लगी हैं। श्रीनाथ जी की एक सुंदर पेंटिंग भी बनाई है।

इसके अलावा चारकोल आर्ट की भी तस्वीरें बनाई हैं। साथ ही अयोध्या के राम मंदिर की तस्वीर भी बनाई है, जिसमें भी उन्होंने राम नाम लिखे हैं। जगन्नाथपुरी की भी सुंदर पेंटिंग उनके घर में देखी जा सकती है।

देश की सांस्कृतिक समृद्धि का महत्वपूर्ण स्त्रोत है बहुरंगी कलाएं

राज्यपाल मंगूभाई पटेल हुए कार्यक्रम में शामिल, विजेताओं को किया पुरस्कृत

भोपाल। राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने कहा कि देश की सांस्कृतिक समृद्धि का महत्वपूर्ण स्त्रोत बहुरंगी कलाएं है। यह हमारे अंदर की कोमल भावनाओं को जगा कर हमें मनुष्यता का पाठ पढ़ाती है। कलाएं हमारी परम्पराओं, विरासतों, रीति-रिवाजों, संस्कारों, धर्म, समाज, भाषा आदि की विशिष्टताओं को सहेजती और संरक्षित रखती हैं। राज्यपाल श्री पटेल क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान परिसर श्यामला हिल्स भोपाल में आयोजित राष्ट्रीय कला उत्सव के समापन समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने इस अवसर पर देशभर के विजेता छात्र-छात्राओं को कला की विभिन्न विधाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए पुरस्कार प्रदान किये और राष्ट्रीय कला उत्सव की विभिन्न विधाओं के निर्णायकों को भी सम्मानित किया। राज्यपाल श्री पटेल ने एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा आयोजित कला प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया। राष्ट्रीय कला उत्सव का आयोजन भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय और एन.सी.ई.आर.टी. के सहयोग से 3-6 जनवरी, 2025 तक किया गया। कला उत्सव में भारत के केन्द्रीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय और एकलव्य विद्यालय के लगभग 6 सौ प्रतिभागी शामिल हुए। राज्यपाल श्री पटेल ने प्रदेश की राजधानी भोपाल में राष्ट्रीय कला उत्सव के आयोजन के लिए एन.सी.ई.आर.टी. को साधुवाद भी दिया। राज्यपाल

श्री पटेल ने कहा कि कला उत्सव, देश की कला-संस्कृति की विरासत को शिक्षा के क्षेत्र में संरक्षित एवं प्रोत्साहित करने का प्रभावी प्रयास है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति बच्चों की प्रतिभा, कौशल को निखार कर उनका समग्र विकास कर 21वीं सदी के वैश्विक नेताओं के रूप में तैयार करने का प्रकल्प है। यह देश के बच्चों की असीम क्षमता को महसूस करते हुए विकसित भारत 2047 की संकल्पना को साकार करने के उद्देश्य से बनाई गई है। उन्होंने प्रतिभागी छात्र-छात्राओं से आगामी 12 जनवरी को आयोजित हो रहे विकसित भारत यंग लीडर्स संवाद कार्यक्रम में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेने की अपील भी की। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि भावी पीढ़ी, अपनी संस्कृति के जिस स्वरूप को देखती है उसी के अनुरूप अपने जीवन के नये मूल्यों का निर्माण करती है। इसलिए हम सबकी जिम्मेदारी है कि बच्चों को अनुभव आधारित शिक्षा के द्वारा, हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विविधता से जोड़े और एक भारत-श्रेष्ठ भारत के गौरवशाली दृष्टिकोण से परिचित और प्रेरित कराएं। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि कला के लिए जीवन में विशेष जगह रखें क्योंकि कला हमें जोड़ती है, प्रेरित करती है और एक समुदाय के रूप में मजबूत बनाती है। इसलिए प्रयास करें कि राष्ट्रीय कला उत्सव का यह आयोजन, कला के विभिन्न रूपों के प्रदर्शन का केवल मंच नहीं बल्कि हमारी संस्कृति और परंपराओं के बारे में जागरूक बनाने और संरक्षण के लिए जन मानस को प्रेरित करने का सशक्त माध्यम बने। राज्यपाल श्री पटेल का कार्यक्रम में शॉल और पौधा भेंट कर स्वागत किया गया। कार्यक्रम में केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान का वीडियों संदेश प्रसारित किया गया। केन्द्रीय स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग के सचिव श्री संजय कुमार ने कला के परिचय, प्रकार और उपयोगिता पर अपने विचार रखे। एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक प्रो. दिनेश प्रसाद सकलानी ने कला उत्सव के आयोजन की विस्तार से जानकारी दी। राष्ट्रीय समन्वय डॉ. ज्योत्सना तिवारी ने कला उत्सव आयोजन की 2024-25 की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। डॉ. दीपक पालीवाल ने आभार व्यक्त किया। राष्ट्रीय कला उत्सव के समापन समारोह में केन्द्रीय स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग के अपर सचिव श्री आनंद राव पाटिल, कला मनीषी, कला गुरू, विभिन्न विधाओं के प्रतिभागी छात्र-छात्राएं और अभिभावक उपस्थित थे।

विवेकानंद केंद्र द्वारा अमृत परिवार मिलन आयोजित

भोपाल। विवेकानंद केन्द्र कन्याकुमारी शाखा भोपाल द्वारा अमृत परिवार कार्यक्रम–परिवार मिलन व भारत माता पूजन कार्यक्रम केन्द्र कार्यालय पर आयोजित हुआ, जिसमें खेल, गीत चर्चा हुई उसके पश्चात भारत माता का पूजन किया गया एवं सभी कार्यकर्ताओं ने एक उन्नत राष्ट्र के लिए संकल्पना की। कार्यक्रम में एक साथ बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं का मिलना हुआ, इस मौके पर भोपाल नगर के नगर प्रमुख ने कहा - अमृत परिवार मिलन कार्यक्रम का उद्देश्य हमारी संस्कृति और संस्कार को संजोए रखना है। प्रत्येक परिवार भारतीय परंपरा को संरक्षित करने में अपना योगदान दे, और राष्ट्र कार्य में अपनी भी भूमिका निभाये।

केंद्रीय मंत्री शिवराज से एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक की शिष्टाचार भेंट

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो.डॉ. अजय सिंह ने नववर्ष के शुभ अवसर पर भारत के कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री एवं मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान से शिष्टाचार भेंट की। इस मुलाकात के दौरानए प्रो. सिंह ने एम्स भोपाल की विभिन्न स्वास्थ्य सेवाओं, नवाचारों और विस्तार योजनाओं पर चर्चा की। उन्होंने मंत्री महोदय को संस्थान द्वारा प्रदान की जा रही उन्नत चिकित्सा सेवाओं और आगामी स्वास्थ्य सेवा पहलों के बारे में जानकारी दी। प्रो. सिंह ने कहा, माननीय मंत्री महोदय से मुलाकात प्रेरणादायक रही। एम्स भोपाल समाज के सभी वर्गों के लिए उत्कृष्ट स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। उनकी शुभकामनाएं हमें समुदाय की अधिक प्रभावी सेवा के लिए प्रेरित करती हैं। केन्द्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने एम्स भोपाल के प्रयासों की सराहना की और राज्य में स्वास्थ्य क्षेत्र में संस्थान के योगदान की प्रशंसा की।

प्रभात चौराहे पर थ्री टियर ट्रैफिक, 25 अतिक्रमण हटाए

भोपाल में 22 करोड़ रुपए में बनेगा डबल डेकर फ्लाई ओवर; 9 महीने में होगा तैयार

भोपाल। भोपाल के प्रभात चौराहे पर थ्री टियर ट्रैफिक सिस्टम के लिए 44.10 करोड़ रुपए से डबल डेकर फ्लाईओवर ब्रिज बनेगा। इसकी सर्विस लेन के लिए सोमवार को अतिक्रमण हटाने की बड़ी कार्रवाई की गई। पुलिस की मौजूदगी में दोनों ओर से 25 अतिक्रमण हटाए गए। कार्रवाई के दौरान एडिशनल डीसीपी मनप्रीत बरार, एसडीएम रवीश श्रीवास्तव भी मौजूद थे। अशोका गार्डन क्षेत्र में प्रभात चौराहे पर अतिक्रमण हटाने के यह कार्रवाई की गई। दोपहर तक 25 अतिक्रमण हटा दिए गए। पीडब्ल्यूडी के एसडीओ रवि शुक्ला ने बताया, फ्लाईओवर के लिए सर्विस रोड भी बनेगी। जिस पर करीब 70 अतिक्रमण है। इन्हें हटाने के लिए लोगों को पहले ही नोटिस दे दिए गए थे। जिन्होंने अब तक अतिक्रमण नहीं हटाए, उन पर सोमवार को कार्रवाई की गई। इस ब्रिज को सरकार करीब 13 महीने पहले मंजूरी दे चुकी है। अब काम की शुरुआत होगी। कुछ दिन पहले मंत्री विश्वास सारंग भी निरीक्षण करने पहुंचे थे और उन्होंने काम जल्दी कराने पर जोर दिया था जानकारी के अनुसार, प्रभात चौराहे पर बनाए जाने वाले ब्रिज पर करीब 44.10 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे। ये 650 मीटर लंबा और 19 मीटर चौड़ा होगा। अतिक्रमण हटाने से पहले पीडब्ल्यूडी रायसेन रोड की तरफ पेड़ों की कटाई करवा चुका है। हालांकि, कई साल पुराने पेड़ काटे गए थे, ब्रिज बनने के बाद दोगुनी संख्या में पौधे भी लगाए जाने का दावा है। अभी प्रभात चौराहे पर ट्रैफिक जाम होता है। इसलिए यहां डबल डेकर फ्लाई ओवर ब्रिज बनाया जा रहा है।

गांजा तस्करों के ठिकाने पर पहुंची पुलिस का विरोध

भोपाल में महिलाओं ने घर में घुसने से रोका खाली हाथ लौटी टीम

भोपाल। भोपाल के तलैया इलाके में पुलिस टीम एक घर में सर्चिंग करने गई, जहां गांजा तस्करी की जानकारी मिल रही थी। लेकिन घर की महिलाओं ने पुलिस को अंदर जाने नहीं दिया, जिससे पुलिस को बिना कुछ किए लौटना पड़ा। टीआई सीबी राठौर ने बताया कि ये घर तस्करी के लिए चिह्नित था और यहां से गांजा तस्करी की सूचना मिल रही थी। टीआई के मुताबिक, इतवारा बस्ती में समुदाय विशेष के लोग रहते हैं, जो अक्सर अनैतिक गतिविधियों में शामिल पाए जाते हैं। इन पर समय-समय

पर कार्रवाई की जाती है। सोमवार को बस्ती के एक परिवार के खिलाफ गांजा तस्करी की सूचना मिलने पर थाने की टीम दबिश देने पहुंची। हालांकि, घर की महिलाओं ने पुलिस को अंदर नहीं जाने दिया, जिससे कुछ भी हाथ नहीं आया और टीम को वापस लौटना पड़ा। आरोपियों को बचाने के लिए मोहल्ले की महिलाओं का यह पुराना तरीका है। पुलिस टीम को देखते ही वे विरोध शुरू कर देती हैं, जिससे कार्रवाई में देरी होती है। इस दौरान मादक पदार्थों को छिपाया जाता है और घर के पुरुषों को भागने का मौका मिल जाता है। 1 नवंबर की रात, ई-रिक्शा चालक आमिर चाय पीने के लिए इतवारा के पास पहुंचा था।

यहां उसका सोम और उसके साथियों से विवाद हुआ। कहासुनी के बाद हाथापाई शुरू हो गई, और सोम और उसके

संपादकीय

महान वैज्ञानिक का अवसान

भारत को विश्व में परमाणु शक्ति का दर्जा दिलाने में अहम भूमिका निभाने वाले जाने माने वैज्ञानिक डॉ. राजगोपाल चिदंबरम का निधन देश के एक महान वैज्ञानिक का अवसान है। डॉ. चिदंबरम और उनकी टीम ने जिस गोपनीय तरीके से पोखरण 2 विस्फोट को सफलतापूर्वक अंजाम देकर पूरी दुनिया को चौंकाया, वह अपने आप में अद्भुत कहानी है। 1998 में किए गए इस परमाणु विस्फोट के पीछे भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी की अडिग इच्छाशक्ति थी, उसी को डॉ. चिदंबरम ने साकार किया। डॉ. चिदंबरम ने 88 साल की उम्र में मुंबई में अंतिम सांस ली। भारत के 1974 और 1998 के परमाणु परीक्षणों में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। परमाणु ऊर्जा विभाग (डीएई) ने उनके निधन की पुष्टि की। डीएई की ओर से जारी बयान में कहा गया कि भारत की वैज्ञानिक और रणनीतिक क्षमताओं में डॉ. चिदंबरम के अद्वितीय योगदान और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में उनके दूरदर्शी नेतृत्व को हमेशा याद किया जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उनके निधन पर दुख जताते हुए कहा कि वह वह भारत के परमाणु कार्यक्रम के प्रमुख वास्तुकारों में से एक थे और उन्होंने भारत की वैज्ञानिक और रणनीतिक क्षमताओं को मजबूत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। डॉ. चिदंबरम का जन्म 12 नवंबर 1936 को चेन्नई हुआ था और उन्होंने चेन्नई के प्रेसीडेंसी कॉलेज और बंगलूरू के भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान से पढ़ाई की थी। वे कई महत्वपूर्ण पदों पर रहे। खास बात यह है कि डॉ.चिदंबरम ने पोखरण में हुए दोनो परमाणु विस्फोटों में सक्रिय रूप से शामिल थे। पोखरण में भारत ने पहला परमाणु विस्फोट 1974 में किया था, लेकिन स्वयं के परमाणु शक्ति होने की घोषणा नहीं की थी। उस अभियान को 'ऑपरेशन स्माइलिंग बुद्धा' नाम दिया गया था। तब प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी थीं। संभवतः अंतरराष्ट्रीय दबावों के चलते भारत ने सफल परमाणु विस्फोट के बाद भी खुद को परमाणु शक्ति घोषित नहीं किया था। लेकिन 1998 तक आते-आते हालात बदल चुके थे। डॉ. चिदंबरम की अगुवाई में हुए इस परमाणु विस्फोट को ऑपरेशन शक्ति नाम दिया गया था और सचमुच हमारे काबिल वैज्ञानिक ने भारत परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र बनाने में पूरी ताकत झोंक दी। विवादों से दूर रहे वैज्ञानिक डॉचिदंबरम को भारत सरकार ने 1975 में पद्म श्री व 1999 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। उन्हें विभिन्न विश्वविद्यालयों ने डॉक्टर की मानद उपाधि से भी सम्मानित किया। वह कई भारतीय और अंतरराष्ट्रीय अकादमियों के फेलो भी रहे। डॉ. चिदंबरम का समूचा जीवन इस बात की जमानत है कि समर्पित और ध्येयनिष्ठ होकर देश की सेवा कैसे की जाती है। यही कारण है कि सभी दलों के राजनेताओं ने चिदंबरम के निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया है। उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि।

पोखरण-1 - 18 मई, 1974 को कोड नेम 'स्माइलिंग बुद्धा' के तहत किया गया था। इसे आधिकारिक तौर पर 'शांतिपूर्ण परमाणु विस्फोट' (PNE) कहा गया था। भारत सरकार ने घोषणा की थी कि यह परीक्षण भारत को ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए किया गया है।

पोखरण-2- 11 और 13 मई, 1998 को किया गया था। इस परीक्षण को ऑपरेशन शक्ति के नाम से जाना गया था। इस परीक्षण में भारत ने पांच परमाणु परीक्षण किए थे। इनमें से एक 45 किलोटन का तापीय परमाणु उपकरण था, जिसे हाइड्रोजन बम के नाम से जाना जाता है।

पोखरण परमाणु परीक्षण से जुड़ी कुछ और खास बातें: पोखरण-2 परीक्षण को इतने गुप्त तरीके से किया गया था कि दुनिया को इसकी भनक भी नहीं लगी। इस परीक्षण के दौरान, खेतोलाई गांव से 5 किलोमीटर दूर फायरिंग रेंज में परीक्षण किए गए थे। इन परीक्षणों से पूरा इलाका गूंज उठा था और आसमान में बादल का गुबार दिखा था।

नजरिया

सतीश सिंह

लेखक आर्थिक मामलों के जानकार हैं।

2025 में चमकीली बनी रहेगी आर्थिकी

वित्त मंत्रालय ने वित्त-वर्ष 2024-25 के लिए सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) वृद्धि दर का अनुमान 6.5 प्रतिशत जताया है। हालाँकि, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने वित्त वर्ष 2024-25 के लिए भारत की जीडीपी वृद्धि दर अनुमान को 7.00 प्रतिशत पर बरकरार रखा है, जबकि वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान जीडीपी वृद्धि का 6.5 प्रतिशत के स्तर पर रहने का अनुमान जताया है। वहीं, विश्व बैंक ने वित्त वर्ष 2024-25 के लिए भारत की जीडीपी वृद्धि दर के अनुमान को 6.6 प्रतिशत से बढ़ाकर 7.00 प्रतिशत कर दिया है, जबकि रिजर्व बैंक ने वित्त वर्ष 2024-25 के लिए जीडीपी वृद्धि दर के अनुमान को 7.2 प्रतिशत से घटाकर 6.6 प्रतिशत कर दिया है।

वित्त मंत्रालय और भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जीडीपी वृद्धि अनुमान को कम करने की वजह वित्त वर्ष 2024-25 में जीडीपी वृद्धि दर में कमी आना है। चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में जीडीपी वृद्धि दर 6.7 प्रतिशत रही, जो दूसरी तिमाही में घटकर 5.4 प्रतिशत के स्तर पर आ गई, जो विगत 7 तिमाहियों का सबसे निचला स्तर है। गिरावट का मूल कारण विनिर्माण और खनन क्षेत्र में विकास दर में उल्लेखनीय कमी आना है।

अगर हम पूर्व की कुछ तिमाहियों पर नजर डालें तो वित्त वर्ष 2022-23 की पहली तिमाही में जीडीपी वृद्धि दर 12.8 प्रतिशत रही थी और उसी वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में 5.5 प्रतिशत, तीसरी तिमाही में 4.3 प्रतिशत और चौथी तिमाही में 6.2 प्रतिशत रही, जबकि वित्त वर्ष 2023-24 की पहली तिमाही के दौरान जीडीपी वृद्धि दर 8.2 प्रतिशत रही थी, वहीं, दूसरी, तीसरी और चौथी तिमाही में यह क्रमशः 8.1 प्रतिशत, 8.6 प्रतिशत और 7.8 रही। इन आंकड़ों से पता चलता है कि भारत सरकार और रिजर्व बैंक की कारगर नीतियों की वजह से कोरोना महामारी के दौरान और उसके बाद भी भारत विकास के मोर्चे पर तेजी से आगे बढ़ रहा है।

अगर हम वैश्विक अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर से भारतीय अर्थव्यवस्था की तुलना करें तो हमारी अर्थव्यवस्था वैश्विक स्तर से बहुत ऊपर है। आज यह दुनिया की प्रमुख देशों की अर्थव्यवस्था की तुलना में बहुत ही तेजी से आगे बढ़ रही है। आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) के अनुसार 2024 में वैश्विक जीडीपी वृद्धि दर 3.2 प्रतिशत रही और 2025 में 3.3 प्रतिशत रह सकती है, वहीं, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के मुताबिक वैश्विक अर्थव्यवस्था 2024 में 3.1 प्रतिशत और 2025 में 3.2 प्रतिशत की दर से आगे बढ़ सकती है।

चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में चीन की जीडीपी वृद्धि दर 4.6 प्रतिशत रही, जबकि जापान में यह वृद्धि दर 0.9 प्रतिशत रही। आईएमएफ के अनुसार इंग्लैंड में विकास दर वित्त वर्ष 2024 में 1.1 प्रतिशत और वित्त वर्ष 2025 में 1.5 प्रतिशत रहने का अनुमान है, वहीं, जर्मनी में वित्त वर्ष 2024 में विकास दर के माइनस 0.1 प्रतिशत और वित्त वर्ष 2025 में 0.7 प्रतिशत रहने का अनुमान है। दुनिया के सबसे शक्तिशाली देश अमेरिका से भी भारतीय अर्थव्यवस्था बेहतर स्थिति में है और आगामी सालों में भी इसके मजबूत बने रहने के आसार है। वित्त वर्ष 2024 के दौरान अमेरिका में विकास दर के 2.7 प्रतिशत और वित्त वर्ष 2025 में 2.0 प्रतिशत रहने का अनुमान है।

जीडीपी अर्थव्यवस्था के स्वास्थ को मापने का सबसे विश्वसनीय पैमाना है। इसके तहत एक निश्चित अवधि, जो

समान्यतः 1 वर्ष होता है के दौरान तैयार उत्पाद और सेवाओं की कीमत की गणना की जाती है, जिसमें देश की सीमा के अंदर रहकर जो विदेशी कंपनियां उत्पादन करती हैं, उन्हें भी शामिल किया जाता है। जीडीपी दो तरह की होती है। रियल जीडीपी और नॉमिनल जीडीपी। रियल जीडीपी में उत्पादों और सेवाओं की कीमत की गणना आधार वर्ष की कीमत या स्थिर कीमत पर की जाती है, जबकि नॉमिनल जीडीपी की गणना वर्तमान कीमत पर की जाती है।

जीडीपी दर में उतार-चढ़ाव आने के 4 कारक होते हैं। पहला, आमजन द्वारा किया गया खर्च। इस खर्च से अर्थव्यवस्था मजबूत होती है। दूसरा, निजी क्षेत्र के कारोबार में वृद्धि। मौजूदा समय में निजी क्षेत्र का जीडीपी में 32 प्रतिशत योगदान है। तीसरा है, सरकार द्वारा किया गया खर्च। आज सरकार द्वारा विविध उत्पादों के उत्पादन और सेवा क्षेत्र पर जीडीपी का 11 प्रतिशत खर्च किया जा रहा है एवं चौथा है, निवल मांग। इसके लिए भारत के कुल निर्यात को कुल आयात से घटाया जाता है। फिलवक्त, भारत में निर्यात की जगह आयात ज्यादा होता है, जिसका जीडीपी के आंकड़ों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

ताजा आंकड़ों के अनुसार वित्त वर्ष 2025 में भारत का चालू खाता घाटा (सीएडी) जीडीपी के 1.2 से 1.5 प्रतिशत के बीच रहने का अनुमान है। सेवा निर्यात में तेजी और प्रवासी भारतीयों द्वारा बड़ी मात्रा में देश में पैसे अंतरित करने के कारण उच्च व्यापार घाटे के बावजूद, देश का सीएडी वित्त वर्ष 2025 की दूसरी तिमाही में जीडीपी के 1.2 प्रतिशत पर सिमट गया। दरअसल, विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक (एफपीआई) के प्रवाह के कारण पूंजी खाता अधिशेष में वृद्धि हुई, जबकि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश आवक अधिक दर्ज किया गया।

फिलवक्त, मुद्रास्फीति दर उच्च स्तर पर बनी हुई है, लेकिन कैलेंडर वर्ष 2025 में इसमें कमी आने के आसार हैं। मूडीज ने 2025 और 2026 में भारत में मुद्रास्फीति का अनुमान 4.5 प्रतिशत और 4.1 प्रतिशत जताया है। अमेरिका में ट्रंप के सत्तासीन होने के बाद वैश्विक स्तर पर अनिश्चितता की स्थिति कुछ कम हुई है, भू-राजनैतिक संकट में भी कमी आने की संभावना है और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तनाव कम होने से कच्चे तेल की कीमत में भी कमी आने के आसार हैं। मामले में स्थिति सुधरने भी लगी है और जापान एवं चीन सहित अमेरिका और यूरोपीय देशों में मुद्रास्फीति नरम हो गई है। भारत में भी नवंबर 2024 में मुद्रास्फीति कम होकर 5.48 प्रतिशत के स्तर पर आ गई, जो अक्टूबर 2024 के 6.21 प्रतिशत के मुकाबले काफी कम है।

अक्टूबर 2024 में मुद्रास्फीति 14 महीनों के उच्च स्तर पर थी, जबकि सितंबर 2024 में यह 5.5 प्रतिशत के स्तर पर थी। मौजूदा समय में भारत में उच्च मुद्रास्फीति के घरेलू कारक जैसे ख़राब मानसून, भंडारण की कमी, परिवहन की ऊँची लागत आदि ज्यादा जिम्मेदार हैं।

किसी की क्रय शक्ति को निर्धारित करने में मुद्रास्फीति महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मुद्रास्फीति बढ़ने पर वस्तु एवं सेवा दोनों की कीमतों में इजाफा होता है, जिससे व्यक्ति की खरीददारी क्षमता कम हो जाती है और वस्तुओं एवं सेवाओं की मांग कम हो जाती है। फिर, उनकी बिक्री कम होती है, उनके उत्पादन में कमी आती है, कंपनी को घाटा होता है, कामगारों की छंटनी होती है, रोजगार सृजन में कमी आती है आदि। फलतः आर्थिक गतिविधियां धीमी पड़ जाती हैं एवं विकास की गति बाधित होती है। ऐसे में यह कहना समीचीन होगा कि मुद्रास्फीति को कम करने से ही विकास की गाड़ी तेज गति से आगे बढ़ सकती है।

भारतीय रिजर्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार 13 दिसंबर को समाप्त हुए पखवाड़े में ऋण वृद्धि दर 11.5 प्रतिशत रही, जबकि जमा वृद्धि दर भी 11.5 प्रतिशत रही। अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण से यह एक अच्छा संकेत है। हालाँकि, विगत महीनों की तुलना में ऋण वृद्धि दर में कमी आई है, लेकिन जमा दर में, ऋण वृद्धि दर के समान वृद्धि होना बैंकों के लिए बेहद ही मुफीद है। इससे उन्हें ऊँची लागत पर पूँजी इकठ्ठा करने के लिए मशक्कत नहीं करनी पड़ेगी और सस्ती दर पर पूँजी उपलब्ध रहने पर बैंक अपनी ऋण पोर्टफोलियो को आसानी से बढ़ा सकेंगे और इससे अर्थव्यवस्था में मजबूती आयेगी।

वैश्विक रेटिंग एजेंसी एस एंड पी द्वारा तैयार एचएसबीसी विनिर्माण पीएमआई नवंबर, 2024 में 58.4 थी, जो अक्टूबर महीने में 58.5 थी। वहीं, सितंबर महीने में यह 56.7 के स्तर पर थी और अगस्त महीने में 57.5 रही थी। भले ही, पीएमआई नवंबर महीने में अक्टूबर महीने से 0.01 कम है, लेकिन यह सितंबर और अगस्त महीने से अधिक है। पीएमआई का 50 से ऊपर रहना यह दर्शाता है कि विनिर्माण और सेवा क्षेत्र में तेजी का रुख बना हुआ है।

साथ ही, तुलनात्मक रूप से अध्ययन करने पर यह पता चलता है कि अगस्त और सितंबर महीने में विनिर्माण और सेवा क्षेत्र के प्रदर्शन में गिरावट दर्ज की गई थी। विनिर्माण क्षेत्र के कमजोर प्रदर्शन की वजह से ही चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में जीडीपी वृद्धि दर कम रही है। हालाँकि, विनिर्माण पीएमआई का सितंबर, अक्टूबर और नवंबर महीने में बेहतर प्रदर्शन रहने से चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही में जीडीपी वृद्धि दर में तेजी आने का अनुमान है।

देश के आर्थिक स्वास्थ को मापने के लिए जीडीपी एक महत्वपूर्ण आर्थिक संकेतक है, जिसे आर्थिक प्रदर्शन का आईना भी कह सकते है और इसमें तेजी लाने के लिए मुद्रास्फीति का नियंत्रण में होना, विनिर्माण व सेवा गतिविधियों एवं ऋण वितरण में तेजी आना जरुरी है। ताजा आंकड़ों के आधार पर कहा जा सकता है कि कैलेंडर वर्ष 2025 में मुद्रास्फीति नरम रहेगी, बैंक जमा दर में तेजी आने से ऋण वृद्धि दर में तेजी आने का अनुमान है। इससे आर्थिक गतिविधियों में तेजी आयेगी अर्थात विनिर्माण, खनन, सेवा आदि क्षेत्रों में विकास का प्रवाह तेज होगा।

परिवहन

प्रियंका सौरभ

राजनीति विज्ञान की शोधार्थी

सुधार के बावजूद संकटों से घिरा भारतीय विमानन क्षेत्र

भारत का विमानन क्षेत्र, जो वैश्विक स्तर पर तीसरा सबसे बड़ा क्षेत्र है, आर्थिक विकास और कनेक्टिविटी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। नागरिक उड्डयन महानिदेशालय के तहत एक मज़बूत नियामक ढांचे के बावजूद, कोझीकोड (2020) में एयर इंडिया एक्सप्रेस दुर्घटना जैसी बार-बार होने वाली घटनाएँ विमानन सुरक्षा में प्रणालीगत चुनौतियों को उजागर करती हैं। अंतर्राष्ट्रीय मानकों के साथ तालमेल बिठाने और यात्रियों का भरोसा सुनिश्चित करने के लिए इन मुद्दों पर विचार करना महत्वपूर्ण है। चिंतनीय स्थिति यह है कि अभी चाहे इंडिगो, स्पाइसजेट और गोएयर जैसी प्राइवेट कंपनियाँ हों या एयर इंडिया जैसी सरकारी कंपनी, लगभग सभी एयरलाइंस वित्तीय मोर्चे पर लगातार संघर्ष कर रही हैं। बोइंग 737 मैक्स विमानों को परिचालन से हटा दिये जाने के कारण स्थिति और भी खराब हो गई है। भारतीय विमानन बाजार में विमान किराए तेजी से बढ़ रहे हैं। इस कारण मध्यम वर्ग के यात्री जो इकोनॉमी क्लास में यात्रा करते थे, वे अब ट्रेन से यात्रा को तरज़ीह दे रहे हैं।

भारत का विमानन बाजार वैश्विक स्तर पर सबसे तेजी से बढ़ने वाले बाजारों में से एक है, जिसमें हवाई यात्रियों की संख्या बढ़ रही है और हवाई अड्डे के बुनियादी ढांचे का विस्तार हो रहा है। दिल्ली के टर्मिनल 3 और बैंगलोर के केम्पेगौड़ा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे जैसे आधुनिक हवाई अड्डों का निर्माण मज़बूत बुनियादी ढांचे के विकास को दर्शाता है। नागरिक उड्डयन महानिदेशालय ऑपरेटरों और विमानों के लिए सुरक्षा अनुपालन और प्रमाणन सुनिश्चित करता है।

नागरिक उड्डयन महानिदेशालय की वार्षिक सुरक्षा ऑडिट रिपोर्ट एयरलाइनों और हवाई अड्डों के परिचालन मानकों का मूल्यांकन करती है। भारत अंतर्राष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संगठन अनुलग्नक 13 पर हस्ताक्षरकर्ता है, जो दुर्घटनाओं की जांच और वैश्विक सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन सुनिश्चित करता है। कोझिकोड दुर्घटना (2020) के बाद, नागरिक उड्डयन महानिदेशालय ने अंतर्राष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संगठन-अनुरूप सुरक्षा ऑडिट किया और सुधारात्मक दिशा-निर्देश जारी किए। प्रमुख भारतीय वाहकों ने सुरक्षा और दक्षता बढ़ाने के लिए उन्नत

सुरक्षा सुविधाओं वाले आधुनिक विमानों को अपनाते हुए अपने बेड़े का विस्तार किया है। इंडिगो एयरलाइंस एयरबस ए320नियो का संचालन करती है, जो ईंधन दक्षता और सुरक्षा उन्नयन के लिए जानी जाती है। 2016 की राष्ट्रीय नागरिक उड्डयन नीति विकास, क्षेत्रीय संपर्क और विमानन बुनियादी ढांचे में सार्वजनिक-निजी भागीदारी को बढ़ावा देने पर केंद्रित है। उड़ान योजना ने सब्सिडी और प्रोत्साहन के माध्यम से क्षेत्रीय हवाई यात्रा को सुलभ बनाया।

बार-बार होने वाली विमानन सुरक्षा घटनाओं की चुनौतियों में रनवे भ्रम सबसे पहले है। पायलटों को अक्सर टैक्सीवे और रनवे के बीच अंतर करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिससे ग़लत सतहों पर टेकऑफ़ या लैंडिंग होती है। मोपा घटना (2024) और सुलूर एयर बेस घटना (1993) बार-बार होने वाले रनवे भ्रम को उजागर करती हैं। उड़ान और ड्यूटी समय विनियमों के अपर्याप्त कार्यान्वयन से चालक दल थक जाता है, जिससे निर्णय लेने और परिचालन सुरक्षा से समझौता होता है। कोझिकोड दुर्घटना में पायलट थका हुआ था, जिसके कारण कैप्टन पर बाद की उड़ानों को संचालित करने का दबाव था। एयरलाइंस रनवे मार्किंग और एप्रोच प्रोटोकॉल पर पर्याप्त पायलट प्रशिक्षण प्रदान करने में विफल रही, जिसके कारण बार-बार गलतियाँ हुईं। स्पाइसजेट विमान (2020) को रनवे एप्रोच तकनीकों के अनुचित ज्ञान के कारण कठिन लैंडिंग का सामना करना पड़ा। नागरिक उड्डयन महानिदेशालय के ऑडिट अक्सर हवाई अड्डे के बुनियादी ढांचे और संचालन में महत्वपूर्ण सुरक्षा अंतराल की पहचान करने या उन्हें सम्बोधित करने में विफल रहते हैं। मुंबई (2019) और हुबली (2015) जैसे हवाई अड्डों पर ओवररन अपर्याप्त सुरक्षा उपायों के परिणामस्वरूप हुए। ऑन-टाइम परफॉरमेंस पर अत्यधिक ज़ोर पायलटों को सुरक्षा प्रोटोकॉल की अनदेखी करते हुए जोखिम भरे निर्णय लेने के लिए मजबूर करता है। मंगलुरु दुर्घटना (2010) दबाव के कारण हुई, जिसमें पायलट ने गो-अराउंड चेतावनियों को खारिज कर दिया।

अंतर्राष्ट्रीय मानकों के साथ संरेखित करने के लिए व्यापक सुधार पायलट प्रशिक्षण में वृद्धि, एयरलाइंस को रनवे भ्रम और स्थिर दृष्टिकोण जैसे परिदृश्यों के लिए सिम्युलेटर-आधारित प्रशिक्षण में सुधार करना चाहिए। सिंगापुर एयरलाइंस ने ताइवान दुर्घटना (2000) के बाद पायलट प्रशिक्षण को संशोधित किया, ताकि इसी तरह की घटनाओं की पुनरावृत्ति को रोका जा सके। चालक दल की ड्यूटी सीमा के लिए वैश्विक मानकों को लागू करें और बिना किसी समझौते के अनुपालन को लागू करें। यू.एस. संघीय उड्डयन प्रशासन ने उड़ान चालक दल के लिए सख्त विश्राम अवधि अनिवार्य की है, जिससे थकान से होने वाली गलतियाँ कम होती हैं। पारदर्शिता और सीखने को सुनिश्चित करने के लिए दुर्घटना की जाँच के लिए एक स्वतंत्र निकाय की स्थापना करें। यू.एस. में राष्ट्रीय परिवहन सुरक्षा बोर्ड विमानन घटनाओं की निष्पक्ष जाँच सुनिश्चित करता है। अंतरराष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संगठनमानकों को पूरा करने के लिए रनवे मार्किंग, नेविगेशन एड्स और लाइटिंग सिस्टम सहित हवाई अड्डे के बुनियादी ढाँचे को अपग्रेड करें। सिंगापुर और दुबई में आधुनिक हवाई अड्डे (इंजीनियर्ड मैटेरियल अरेस्टिंग सिस्टम) जैसी उन्नत प्रणालियों के साथ सुरक्षा को प्राथमिकता देते हैं। पायलटों को दोष देने से हटकर न्यायपूर्ण संस्कृति को बढ़ावा देना, प्रतिशोध के डर के बिना त्रुटि रिपोर्टिंग को प्रोत्साहित करना। अंतरराष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संगठन की वैश्विक विमानन सुरक्षा योजना एक प्रमुख प्राथमिकता के रूप में सुरक्षा संस्कृति पर ज़ोर देती है।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि विमानन सुरक्षा वैश्विक मानकों के अनुरूप हो, भारत को एक बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए, नियामक निरीक्षण को बढ़ाना, उन्नत तकनीक में निवेश करना और कौशल विकास को प्राथमिकता देना, घटना रिपोर्टिंग तंत्र को मज़बूत करना, सुरक्षा-प्रथम संस्कृति का निर्माण करना और अंतर्राष्ट्रीय निकायों के साथ सहयोग करना इस क्षेत्र को भविष्य के लिए सुरक्षित बनाएगा, यात्रियों का विश्वास, परिचालन उत्कृष्टता सुनिश्चित करेगा और वैश्विक विमानन सुरक्षा मानकों में भारत का नेतृत्व सुनिश्चित करेगा। विमानन क्षेत्र को मज़बूत बनाने के लिये सरकार को विमानन नीति में आमूलचूल बदलाव करने की ज़रूरत है। विमानन क्षेत्र में दीर्घकालीन ढाँचागत सुधार किये बिना कुछ हासिल नहीं हो सकता। इसके लिये सरकार, नागरिक उड्डयन मंत्रालय, बैंकों और नागरिक उड्डयन महानिदेशालय द्वारा ऐसे कदम उठाना आवश्यक है जिनसे विमानन कंपनियाँ घाटे के दुष्चक्र से बाहर निकल सकें।

जब समस्या ही समाधान हो

कटाक्ष

अंशु प्रधान

लेखक व्यंग्यकार हैं।

दुनिया में दो तरह के लोग होते हैं एक तो वे जो समस्याएं सुलझाने में लगे रहते हैं और जिन्दगी में कुछ भी हासिल नहीं कर पाते दूसरे वे जो समस्या पैदा करने की गंभीर तकनीक को जानते हैं ये अपने घर, बाहर, कार्यालय आसपड़ोस सभी जगह समस्या पैदा करने की काबिलियत रखते हैं बस ये दूसरे क़िस्म के लोग ही आजकल की दुनिया में जिंदा रहने के लायक हैं बस यही पूजनीय हैं बस यही लोग हैं जो ज़िन्दगी का मजा ले पाते हैं बाकी जो समस्याएं सुलझाने में जीवन बिताते हैं वे तो पूरे गधे हैं।

ऐसे गधों पर कोई न कोई तो अपना बोझा लादता ही है और ये गधे इस बोझे को उठाना ही अपना नैतिक कर्तव्य मानते हैं वे सिर झुकाकर यूँ चलते हैं मानों कि वे अपने ही पाप उठाये जा रहे हों और जीवन में यही करने आये हों उनमें निगाह तक उठाने की हिम्मत नहीं होती, ऊपर से सारी ज़िन्दगी माथापच्ची करते रहते हैं वो अलग! ये लोग न सिर्फ अपनी समस्याएं सुलझाने में लगे रहते हैं बल्कि आस पड़ोसी, रिश्तेदारों, सबकी मुसीबत अपने गले मे डालने को लालायित से रहते हैं।

वहीं दूसरी तरफ वे लोग हैं जिनकी ज़िन्दगी में समस्याएं ही प्रधान हैं,अगर समस्या नहीं तो कुछ भी नहीं! वे समस्या पैदा करने के इतने नुस्खे जानते हैं जितने कि कोई समाधान न जानता हो,उनकी होड़ हमेशा ऐसे लोगों से रहती है जो जीवन को समस्या मुक्त रखने में विश्वास रखते हैं वे मानते हैं कि अगर समस्या नहीं तो कुछ नहीं, कोई वैल्यू नहीं,कोई भय नहीं, कोई इज़्ज़त नहीं !

भाई! लोग जितना गुंडे मवाली की इज़्ज़त करते हैं उतनी थानेदार की करते हैं क्या? नहीं न!

समस्याएं पैदा करने के बड़े फायदे हैं सबसे पहला फायदा तो ये है कि कोई आपकी असलियत नहीं जान सकता कि आप वास्तविक जीवन में तो एक बड़े वाले भोंदू हैं ,दूसरा ये कि लोग बेवजह ही आपको काबिल मानने लगेंगे। जैसे कि अगर आप किसी कार्यालय में हैं और आपको काम नहीं आता तो समस्या पैदा करिए, विद्यालय में हैं और पढ़ाना नहीं आता तो समस्या बताइए कि बच्चे कामचोर हैं ,पढ़ाई चोर हैं,प्रसाशन में हैं तो अपने से नीचे वालों पर डंडा चलाइये, शिकायतें भिजवाइये ताकि लगे कि आप कितने जिम्मेदार हैं,फलां ही बेकार आदमी है और अगर सरकार में हैं फिर तो कहने ही क्या... फिर तो दुनिया आपको सलाम करेगी,इमली को भी आम कहेगी।

वैसे समस्याएं पैदा करना कम न समझिए,बड़ा दिमाग़ लगाना पड़ता है।जैसे कि मार्जिन पर टैक्स लगाने से देश की कितनी तरक्की होगी,अपनी तरक्की कितनी होगी, तरक्की होगी भी कि नहीं होगी तो ये ऐसी ही कुछ समस्याएं हैं जोकि समस्याओं की तरह नहीं बल्कि समाधान की तरह आपके जीवन में आती हैं बस ऐसा प्रतीत होता है जबकि दूसरे के लिए वे समाधान ही होती हैं।

वैसे भी आजकल के समय में समाधान मायने नहीं रखता उसमें कौन सी बड़ी बात है? क्या नयापन है ? कुछ भी तो नहीं! आजकल तो मायने रखता है समस्यायों को उत्पन्न करते रहना अगर कोई सीधे साधे चल रहा है तो कैसे चल रहा है? अरे! जब तक उसे लंगड़ी फसाकर गिराया नहीं तो कैसी काबिलियत भला! क्या कोई मानेगा कि आप काबिल हैं? खुद की काबिलियत बनाये रखने के लिए भी समस्याएं पैदा करना सीखिए समाधान तो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस भी बता देगा मगर समस्या कैसे पैदा की जाए ये सिर्फ शातिर दिमाग़ ही बता सकता है और कोई नहीं ।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

भूपेन्द्र भारतीय

लेखक व्यंग्यकार हैं।

उनका भावुक होने की कोशिश करना

सामान्यतः वे व्यवहारिक व्यक्तित्व के धनी है लेकिन मंच पर चढ़ते ही उन्हें भावुकता घेर लेती है। श्रोता रूपी माया उन्हें भावुकता के भव सागर में धकेल देती हैं। ऐसे में वे चाहकर भी सहज नहीं हो पाते हैं। श्रोता दिखे नहीं कि वे भावुक होने की कोशिश में लग जाते है। उन्होंने बड़े बड़े मंच इस भावुकता के सहारे ही जीते हैं। एक बार फिर उन्हें ऐसे ही एक राष्ट्रीय पर्व के आयोजन में आमंत्रित किया गया। वे मंचासीन हुए। मंच उनका आभारी हुआ। उन्हें एक बार फिर भावुक होने का अवसर मिला। उन्होंने भी भावुक होने की पूरी कोशिश की लेकिन जनता उनकी भावुकता पर हँसने लगी। वे भावुक होकर फिर उदास हो गए। श्रोताओं के इस अजीब व्यवहार से उन्हें धक्का लगा। वे जमाने को दोष देने लगे। बुद्धिजीवीयों की तरह सबको मूर्ख समझकर मंच से उतर गए। आखिर में वे उस मंच से अपनी भावुकता की पुड़िया जेब में रखकर अपने क्षेत्र की ओर कूंच कर गए।

वैसे यह सब उनके साथ पहली बार नहीं घटा था। यह तो उनकी फिल्ड में अक्सर होता रहता है। वे इस तरह की घटनाओं पर भी ज्यादा समय तक भावुक नहीं होते। वे आदतन व्यवहारिक व्यक्ति जो ठहरे। पर भावुक होने की कोशिश करना भी उनकी फील्ड की जरूरत है। कुछ लोग व उनके वोट भावुकता के माध्यम से ही हासिल किये जा सकते हैं। पिछले दिनों की ही बात है वे अपने क्षेत्र में एक रैली को संबोधित कर रहे थे कि उन्हें अपनी ओजस्वी वाणी से अचानक भावुकता के सागर में उतरना पड़ा। उस मंच पर उनके दल के वरिष्ठ नेता जो बैठे थे। भावुक होने का यह क्रम आता जाता रहता है। बहुत बार तो वे अपने क्षेत्र की माताओं व बहनों को भावुकता की भाषा के माध्यम से ही संबोधित करते हैं। ओर वे माताएं व बहनें बहुत आसानी से उनकी बातें समझ जाती हैं व साथ ही खुद भी बड़ी भावुक हो जाती हैं।

वैसे वे भावुक होने की कोशिश ऐसे ही नहीं करते। यह व्यवहार आजकल व्यासपीठ से लेकर संसद तक के गलियारों में धड़ाके से चल रहा है और हर कोई अपनी बात इसके माध्यम से अच्छे से कह पा रहा है। पहले के समय में बच्चें ही बात बात में भावुक होते थे लेकिन अब यह व्यवहार बच्चों से लेकर बुढ़ों तक में आसानी से देखा जा सकता है। इधर अब स्थिति यह हो गई है कि जो मंच पर चढ़ा नहीं कि भावुक होने की कोशिश करने लगा। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर यह स्थिति निर्मित होने लगी है, ऐसे में कोई पीछे क्यों रहे ?

कुछ दिन पहले की ही बात है उन्हें नगर की एक चर्चित संस्था ने सम्मानित किया। सम्मानित होना उन्हें बहुत प्रिय है। इसके लिए वे हार-फूल व श्रीफल साथ रखते हैं। वे सम्मानित होने पर अचानक से भावुक हो गए। संस्था के सदस्यों ने उन्हें भावुक होने पर संभाला। वे भावुक होने की कोशिश में अपना सुधबुध ही खो चुके थे। बहुत देर बाद उन्हें चेतना आई। फिर वे अपने आप को पृथ्वी पर ही पाते है। पर भावुक होने की इस कोशिश में उन्होंने अपने आप को कुछ पलों के लिए परालौकिक वातावरण में पाया। उनके लिए यह अद्भुत अनुभव था। जैसे किसी साहित्यकार या फिर किसी समाजसेवी को कोई पद्म पुरस्कार या ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला हो! वे अक्सर ऐसे आयोजनों में भावुक होने की कोशिश में अपना सुधबुध खो बैठते है।

उनका भावुक होने की कोशिश करना इतना आसान व सरल कार्य भी नहीं है। यह कला लंबे अनुभव के बाद प्राप्त होती है। जनता का समर्थन चाहिए। श्रोता को भी भावुक होने की आदत हो। बुद्धिजीवी होना पड़ता है। अपने गले व आँखों को इसके लिए तैयार करना पड़ता है। भावुकता के लिए वाणी को साधना पड़ता है। सामने बैठे लोगों का विश्वास जीतना पड़ता है। तब कहीं जाकर आप भावुक होने की कोशिश कर सकते हैं। वैसे वे भावुकता के माध्यम से ही अपनी रोटी सेंकते है और ना सिर्फ रोटी ही सेंकते है लेकिन उनकी गाड़ी ही भावुक होने की कोशिश में चलती रहती हैं..!

सेहत

ललित गर्ग

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

नये चीनी वायरस से चिन्ता में डूबी दुनिया

नये वर्ष में प्रवेश की शुभबेला में एकाएक इस महामारी की खबर से दुनिया भौचक्क एवं खौफ में आ गयी है। क्योंकि कोविड-19 महामारी के पांच साल बाद, चीन मौजूदा समय में नए वायरस एचएमपीवी से जूझ रहा है। इस वायरस ने चीन में हजारों लोगों को अपनी गिरफ्त में ले लिया है। वहां हालात बेकाबू हो रहा है, अस्पतालों के बाहर मरीजों की भीड़ नजर आ रही है। हालांकि, हर बार की तरह चीन का कहना है कि मीडिया खबरों में कोई सच्चाई नहीं है। ये मौसम बदलने का असर है। ठंड बढ़ने से आमतौर पर लोग खांसी-जुकाम की समस्या से जूझते हैं। ये भी मौसम की वजह से ही हो रहा है। चीन के सरकारी ब्रॉडकास्टर सीसीटीवी की रिपोर्ट के अनुसार, दिसंबर के अंत में चीनी सीडीसी के आंकड़ों के मुताबिक 14 वर्ष और उससे कम आयु के मामलों में एचएमपीवी की पॉजिटिव दर में हाल ही में वृद्धि हुई है। एचएमपीवी वायरस से छोटे बच्चे, वृद्ध और कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली वाले लोग ज्यादा प्रभावित हुए है। चीन के साथ ही दुनिया के अनेक हिस्सों से इस महामारी से पीड़ित लोगों की खबरें आ रही है।

मा नव इतिहास की सबसे बड़ी एवं भयावह महामारी कोरोना को झेल चुकी दुनिया पर एक और नये चीनी वायरस ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस (एचएमपीवी) के संक्रमण की खबर ने दुनियाभर को चिंता में डुबो दिया है, बाजार से लेकर सामान्य जन-जीवन तक में डर, खौफ, अफरा-तफरी एवं असमंजस्य का माहौल व्याप्त है। कोविड-19 और अन्य श्वसन वायरस की तरह एचएमपीवी भी खांसने, छींकने और संक्रमित लोगों के निकट संपर्क से उत्पन्न बूंदों या एरोसोल के माध्यम से फैलता है। बुखार, सांस फूलना, नाक बंद होना, खांसी, गले में खराश और सिरदर्द इसके सामान्य लक्षण हैं। लेकिन डॉक्टरों का कहना है कि कुछ मरीजों को इस संक्रमण के कारण ब्रोंकाइटिस और निमोनिया हो सकता है। एचएमपीवी के खिलाफ कोई टीका या प्रभावी दवा नहीं है और इलाज ज्यादातर लक्षणों को प्रबंधित करने के लिए होता है। चीन में सांस की बीमारियों के बढ़ते मामलों की खबरों के बाद, भारत सरकार ने सतर्कता बढ़ा दी है। स्वास्थ्य मंत्रालय ने डब्ल्यूएचओ से स्थिति पर लगातार अपडेट देने का अनुरोध किया है।

नये वर्ष में प्रवेश की शुभबेला में एकाएक इस महामारी की खबर से दुनिया भौचक्क एवं खौफ में आ गयी है। क्योंकि कोविड-19 महामारी के पांच साल बाद, चीन मौजूदा समय में नए वायरस एचएमपीवी से जूझ रहा है। इस वायरस ने चीन में हजारों लोगों को अपनी गिरफ्त में ले लिया है। वहां हालात बेकाबू हो रहा हैं, अस्पतालों के बाहर मरीजों की भीड़ नजर आ रही है। हालांकि, हर बार की तरह चीन का कहना है कि मीडिया खबरों में कोई सच्चाई नहीं है। ये मौसम बदलने का असर है। ठंड बढ़ने से आमतौर पर लोग खांसी-जुकाम की समस्या से जूझते हैं। ये भी मौसम की वजह से ही हो रहा है। चीन के सरकारी ब्रॉडकास्टर सीसीटीवी की रिपोर्ट के अनुसार, दिसंबर के अंत में चीनी सीडीसी के आंकड़ों के मुताबिक 14 वर्ष और उससे कम आयु के मामलों में एचएमपीवी की पॉजिटिव दर में हाल ही में वृद्धि हुई है। एचएमपीवी वायरस से छोटे बच्चे, वृद्ध और कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली वाले लोग ज्यादा प्रभावित हुए है। चीन के साथ ही दुनिया के अनेक हिस्सों से इस महामारी से पीड़ित लोगों की खबरें आ रही है। भारत में भी चीन का खतरनाक वायरस एचएमपीवी पहुंच गया है। खबरों की मानें तो बेंगलुरु में 8 महीने का एक बच्चा एचएमपीवी वायरस से संक्रमित पाया गया है। बच्चे का ब्लड टेस्ट किये जाने के बाद ये दावा किया जा रहा है। यह भारत में एचएमपीवी वायरस का पहला मामला है। हालांकि, भारत में एचएमपीवी वायरस के मामले की आधिकारिक पुष्टि अभी तक नहीं हुई।

चीन में सोशल मीडिया यूजर्स का कहना है कि इन्फ्लूएंजा ए, एचएमपीवी, माइकोप्लाज्मा न्यूमोनिया और कोविड सहित कई वायरस फैल रहे हैं। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि एचएमपीवी मामलों में वृद्धि के कारण अचानक मृत्यु दर में चिंताजनक वृद्धि हुई है तथा 40 से 80 वर्ष की आयु के लोग विशेष रूप से इससे प्रभावित हुए हैं। चीन की जिम्मेदार एजेंसियां इस वायरस के दुष्प्रभाव को घटाने में लगी हैं और यह उम्मीद की जा रही है कि चीन इस रोग पर लगाम लगाने में कामयाब हो जाएगा। चीन अपने यहां कोरोना वायरस पर भी लगाम लगाने में एक हद तक कामयाब रहा था। लेकिन वह दूसरे देशों में उसे फैलने से नहीं रोक पाया। लेकिन इस बार अब यह उम्मीद करनी चाहिए कि सजग चीन मानवीय दृष्टिकोण अपनाते हुए अपने यहां से किसी भी संदिग्ध को किसी दूसरे देश की यात्रा न करने दें। साथ ही इस महामारी पर नियंत्रण पाने में जिस विधि एवं उपचार पद्धति से वह सफलता पाये, उसे समूची दुनिया से साझा करें, ताकि महामारी से महाविनाश का प्रकोप व्यापक न बन सके।

एचएमपीवी का संक्रमण व्यक्तिगत संपर्क से बढ़ रहा है। अगर किसी संक्रमित व्यक्ति के किसी सामान को कोई स्वस्थ व्यक्ति छुए या उसके सम्पर्क में आये तो संक्रमण का खतरा बताया जा रहा है। यह वायरस चूंकि नया है, तो इसका अभी कोई टीका नहीं है। इसकी कोई एंटीवायरल दवा भी नहीं है। यह अच्छी बात है कि अधिकांश मामलों में लोगों को मामूली समस्याएं आ रही हैं। ज्यादातर लोग लक्षण के अनुरूप उपचार और आराम से ही ठीक होते जा रहे हैं। चीन ने साफ तौर पर कुछ बताया नहीं है, मगर अनुमान यही है कि गंभीर मामलों में लक्षणों को प्रबंधित करने के लिए अस्पताल में भर्ती होने, ऑक्सीजन थेरेपी या कॉर्टिकोस्टेरॉइड उपचार की आवश्यकता पड़ सकती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की अगर मानें, तो इस वायरस का संक्रमण अक्तूबर महीने से ही बढ़ रहा है। अच्छा यही है कि यह बीमारी मौसमी साबित हो और कम से कम लोगों के जीवन पर असर डाले। कोरोना महामारी तो महाविनाश का कारण बनी थी, एचएमपीवी ऐसा अनर्थ ना करें।

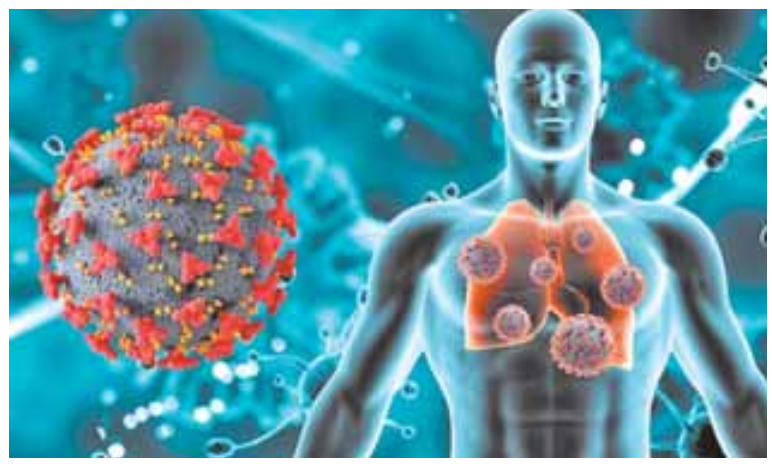

चीन की साख कोरोना महामारी के कारण बहुत गिरी थी, दुनियाभर में लोगों के स्वास्थ्य पर हमला करने वाला चीन दुनिया की नजरों से गिर गया था। आखिर चीन अच्छी-अच्छी वस्तुओं, तकनीक एवं साजोसामान का निर्यात करते-करते महामारियों का निर्यातक क्यों बन गया? स्वास्थ्य एवं वैज्ञानिक क्रांति के लिये अग्रणी चीन अपने यहां आए दिन हो रहे ऐसे संक्रमण को लेकर सजग क्यों नहीं है? अब यह सवाल बिल्कुल जायज है कि वैज्ञानिक या कृत्रिम तरक्की की होड़ में कहीं चीन अपने लोगों के बुनियादी स्वास्थ्य की अनदेखी तो नहीं कर रहा है? कहीं चीनियों की रोग प्रतिरोधक क्षमता समाप्त या बहुत कम तो नहीं हो गई है? वे बार-बार किसी-न-किसी प्रकार की महामारी की चपेट में आ रहे हैं और सम्पूर्ण मानव जाति को इससे पीड़ित बना रहे है तो यह गंभीर बात है। क्या इसका बड़ा कारण चीनी लोगों को खान-पान है? जरूरत से ज्यादा सुविधावादी जीवनशैली, कृत्रिम संसाधनों की प्रचुरता एवं अप्राकृतिक जीवन उनकी सेहत पर भारी पड़ रहा है।

ध्यान रहे कोरोना महामारी के समय विश्व स्वास्थ्य संगठन की भूमिका संतोषजनक नहीं थी। कोरोना महामारी की भयावहता के बावजूद वह चीन के प्रति उदार बना रहा। इसलिये एचएमपीवी महामारी के सन्दर्भ में सवाल उठ रहे हैं कि क्या डब्ल्यूएचओ गंभीरता दिखाते हुए पर्याप्त कदम उठायेगा? क्या उसने कोरोना महामारी के समय चीन से सही सवाल पूछे होते तो इस बीमारी के संभावित खतरे को नियंत्रित किया जा सकता था? क्या कोरोना बीमारी को लेकर विश्व को समय से सलाह न दे पाने में नाकाम रहने के लिए उसे जिम्मेदार माना जाना चाहिए? इस नयी महामारी को लेकर भी इन्हीं कारणों से डब्ल्यूएचओ पर ज्यादा विश्वास कैसे किया जा सकता है? भारत में स्वास्थ्य सेवा महानिदेशक डॉ.अतुल गोयल ने शुक्रवार को कहा कि एचएमपीवी एक सामान्य सांस संबंधी वायरस है जो सर्दी जैसे लक्षण पैदा करता है। कुछ लोगों को, खासकर बुजुर्गों और शिशुओं को, फ्लू जैसे लक्षण हो सकते हैं। लेकिन यह कुछ गंभीर या चिंताजनक नहीं है।' डॉ. गोयल ने भले से मनोवैज्ञानिक तरह से एचएमपीवी वायरस को गंभीर न बताकर इसके आतंक को कम कर दिया है, सरकार भी इस महामारी को लेकर सतर्क है, लेकिन फिर भी इस नये वायरस की त्रासदी एवं संकट से जूझ रहे विश्व-मानव को सावधान रहना चाहिए। विभिन्न देशों की सरकारों एवं डब्ल्यूएचओ का मुख्य उद्देश्य दुनिया भर के लोगों के स्वास्थ्य के स्तर को ऊंचा उठाना है। हर इंसान का स्वास्थ्य अच्छा हो और महामारी का शिकार होने पर हर व्यक्ति को अच्छे प्रकार के इलाज की अच्छी सुविधा मिल सके, ऐसे प्रयास करने है। इक्कीसवीं सदी की पहली रजत जयन्ती वर्ष की शुरुआत नये वायरस की महामारी के रूप में एक वैश्विक त्रासदी के साथ होना दुःखद है। ऐसी त्रासदी जो विश्व की बड़ी सत्ताओं को मानव कल्याण की नीतियों को अपनाने एवं इंसान को अपने जीवन मूल्यों और जीवनशैली पर पुनर्चिंतन करने को मजबूर कर रही है और उनका आत्मविश्वास एवं मनोबल बढ़ाने की आवश्यकता व्यक्त कर रही है। प्रेषकः

भारत-ऑस्ट्रेलिया टेस्ट श्रृंखला

शशांक दुबे

लेखक खेलप्रेमी हैं।

नए तमाशों से पुराने पाप धोने की कोशिश

अं ततः एक दुःस्वप्न की तरह चले भारतीय क्रिकेट के तीन माह लंबे बुरे दौर का समापन हो ही गया। सचमुच कितना कठिन समय था यह! टीम के लिए भी और भारतीय क्रिकेट प्रेमियों के लिए भी। जब-जब भारतीय टीम बल्लेबाजी के लिए उतरती, बल्लेबाज और कोच से कहीं ज्यादा दिल हम क्रिकेट प्रेमियों का कांपता। विकेट अब गया, तब गया। लंच या टी होने पर ही राहत मिलती, चलो अब कुछ देर विकेट तो नहीं गिरेगा। यह राहत दिन का खेल खत्म होने पर नई चिंताओं, नई आशंकाओं और नई आकांक्षाओं में तब्दील हो जाती। कल क्या होगा? काश! कल ऐसा हो जाए। भारतीय टीम की इस हालत ने अस्सी के दशक (विश्व कप और बेन्सन हेजेस ट्रॉफी जीतने के बावजूद) के उस दौर की याद दिला दी, जब हम टेस्ट क्रिकेट में प्रायः घर और बाहर, दोनों ही जगह हारा करते थे।

लेकिन इक्कीसवीं सदी में टेस्ट क्रिकेट में सौरव गांगुली जैसे कप्तान का प्रादुर्भाव और उनके पीछे सक्षम, समर्थ और विलक्षण खिलाड़ियों की कतार ने हमें जीत का ऐसा चस्का (मीडिया के कांधे पर सवार होकर) लगाया कि अब क्रिकेटप्रेमियों को जीत के अलावा कुछ नहीं चाहिए। लेकिन लगता है, जीत की इस अति भावुक चाह में हम यथार्थ से आँख मूँद कर बैठ गए हैं। अक्सर सच्चाईयां कड़वी होती हैं। पहला सच तो यह कि भारत ने 2001 में कलकत्ते में फॉलो ऑन खेलते हुए भी ऑस्ट्रेलिया को हराने के बाद से पिछले साल अपने घर में न्यूजीलैंड से बुरी तरह से हारने के बीच की अवधि में टेस्ट क्रिकेट में ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड और दक्षिण अफ्रीका की तरह जो समर्थ टीम का रुतबा हासिल किया, उसके कुछ कारण थे। पहला कारण हमारे पास मध्य क्रम में पहले दशक में राहुल द्रविड़, तेंदुलकर, वी वी एस लक्ष्मण और गांगुली जैसे और पिछले दशक में कोहली, पुजारा और रहाणे जैसे सशक्त बल्लेबाज थे। इनमें से क्रमशः उनके दांत और उनके बीच का गैप गति देता है, ठीक वैसे ही गेंदबाजी की यह विविधता मैच में प्रतिद्वंद्वी टीम को धराशायी करने की हमारी व्यूह रचना को गति प्रदान करती थी। आज अकेले बुमराह किला लड़ा रहे हैं। उनका सार्थक साथ देने वाला न तो कोई पेसर है, न स्पिनर। ऐसे

कोई आक्रामक था, कोई रक्षात्मक। कोई कलात्मक तो कोई फटाफट। लेकिन ये सभी एक दूसरे को पूरित करते थे। आज कोहली के फ्लॉप हो जाने के बाद हमारे पास ऐसा कोई बल्लेबाज नहीं है, जो बल्लेबाजी के लिए आते ही 'मैं हूँ ना' जैसा भरोसा जगा सके। इसी प्रकार गेंदबाज़ी में हमारे पास श्रीनाथ, प्रसाद, जहीर, ईशान्त, शमी जैसे धुआंधार गेंदबाज, तो कुंबले, हरभजन, अश्विन, जडेजा जैसे मैच जिताऊ स्पिनर थे। जिस तरह मशीन में चलने वाले दो पहियों को में टीम कठिन मैच कैसे निकाले?

हालांकि यह बात बार-बार कही जाती है कि परंपरागत क्रिकेट का बंटाधार आईपीएल ने किया है, लेकिन हर बार गावस्कर या कपिल देव या उन जैसे सीनियर खिलाड़ी इस आरोप को खारिज करते हुए कहते हैं कि आईपीएल से नए खिलाड़ियों के लिए अवसरों के नए द्वार खुल रहे हैं। पता नहीं, यह उनकी व्यावसायिक मजबूरी है या समंदर में रहकर मगरमच्छ से बैर न लेने की रणनीति का एक हिस्सा। लेकिन क्या वे यह बता सकेंगे कि पिछले दस सालों में भारत (और इसी के साथ-साथ पाकिस्तान, बांग्ला देश, श्रीलंका) में टेस्ट क्रिकेट में स्टेडियम खाली क्यों पड़े रहते हैं? जिस इडेन गार्डन या वानखेड़े में कभी एक-एक टिकट के लिए मारा मारी मचा करती थी, वहाँ टेस्ट क्रिकेट में आराम से टिकट मिल जाते हैं। इसकी तुलना में हाल ही में मेलबोर्न में ऑस्ट्रेलिया-भारत के बॉक्सिंग डे टेस्ट में पांचों दिन मिलाकर 3 लाख 73 हजार से अधिक टिकट बिके। अपने यहाँ 3 लाख तो छोड़िए दिल्ली में 3000 टिकट भी नहीं बिक रहे। मजे की बात तो यह है कि यही देशवासी आईपीएल के मैचों में चेहरा पोत कर, रंगीन टी शर्ट पहनकर ब्लैक में भी टिकट लेने और अधिकृत टिकट होने के बावजूद पुलिस के डंडे खाने को तैयार रहते हैं। टेस्ट क्रिकेट से मुँह फेर चुके यही दर्शक आज भारतीय टीम के महापतन पर छाती-माथा कूट रहे हैं।

दुःख तो इस बात का है कि कुछ ही दिन बाद हमारी इंग्लैंड के साथ वन डे और टी 20 मैचों की श्रृंखला शुरू हो जाएगी और उसके बाद चॅम्पियन ट्रॉफी और फिर आईपीएल। इस प्रकार रसातल में पहुँच चुकी एक टीम के पाप कुछ नए तमाशों से धोने या भुलाने की सफल (या असफल) कोशिश की जाएगी। छः महीने बाद जब हम इंग्लैंड से खेलने इंग्लैंड में जाएंगे, तब फिर यही सवाल हमारे सामने पुनः मंडराने लगेंगे। क्या तब किसी कोहली या रोहित या राहुल के हटने से या किसी पंत को गैर-जिम्मेदाराना शॉट लगाने के लिए डंपटने से या किसी गंभीर को बलि का बकरा बनाने से हमारी समस्या दूर हो जाएगी? उम्मीद करनी चाहिए, यह प्रश्न हमारे साथ-साथ दुनिया के सबसे अमीर क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के प्रभारियों और उनके अधीन कार्यरत चयन समिति के सदस्यों और प्रशिक्षकों के मन में भी घुमड़ रहा होगा।

चायनीज मांझा काट रही जिंदगी की डोर

मुद्दा

सूर्यदीप कुशवाहा

लेखक स्तंभकार है।

न ए साल की शुरुआत में ही ऐसी भयाहव खबर ने दस्तक दी। अब डर लगता है,सड़क पर चलना। प्रतिबंधित मांझा ने वाराणसी में बाइक सवार का गला रेता, मौत। दूसरी खबर रेस्टोरेंट संचालक चायनीज मांझा से घायल हुआ। ये कई शहरों में हाल के वर्षों में मासूम से लेकर बड़ों तक की जान ले चुका है। क्या जान लेने वाला प्रतिबंधित मांझा पतंग की दुकानों पर बिक रहा है? चूंकि सूती धागे वाले मांझे से यह मजबूत होता है। यह डिमांड में रहता है। देसी मांझा कम खतरनाक है। डिमांड में नहीं है। क्योंकि चीन का बना हुआ माझा प्लास्टिक या फिर नायलॉन का बना होता है। पतंग के खेल में देशी मांझे को पटखनी देने वाला मांझा भले ही चोरी -छिपे बेचा जा रहा हो पर बच्चे सबसे ज्यादा इसके मुरीद हैं, हालांकि,वो बिल्कुल नहीं चाहते किसी कीमत पर उनकी पतंग को काटा जा सके। चाइनीज मांझा का कारोबार बड़े शहरों में फल-फूल रहा है। पुलिस घटनाओं के बाद धर-पकड़ करती है, हर साल फिर भी ना जाने कहां से आसमान में उड़कर किसी की भी जीवन की डोर काटने आ धमकती है।

कहते हैं कि चीनी मांझे में 5 तरह के केमिकल और कई धातुओं का प्रयोग होता है। अल्युमिनियम ऑक्साइड और लेड का इस्तेमाल होता है। यह सभी चीजें मिक्स होकर तेज धार वाला ऐसा माझा बनाती हैं, जिसे कोई नहीं काट सकता, साथ ही इसकी बिक्री अधिक होती है। प्रतिबंध के बावजूद इसका बिकना, दुःखद है। दुकानदार मानवीय पहलू से विचार करें और अपनी अंर्तात्मा में झांके। तभी इसकी बिक्री पर रोक लग सकता है। केवल पशु -पक्षी ही नहीं, कोई न कोई मनुष्य इसका शिकार हो ही जाता है।

चाइनीज मांझे से मर्डर आए-दिन किसी न किसी शहर में हो जाता है। ये वो जुर्म है जिसमें अचानक आसमान से कत्ल हो जाता है और सबूत के नाम पर सिर्फ एक तेज़ धार धागा मौजूद मिलता है। जिम्मेदार प्रशासन सख्त कार्यवाही की धरपकड़ कर जैसे अगली घटना तक नींद में न सो जाए। पतंग उड़ाने के लिए सूती मांझों का इस्तेमाल भी किया जा सकता है। लेकिन सूती मांझों में किसी भी तरह का शार्प मेटल, कांच, चिपचिपा पदार्थ, मांझों को सीधा रखने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले सामान का इस्तेमाल नहीं होना चाहिए। अपने मजे के लिए दूसरों का जीवन खतरे में डालना न्याय संगत नहीं है। बच्चों को समझाया जाना चाहिए कि यह सिर्फ पतंग ही नहीं, बल्कि चायनीज मांझा काट रही जिंदगी की डोर भी।

पुस्तक समीक्षा

विवेक कुमार मिश्र

समीक्षक हिंदी के प्राध्यापक हैं।

प्रजातंत्र में कबूतर : जीवन प्रेम का महाख्यान

सुनेत्रा,
बुनो कोई गीत किसी चिड़िया की तरह
प्रेम करते हुए जीने से अनूठा
कोई दूसरा काम नहीं है सृष्टि में।

सृष्टि के रहस्य और संसार को जानना ही सर्जना का भी क्षण होता है। जो सृजन में है, जो जीवन रत है वह निश्चित ही प्रेम में डूबा होगा और यह संसार इस प्रेम की ही उपलब्धि है। इस उपलब्धि को पाने के लिए... जीवन के घाट से चलते हुए संसारी बातों, किस्से कहानियों, एक दूसरे से समय के पार जाकर बतियाने की ज़िद ही किसी कविता संग्रह को इस तरह की स्वीकार्यता और पठनीयता सौंपती है कि बार-बार कविताओं को पढ़ने के बाद भी बहुत कुछ छूट जाता है कुछ उसी तरह जैसे कि कहां कोई भी एक बार में जीवन जीता है। यहां सुनेत्रा है, पहाड़ है, पेड़ हैं, नदियां हैं समुद्र है और वह पूरा कोलाहल है जिससे संसार बनता है वह शहर वह नगर और महानगर है जिससे हमारी उपस्थिति सिद्ध होती है और इन सबके बीच से जीवन समर में प्रेम को जीते हुए चलते राही यात्री और सह यात्री हैं। सही मायने में कहें तो राजेश्वर वशिष्ठ का प्रजातंत्र में कबूतर जीवन प्रेम का महाख्यान है और इसे इसी रूप में पढ़ा जाना चाहिए। यह संग्रह प्रेम की अनूठी छवियों को रचते गढ़ते आगे बढ़ता है। यदि इस संग्रह को किसी एक रुपक से समझने की कोशिश करें तो नदी का रुपक सामने आ जाता है। जिस तरह नदी अपने उदगम स्थल से निकलकर हहराते इठलाते इतराते समुद्र की ओर बिना रुके भागती रहती है वैसे ही प्रेम भी अपने हृदय स्रोत से निकल कर उसी हृदय में समा जाने के लिए विकल हो चलता ही रहता है। इस क्रम में जीवन संसार के हालात और संघर्ष अपनी जगह पर बने रहते हैं और इस सबके बीच जीवन जीना किसी बड़े संघर्ष की ओर संकेतित करने जैसा ही है। राजेश्वर वशिष्ठ का कवि मन अंततः प्रेम का कवि मन रचता है और उसी स्थिति में समाज की स्थितियों विसंगतियों और हालातों का न केवल अध्ययन करता चलता है बल्कि इस स्थिति में कैसे कोई भी चलेगा और कहां तक चलेगा का निर्णय भी उनका कवि लेता रहता है। कविता संग्रह पांच खंडों में - गोमती से गपशप, निर्मल हृदय, प्रजातंत्र में कबूतर, सुनेत्रा! तुम ही बसंत हो और इस वैलेंटाइन डे पर... सुविधा के लिए और एक नाम देने के लिए रखा गया है पर पूरा संग्रह संसार की तरह ही अनंत घुमाव के बाद प्रेम के घाट पर थिर मिलता है उसी तरह इस संग्रह की कविताएं आपको पूरी दुनिया की यात्रा प्रेम के धागे के साथ बांधकर कराती हैं। यहां संघर्ष, हालात और विसंगतियों को न केवल सामने रखा गया है बल्कि कवि इन हालातों में अपनी यात्रा जारी करते हुए प्रेम की जो दृश्यता और सिद्धता रचता है वह इस संग्रह का मानव सभ्यता के लिए कमाया गया सत्य और तथ्य है। यहां कवि गोवर्धन पूजा के द्वारा लोक संस्कृति के रक्षण में श्रीकृष्ण की उपस्थिति और मानव विश्वास से सभ्यता के संघर्ष और संदर्भ को रखा गया है।

आपदा के समय में
आत्मविश्वास ही बनता है छतरी

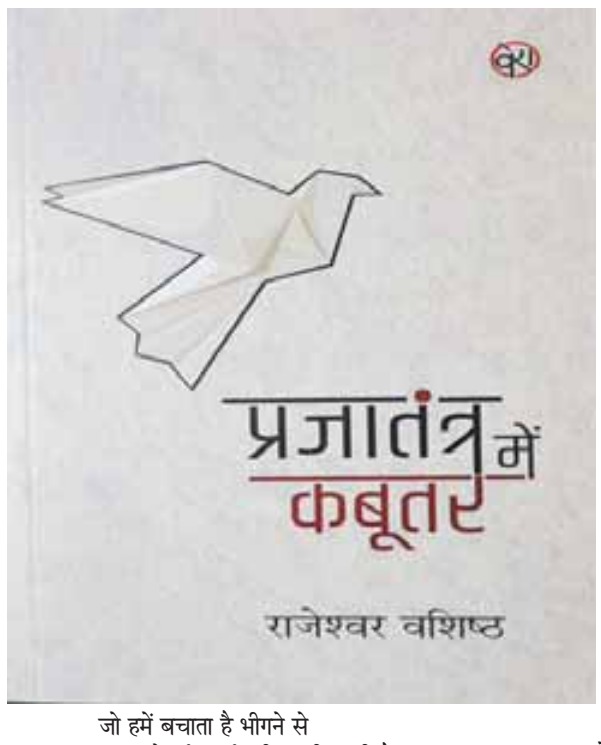

जो हमें बचाता है भीगने से
आज गोवर्धन पर्वत ही हमारी छतरी है।

कवि जिस प्रेम की नदी से अपनी नौका को लेकर चलता है वह बहुत गहरे जीवन की डोर से बंधी हुई है। यहां समुद्र से ऊंची उठने वाली लहरें भी हैं और हालात के चट्टान भी हैं पर इन सबके बावजूद प्रेमिल दुनिया का ऐसा महापर्व इस संग्रह में पहली कविता से लेकर आखिरी कविता तक इस तरह चलता है कि कहना पड़ता है कि जीवन है और यदि जीवन को सही ढ़ंग से जीने की इच्छा है तो आपको इच्छा की नदी यानी कि प्रेम की नदी के इस पार से उस पार होते हुए उस समुद्र में भी जाना होगा जो जीवन के किनारे से ही उगता है।

पेड़! तुम सोते रहना शताब्दियों तक
मानवता के प्रति भूल कर अपना दायित्व।
भूल जाना तुमसे प्यार किया था
किसी चिड़िया ने।

प्रेम की स्थितियों, उसके घुमावदार चक्र और इस पूरी प्रक्रिया में मन मस्तिष्क कितना लहुलुहान होता है - इसका साक्षात्कार किया जा सकता है। किसी भी कविता को कहीं से भी उठाकर पढ़ना शुरू कीजिए वह आपको प्रेम की नदी में स्नान करा कर ही रहेगा। यह इस संग्रह की उपलब्धि है। सुनेत्रा यहां कथा पात्र और जीवन पात्र साथ साथ है। कोई साथ चलें या न चलें पर हर मोड़ पर सुनेत्रा है और सुनेत्रा के साथ ही कदम रुकते या बढ़ते हैं।

सुनेत्रा,
देखो तो आज पेड़ पुरुष की तरह सोचने ही
प्रेम की बाजी हार गया।

प्रेम में होना या प्रेम की बाजी हार जाना और जीवन स्थितियों की यातना से गुजरना कोई यूं ही कहानी नहीं है कि सुनाया और चल दिया। प्रेम की कथा न सुने सुनी जाती है न ही सुनाना आसान होता है पर सभ्यता और संस्कृति के सारे संदर्भों में यदि कोई एक तत्व प्राण के रूप में है तो वह प्रेम ही है जिसे प्रजातंत्र में कबूतर संग्रह के द्वारा समाज, संसार नीति और राजनीति सभी राहों से गुजारते हुए सिद्ध किया गया है।

सुनेत्रा,
इस छल-छद्म से भरी दुनिया में
बस, तुम ही प्रेम हो।

कवि राजेश्वर वशिष्ठ ने बड़े साफ शब्दों में कहा है कि इस छल-छद्म भरी दुनिया में यदि दुनिया को जीने लायक कुछ बनाता है तो वह प्रेम ही है। प्रेम से अलग हटकर हम संसार के लिए, स्वयं के लिए और सभ्यता मात्र के लिए कुछ नहीं कर सकते। यदि कुछ महनीय और मूल्यवान है तो वह प्रेम ही है जिसपर सभ्यताएं टिकी हैं।

सुनेत्रा,
प्रेम अमृत घट है
सृष्टि और मानव सभ्यता के निर्माण में।

किसी भी संग्रह की यह उपलब्धि भी हो सकती है कि संग्रह की पहली कविता से लेकर आखिरी कविता तक अंत सलिला के रूप में प्रेम की बाती यदि जलती रहे तो वह निजी और सार्वजनिक व सामाजिक आश्वस्ति को भी जन्म देती है कि संसार को अभी भी रचने और गढ़ने के लिए सारे तकनीकी संजाल और मशीनरी के बावजूद सीधा साधा मानव प्रेम ही है जो अंततः बचायेगा।

प्रजातंत्र में कबूतर (कविता संग्रह)
- राजेश्वर वशिष्ठ
वेरा प्रकाशन, जयपुर
मूल्य - 200

मेहरा समाज समिति ने जरूरतमंदों को बांटे कंबल

शहीद केरूलाल आठोले के स्मारक पर कार्यक्रम की तैयारी

बैतूल। मेहरा समाज समिति के जिला अध्यक्ष संतु सूर्यवंशी के नेतृत्व में 5 जनवरी 2025 को बैतूल जिले के भैंसदेही ब्लॉक के बडग़ांवढाना खामला में कंबल वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में जिला कार्यकारिणी और ब्लॉक कार्यकारिणी के साथ वरिष्ठ समाजसेवियों ने भाग लिया। जरूरतमंद गरीब, असहाय और दिव्यांग परिवारों को कंबल वितरित कर सहायता प्रदान की गई। कार्यक्रम में दिव्यांग दंपत्ति सुरेश आठोले और लता आठोले को पूर्व में जिला महामंत्री रंजीत बेले के प्रयास से एक लाख रुपये की सहायता दिलाई गई थी, जिसका उपयोग उन्होंने अपने घर में किराना दुकान स्थापित करने के लिए किया। इस अवसर पर उन्हें पुन- स्वरोजगार के लिए एक लाख रुपये की सहायता दिलाने और सांसद या विधायक निधि से पांच-पांच हजार रुपये दिलवाने का आश्वासन दिया गया। इस कार्यक्रम में सक्रिय युवा कार्यकर्ता राजेंद्र आठोले को सर्वसम्मति से जिला युवा प्रकोष्ठ उपाध्यक्ष नियुक्त कर प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। ग्राम खामला में बाबा साहब अंबेडकर भवन और मूर्ति स्थापना के लिए भूमि का निरीक्षण और अनावरण किया गया। इसके साथ ही ग्राम बारामाचा के निवासी शहीद वीर केरूलाल आठोले के स्मारक और मूर्ति स्थापना के आयोजन की योजना बनाई गई। यह कार्यक्रम 26 जनवरी 2025 को आयोजित होगा।

म्यूजिकल नाइट में 11 को झूमेगा बैतूल

इंडियास गॉट टैलेंट फेम और इंडियन आइडल फेम बिखरेंगे जलवा

बैतूल। जिले की सांस्कृतिक और सामाजिक संस्था संतुलन के तत्वावधान में 11 जनवरी को होने वाली म्यूजिकल नाइट का जिलेवासी बड़ी बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। म्यूजिकल नाइट में इंडियास गॉट टैलेंट फेम और इंडियन आइडल फेम अपना जब जलवा बिखरेंगे तो बैतूल झूम उठेगा। संतुलन समिति के अध्यक्ष सजल प्रशांत गर्ग ने बताया कि दिव्यांगों के सहायतार्थ सामाजिक संस्था संतुलन के द्वारा नगर के लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम में यह भव्य म्यूजिकल नाइट का आयोजन किया जाएगा। आयोजन को लेकर सभी बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। आयोजन समिति के सदस्य अबीजर बोहरा ने बताया कि 11 जनवरी को आयोजित होने वाली म्यूजिकल नाइट के लिए 8 जनवरी से शानदार स्टेज बनाने का कार्य प्रारंभ हो जाएगा। श्री अग्रवाल ने बताया कि स्टेज ऐसा बनाया जा रहा है ताकि पीछे की पंक्ति में बैठे श्रोताओं को भी स्टेज और स्टेज के कलाकार स्पष्ट दिखाई दे सकें। स्टेज बनाने के लिए कुशल कारीगर कल शाम को बैतूल पहुंच जाएंगे और 8 जनवरी से स्टेज बनाना प्रारंभ कर देंगे।

पवार समाज के पूर्व सैनिकों का मिलन समारोह संपन्न

बैतूल। जिले के पवार समाज के पूर्व सैनिकों का वार्षिक मिलन समारोह तरंग लान सम्पन्न हुआ। केप्टन आईएन सुमित सिंह व श्रीमती नीरपजीत सिंह जिला सैनिक कल्याण बोर्ड अधिकारी, संरक्षक पवार समाज वरिष्ठ जन कल्याण मंच बाबू लाल कालभोर, फ्लाइंग ऑफिसर रामपत बुआडे नागपुर के आतिथ्य में कैप्टन एलआर पवार की अध्यक्षता में आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में छोटे छोटे बालकों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए और सभी का मन मोह लिया। महिलाओं और छोटे छोटे बालकों ने कुर्सी दौड़, जलेबी रेस, रूमाल रेस, बाटल पासींग,सुई-धागा रेस का आयोजन किया सभी प्रतिभागी को अतिथियों ने पुरस्कार वितरित किए।

आज मेंटेनेंस के चलते बंद रहेगी बिजली

बैतूल। बिजली कंपनी द्वारा आज 7 जनवरी को 11 केव्ही टाउन-2 फीडर का मेंटेनेंस कार्य किया जाना है। मेंटेनेंस कार्य के चलते मंगलवार को प्रातः 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक लिंक रोड, चंद्रशेखर वार्ड, कारगील चौक, बारस्कर कॉलोनी, इंदिरा वार्ड, पीडब्ल्यूडी कॉलोनी, कोठी बाजार, कंपनी गार्डन, आजाद वार्ड, गर्ल्स कॉलेज, वीवीएम कॉलेज, तल्लैया मोहल्ला, अम्बेडकर चौक, उमप किराना, राठी अस्पताल, ड्रीम होम्स कॉलोनी, नेहरू पार्क, बस स्टैंड एमजी काम्पलेक्स, लल्ली चौक, सीमेंट रोड आदि क्षेत्र में विद्युत सप्लाई बंद रहेगी। मध्य प्रदेश मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड बैतूल शहर जोन-2 के प्रबंधक ने बताया कि किन्ही अपरिहार्य कारणों से समय में परिवर्तन किया जा सकता है।

बजट के अभाव में स्कूलों की मरम्मत नहीं हुई, जर्जर शालाओं में बच्चे कर रहे पढ़ाई

स्कूल भवनों की मरम्मत के लिए 13 करोड़ का भेजा प्रस्ताव, नहीं मिली राशि

संजय द्विवेदी, बैतूल। शैक्षणिक सत्र 2024-25 बीतने को महज और कुछ माह शेष है। अप्रैल 2025 से नया शिक्षा सत्र भी शुरू हो जायेगा, लेकिन स्कूलों की दशा नहीं सुधर पाई। जिले में करीब 700 से अधिक स्कूल भवन अभी भी जर्जर हैं। इन स्कूल भवनों में बच्चे जान जोखिम में डालकर पड़ रहे हैं। हर साल इन स्कूलों की दशा सुधारने के लिए जिला शिक्षा केंद्र से प्रस्ताव बनाकर राज्य शिक्षा केंद्र भेजा जा रहा है। लेकिन बीते दो साल से जर्जर स्कूलों की मरम्मत और अन्य कार्यों के लिए राज्य शिक्षा केंद्र से राशि नहीं मिली है। इससे जर्जर स्कूल भवन और अधिक जर्जर होते जा रहे हैं। दरअसल जिले में पिछले दो सालों से राज्य शिक्षा केंद्र से एक ढेला तक नहीं मिला है। इस साल भी जिला शिक्षा केंद्र ने प्राथमिक एवं माध्यमिक स्कूलों की मरम्मत के लिए 13 करोड़ रुपए का स्टीमेट बनाकर मंजूरी के लिए भेजा है, लेकिन अभी तक इसे स्वीकृति नहीं मिली है। जबकि कई स्कूल भवनों के कक्षों की स्थिति इतनी ज्यादा खराब हो गई है कि बारिश में छत से पानी टपकने और प्लास्टर गिरने के कारण कक्षों में कक्षाएं लगाना मुश्किल होता है। ऐसे में कई कक्षाओं को एक साथ लगाया जाता है। इससे बच्चों की पढ़ाई पर असर पड़ता है। ऊपर से शिक्षकों, अभिभावकों और बच्चों में भवन

कमजोर होने से कभी भी हादसा होने का डर अलग बना रहता है।

721 स्कूलों को किया मरम्मत के लिए चिन्हित- जिले में सबसे ज्यादा प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों की हालत खराब है। जिला शिक्षा केन्द्र ने ऐसे जर्जर भवनों की सूची भी तैयार की है। कुल 721 स्कूल भवन चिन्हित किए गए हैं, जिनकी इमारत कमजोर हो चुकी हैं। इनमें से तो कुछ बिल्डिंगों में स्कूल का संचालन भी बंद कर दिया गया है, तो कुछ में लोकल स्तर पर मरम्मत कराकर काम चलाया जा रहा है। स्थिति यह है कि स्कूल बिल्डिंगों को मेंटेनेंस नहीं होने के कारण हर साल जर्जर भवनों की संख्या लगातार बढ़ रही। शिक्षकों का कहना है कि स्कूल भवन जर्जर हो चुके हैं। जिससे हमेशा भवनों से खतरा बना रहता है। लेकिन अतिरिक्त कक्ष नहीं होने की वजह से जर्जर कमरों में ही बच्चों को बैठाकर पढ़ाना पड़ रहा है।

बरसात में लगती है एक ही कमरे में कक्षाएं- गर्मी और सर्दी के मौसम में जर्जर कक्षों में जैसे-तैसे कक्षाएं संचालित भी हो जाती है, लेकिन बरसात के समय बच्चों के साथ-साथ शिक्षकों की परेशानी बढ़ जाती है। कुछ शिक्षकों ने बताया कि बरसात के मौसम में छत से पानी टपकने के कारण एक ही कमरे में 5 कक्षाएं लगाई जा रही थी। ऐसे में एक समय में एक ही कक्षा की पढ़ाई हो पा रही थी। एक कमरा में बच्चों के पढाई, वह भी अलग-अलग क्लास का यह शिक्षा विभाग के अधिकारियों पर प्रश्न खड़ा कर रहा है। कुछ स्कूलों के तो बरामदे भी जर्जर है। सरकारी स्कूल का जर्जर हालत में सुधार के लिए वर्षो से फाइल एक से दूसरी टेबल पर घूम रही।

प्रस्ताव भेजा, लेकिन दो साल से नहीं मिला बजट

प्राथमिक एवं माध्यमिक शालाओं के मेंटेनेंस के लिए राज्य शिक्षा केंद्र द्वारा बजट जारी किया जाता हैं, लेकिन कोविड काल के बाद बजट को लेकर दिक्कत आ रही हैं। इससे प्रदेश स्तर पर स्कूलों की मरम्मत के लिए बजट नहीं मिल पा रहा है। पिछले दो सालों से बैतूल जिले को बजट नहीं मिला है। पिछले साल भी जिला शिक्षा केंद्र ने स्कूल भवनों की मरम्मत के लिए प्रस्ताव बनाकर बजट की मांग की थी लेकिन एक ढेला तक नहीं मिला। वहीं इस साल भी 721 स्कूल भवनों की मरम्मत के लिए 13 करोड़ रुपए का प्रस्ताव बनाकर मंजूरी के लिए राज्य शिक्षा केंद्र को भेजा है। लेकिन मंजूरी नहीं मिली सकी है। जिससे स्कूल भवनों की मरम्मत का काम नहीं हो रहा है।

हर ब्लाक में स्कूलों की हालत ठीक नहीं

सरकारी राशि के अभाव में स्कूलों की दशा-दिशा नहीं सुधर पा रही है। बच्चे और शिक्षक भी हादसे के डर के साये में पढ़ाई कर रहे है। आमला ब्लाक के शासकीय प्राथमिक शाला मडानीढाना स्कूल जर्जर है, तो वहीं शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय छिपन्या पिपरिया में हॉस्टल के कमरों में कक्षाएं संचालित की जा रही है। इधर भीमपुर विकासखंड अंतर्गत ग्राम पंचायत रंभा के प्राथमिक शाला रिंगढाणा भवन खंडहर में तब्दील हो गया है। शाहपुर ब्लाक का प्राथमिक शाला ठानीखेड़ा, प्राथमिक शाला जामनगरी, प्राथमिक शाला मुडा सहित अन्य ब्लाकों में भी इसी तरह स्कूल है, जिनके भवन जर्जर हो गए है। इसके बावजूद जर्जर भवन की ना मरम्मत हो रही ना नवनिर्माण कराया जा रहा हैं। जिम्मेदार अधिकारी का इस ओर ध्यान नहीं है।

इनका कहना है -

जिले के 721 जर्जर सरकारी स्कूल भवनों की मरम्मत के लिए राज्य शिक्षा केंद्र को प्रस्ताव बनाकर भेजा था। लेकिन राशि नहीं मिली है। बजट मिलने के बाद स्कूलों की मरम्मत कार्य करवाया जायेगा।

- जितेंद्र भनारिया,
डीपीसी जिला शिक्षा केंद्र बैतूल

रैंडमली चयनित 5 विभागों के हर पहलू पर होगी विस्तृत समीक्षा

कलेक्टर ने समय सीमा की बैठक में दिए निर्देश

बैतूल। जिले में प्रति सोमवार होने वाली समय सीमा की बैठक को और अधिक प्रभावी बनाया जाएगा। आगामी टीएल बैठकों में विभिन्न महत्वपूर्ण योजनाओं और कार्यक्रमों की समीक्षा के साथ पांच विभागों का रैंडमली चयन किया जाएगा और उन विभागों की समस्त योजनाओं और कार्यक्रमों के प्रत्येक पैरामीटर पर विशेष समीक्षा होगी। बैतूल कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी द्वारा किए गए इस नवीन प्रयोग से न केवल समस्त योजनाओं और सेवाओं में उल्लेखनीय प्रगति आएगी बल्कि प्रत्येक विभाग के हर पहलू पर समीक्षा से विभागीय अधिकारी की जवाबदेही भी निर्धारित होगी। सोमवार को कलेक्ट्रेट में आयोजित समयसीमा की बैठक में कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने इस संबंध में सभी अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। बैठक में कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान के तहत आयोजित शिविरों की विभागवार विस्तार से समीक्षा की। उन्होंने ऊर्जा और उद्यानिकी विभाग को शिविर में प्राप्त आवेदनों को निर्धारित पोर्टल पर दर्ज करने और लंबित आवेदनों का शीघ्र निराकरण करने के निर्देश दिए। उन्होंने राजस्व अधिकारियों को निर्देशित किया कि जनकल्याण शिविर में प्राप्त नामांतरण के आवेदनों का नगर पालिकाओं में जाकर निरीक्षण किया जाए। नामांतरण, बटवारा सीमांकन के प्राप्त आवेदनों के निराकरण में प्रगति लाएं। सभी एसडीएम तहसीलदार अपने क्षेत्र में रैंडमली मकानों का निरीक्षण कर नामांतरण के संबंध में जानकारी प्राप्त करें। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने समस्त जनपद सीईओ, सीएमओ को सख्त निर्देशित किया कि जन कल्याण शिवरो का प्रभावी ढंग से आयोजन कर विभिन्न सेवाओं में आवेदनों की संख्या बढ़ाए। जन्म मृत्यु प्रमाण पत्र, विवाह पंजीयन, फायर एनओसी इत्यादि सेवाओं का लोगों को त्वरित लाभ मिले। उन्होंने जिला योजना अधिकारी को भी जन्म मृत्यु एवं विवाह पंजीयन के आवेदनों की सतत मॉनिटरिंग करने के निर्देश दिए। उपसंचालक सामाजिक न्याय को स्वास्थ्य विभाग के साथ समन्वय कर दिव्यांगता प्रमाण पत्र संबंधी आवेदनों का निराकरण करने के निर्देश दिए।

10 जनवरी को आयोजित होगा जिला स्तरीय रोजगार मेला- बैठक में बताया गया कि आगामी 10 जनवरी को जे एच कॉलेज में जिला स्तरीय रोजगार मेले का आयोजन किया जाएगा। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने रोजगार मेले का व्यापक प्रचार प्रसार करने और मेला स्थल पर युवाओं के रजिस्ट्रेशन, काउंसलिंग आदि की भी सुव्यवस्थित व्यवस्थाएं करने के निर्देश दिए।

समारोह पूर्वक मनाया जाएगा गणतंत्र दिवस

बैतूल। जिले में गणतंत्र दिवस समारोह पूरी गरिमा के साथ समारोहपूर्वक मनाया जाएगा। इसके लिए सभी आवश्यक तैयारियां व इंतजाम सुनिश्चित करने के उद्देश्य से आज कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई। बैठक में कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने संबंधित अधिकारियों को सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन की व्यवस्थाएं समय पूर्व सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर प्रस्तुत की जाने वाली अनेक विभागों की झांकी के लिए झांकी बनाने के पूर्व थीम अनुमोदित कराने के लिए कहा। गणतंत्र दिवस के अवसर पर झांकियों में स्वास्थ्य, शिक्षा, महिला बाल विकास, उद्यानिकी, पशुपालन, कृषि, जल संसाधन, सामाजिक न्याय, पंचायत ग्रामीण विकास सहित अनेक विभागों द्वारा उपलब्धियों को दर्शाती एवं जागरूकता का संदेश प्रसारित करती चलित झांकियां प्रदर्शित की जाएंगी। बैठक में गणतंत्र दिवस के आयोजन स्थल एवं आयोजन के विभिन्न विभागों द्वारा की जाने वाली व्यवस्थाओं के संबंध मे विस्तार से जानकारी दी गई। गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन पुलिस ग्राउंड में किया जाएगा। जिसमें स्थल की साफ, सफाई, ध्वजारोहण, मंच व्यवस्था, बैठक व्यवस्था, पेयजल व्यवस्था, स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों एवं लोकतंत्र सेनानियों का सम्मान, मुख्यमंत्री जी के भाषण की प्रति, प्रशस्ति पत्र, प्रमाण पत्र, बेरिकेडिंग व्यवस्था, प्राथमिक उपचार, परेड, झांकियां, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि की विभिन्न विभागों के माध्यम से की जाने वाली व्यवस्थाओं के संबंध में विस्तार से चर्चा की गई।

मानसरोवर द स्कूल की छात्रा अपूर्वा का हैंडबॉल टीम के लिए हुआ चयन

हैदराबाद में आयोजित प्रतियोगिता में मध्य प्रदेश का करेंगी नेतृत्व

बैतूल। मानसरोवर द स्कूल बैतूल की कक्षा 10वीं की छात्र अपूर्वा वर्मा का मध्य प्रदेश की ओर से स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (एसजीएफआई) की अंडर-17 आयु वर्ग में हैंडबॉल टीम के लिए चयन किया गया है। यह टूर्नामेंट 10 से 14 जनवरी, 2025 तक महबूबनगर केवीएस रीजन हैदराबाद में आयोजित किया जाएगा।

उल्लेखनीय है कि अपूर्वा बैतूल के जिला हैंडबॉल संघ की छात्रा है, जिसके कोच और सचिव श्रीराम यादव हैं। उन्होंने अपनी शिष्या के प्रदर्शन पर खुशी व्यक्त की और बताया कि वह पिछले महीने गुना में आयोजित सीबीएसई टूर्नामेंट में मानसरोवर द स्कूल को कांस्य पदक जीताने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। अपूर्वा एक होनहार छात्रा है और गत वर्ष फेडरेशन कप में भी मध्यप्रदेश के लिए खेल चुकी हैद्य बैतूल जिले के हैंडबॉल परिवार, मानसरोवर द स्कूल के चेयरमैन और जिला हैंडबॉल संघ के अध्यक्ष विनय सिंह चौहान,

मानसरोवर स्कूल के निदेशक श्रीमती साबले, अन्नू जसूजा और लीलाराम सरले एवं विद्यालय के प्राचार्य और हैंडबॉल कोच श्रीराम यादव ने छात्र को बधाई दी है।

एसोसिएशन बैतूल की मासिक बैठक में दी वार्षिक प्रतिवेदन की जानकारी

बैतूल। प्रोग्रेसिव पेंशनर्स एसोसिएशन बैतूल की मासिक बैठक 5 जनवरी को संपन्न हुई। बैठक में माह दिसंबर 2024 में सेवानिवृत्त हुए सरकारी सेवकों प्रमोद पंवार, अनिल सिंह सोलंकी, श्रीराम पंवार, सुनील कुमार तरकसवार, कैलाश सिंह परिहार एवं श्रीमती गीता सोनी का सम्मान किया गया। अध्यक्ष रामचरण साहू, कार्यक्रम अध्यक्ष विकास नारायण पाल और अन्य कार्यकारिणी पदाधिकारियों ने शाल, श्रीफल, पट्टिका और अभिनंदन पत्र देकर उनका स्वागत किया। भैंसदेही शाखा के नवनियुक्त अध्यक्ष बाबूलाल राठौर का भी जिला अध्यक्ष रामचरण साहू और कार्यकारी अध्यक्ष सुंदरलाल कड़वे ने सम्मान किया। उन्होंने उन्हें सफल कार्यकाल के लिए शुभकामनाएं दीं। सचिव शिवचरण हजारे ने विस्तृत वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि एसोसिएशन ने अब तक 405 प्रकरणों का निराकरण किया है। वर्तमान में कुल 300 सदस्य हैं, जिनमें से 115 वार्षिक और 185 आजीवन सदस्य हैं। पिछले तीन वर्षों में 136 सेवानिवृत्त पेंशनर्स का सम्मान किया गया और उन्हें सदस्यता ग्रहण कराई गई। सचिव शिवचरण हजारे ने बताया कि एसोसिएशन ने धारा 49/6 को विलोपित करने, 65 वर्ष की आयु के बाद प्रत्येक पांच वर्ष के अंतराल पर 5 प्रतिशत पेंशन वृद्धि और आदिवासी कल्याण विभाग के शिक्षकों को नियमित वेतनमान देने की मांग की है। इसके लिए मांग पत्र मुख्यमंत्री और विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर को प्रेषित किया गया।

तीन दिवसीय मिलेट्स मेले का हुआ समापन

अंतिम दिन नपाध्यक्ष, कलेक्टर व जिपं अध्यक्ष ने चखा पकवानों का स्वाद

बैतूल। जिला प्रशासन, प्रत्याशा संस्था नवांकुर जन अभियान परिषद एवं विभिन्न विभागों के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित श्री अन्न मिलेट्स मेले का सोमवार को कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी, पुलिस अधीक्षक निश्चल झारिया ने सभी जिला अधिकारियों के साथ अवलोकन किया। इस दौरान नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर भी उपस्थित रहीं। अधिकारियों ने मेले में विभिन्न स्टालों का अवलोकन किया साथ ही मिलेट्स आधारित उत्पादों की खरीदारी भी की। अधिकारियों ने मिलेट्स से बने स्वादिष्ट व्यंजनों का स्वाद भी चखा। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने मेले में लगे प्रत्येक स्टॉल का अवलोकन किया। उन्होंने स्टॉल संचालकों से उत्पादों के बनाने की प्रक्रिया की जानकारी ली और अचार, पौधे आदि उत्पाद भी खरीदे। मेले में महिला सशक्तिकरण पर केंद्रित मोटे अनाज से बनी रंगोली आकर्षण का केंद्र रही। श्री अन्न मेले में 22 से अधिक स्टाल लगाए गए। मेले में बंधन विकास केंद्र सावलीगढ़ दक्षिण वन मंडल, जन अभियान परिषद, नव सृजन स्व सहायता समूह, बापू की कचौड़ी, महिला एवं बाल विकास, सतपुड़ा एकीकृत ग्रामीण संस्थान सुधा संगति ग्राम टेमनी, तुलजा भवानी वेलफेयर एंड एजुकेशन सोसाइटी, कृषि विभाग, कुटीर एग्रो प्रोड्यूसर लिमिटेड आठनेर, महिला किसान अभियान सिरडी, पुलिस विभाग द्वारा धृति विक्रय एवं प्रदर्शनी इत्यादि स्टाल लगाए गए। श्री अन्न मेले का समापन सोमवार सायं 4 बजे जिला पंचायत अध्यक्ष राजा पंवार, नगर पंचायत अध्यक्ष पार्वती बाई बारस्कर, वरिष्ठ समाज सेवियों, प्रत्याशा संस्था की अध्यक्ष तूलिका पचौरी, जिला समन्वयक प्रिया चौधरी की उपस्थिति में प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र एवं स्मृति चिन्ह देकर किया गया। महिला बाल विकास की और से बालिका सुरक्षा को लेकर श्री अन्न से तैयार रंगोली और पोस्टर प्रतियोगिता में प्रथम एवम द्वितीय पुरस्कार प्राप्त विजेताओं को प्रमाणपत्र प्रदान कर उत्साह वर्धन किया। पुलिस विभाग द्वारा लगाए हस्तशिल्प स्टाल धृति को उत्कृष्ट सजावट पर पुरस्कृत किया। त्रिदिवसीय मेले में सभी स्टाल्स की कुल बिक्री दो लाख छप्पन हजार रुपए की रही। श्री अन्न मेला में श्री अन्न से बने अनेक प्रकार के व्यंजनों के स्टाल लगाये गये, जिसका नागरिकों ने भरपूर लाभ उठाया। मेले में हस्तशिल्प उत्पादों के स्टॉल भी लगाये गए।

प्रत्याशा के प्रयास को सभी ने सराहा

श्री अन्न मिलेट्स मेले के अंतिम दिन मेले में पहुंचे कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी ने शासकीय अधिकारियों से कहा कि सभी को कहा कि महिलाओं के उत्साहवर्धन के लिए मेले से खरीददारी करना चाहिए। वहां मौजूद जिला पंचायत अध्यक्ष राजा पंवार एवं अन्य जनप्रतिनिधियों ने मप्र जन अभियान परिषद की सहयोगी संस्था प्रत्याशा के अभिनव प्रयास की सराहना करते हुए इस मेले को जिले की अन्य तहसीलों में भी इस तरह के मेलों का आयोजन किया जाना चाहिए। इससे मोटे अनाज के उपयोग का प्रमोशन हो। इस अवसर पर समाजसेवी नवनीत गर्ग, श्रीमती नेहा गर्ग, उन्नत कृषक राजेश (पप्पू) शुक्ला, श्रीमती सीता शुक्ला, वरिष्ठ पत्रकार सुनील द्विवेदी, वरिष्ठ अधिवक्ता एवं समाजसेवी संजय पप्पी शुक्ला, समाजसेवी आशीष पचौरी, प्रत्याशा संस्था से अध्यक्ष तूलिका पचौरी, तरुणा द्विवेदी, निमिषा शुक्ला, प्रमिला धोत्रे उपस्थित थे।

इन्हें मिला पुरस्कार

मिलेट्स मेले में अपने बेहतर उत्पाद के लिए या व्यंजन के लिए जिन्हें पुरस्कृत किया गया, उनमें चाइनीज भेल के लिए आशा घाघरे प्रथम, मिलेट्स नमकीन के लिए लवलीन अरोरा द्वितीय, सवा की खीर के लिए प्रज्ञा सोनी को तृतीय पुरस्कार दिया गया। इसके अलावा स्टॉल डेकोरेशन के लिए पुलिस विभाग के धृति क्रिएशन काउंटर को सर्वश्रेष्ठ स्टॉल का पुरस्कार दिया गया। वहीं बालिका सुरक्षा पर पेंटिंग के लिए श्रेणिक जैन को भी सम्मानित किया गया।

घोड़ावाड़ी में पुलिया निर्माण का विधायक ने किया शिलान्यास

बैतूल/भौरा। ग्राम पंचायत अनकावाडी के घोड़ावाडी गांव में सोमवार को पांचवें वित्त आयोग के तहत बनने जा रही पुलिया का शिलान्यास कार्यक्रम विधिवत रूप से संपन्न हुआ। यह पुलिया ग्रामीणों की वर्षों पुरानी समस्या का समाधान करेगी, जिससे आवागमन सुगम होगा। शिलान्यास कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधायक गंगा सज्जन सिंह उईके ने अपने करकमलों से भूमि पूजन और शिलान्यास किया। उन्होंने कहा, यह पुलिया न केवल गांव के विकास में मील का पत्थर साबित होगी, बल्कि आसपास के ग्रामीणों को बरसात के मौसम में आने वाली परेशानियों से भी राहत मिलेगी। सरकार ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए संकल्पित है और प्राथमिकता के आधार पर अधूरे कार्यों को पूरा किया जा रहा है। कार्यक्रम में घोड़ाडोंगरी मंडल अध्यक्ष राजेश महतो ने कहा कि यह पुलिया ग्रामीणों के लिए बेहद आवश्यक थी, और इसके निर्माण से क्षेत्र का समग्र विकास संभव होगा। सरपंच हबलू वरकडे ने विधायक उईके और अन्य जनप्रतिनिधियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस पुलिया के बनने से गांव का संपर्क अन्य गांवों और बाजारों से बेहतर होगा। कार्यक्रम में जनपद सदस्य फुलवती धुर्वे, इन्दल यादव, जगन्नाथ यादव, लादुराम यादव, केवुलाल यादव, मुकेश यादव, सिद्धार्थ बिहारे, गंगाप्रसाद यादव, नितेश राठौर, श्याम यादव, रामजी यादव और लखन यादव सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे। ग्रामीणों ने शिलान्यास कार्यक्रम के प्रति उत्साह जताया और विधायक से अनुरोध किया कि क्षेत्र में अन्य बुनियादी समस्याओं जैसे सडक़ और पानी की समस्याओं का भी जल्द समाधान किया जाए। विधायक उईके ने ग्रामीणों को आश्वासन दिया कि विकास कार्यों में कोई बाधा नहीं आने दी जाएगी और सभी समस्याओं का जल्द निराकरण किया जाएगा।

छात्रों के भविष्य को सुरक्षित करने सरकार प्रतिबद्धः उप मुख्यमंत्री

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है है कि प्रदेश सरकार छात्रों के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए संकल्पित है। परीक्षाओं का आयोजन सुनियोजित और निष्पक्ष प्रक्रिया के अंतर्गत किया जा रहा है ताकि छात्रों को उनकी मेहनत का सही परिणाम मिल सके। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया है कि विधिवत परीक्षाओं का आयोजन और समय से परिणाम जारी किये जायेंगे।

उल्लेखनीय है कि मई-2024 से सितंबर-2024 के बीच आयोजित परीक्षाओं में बैच 2019-30, 20-21 और 21-22 के कुल 47,945 विद्यार्थी सम्मिलित हुए। इनमें B.Sc नर्सिंग थर्ड ईयर परीक्षा (मई-2024) में 8,293 विद्यार्थी उपस्थित हुए, जिनमें से 86.2% छात्र सफल रहे। इसी तरह, B.Sc नर्सिंग फर्स्ट ईयर परीक्षा (मई-2024) में 15,787 विद्यार्थी शामिल हुए, जिनमें से 74.7% विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए। P.B.B.Sc नर्सिंग फर्स्ट ईयर परीक्षा (मई-2024) में 4,601 विद्यार्थी उपस्थित हुए, जिनमें 65.3% सफलता दर रही। इसके अलावा, M.Sc नर्सिंग फर्स्ट ईयर परीक्षा (मई-2024) में 1,612 विद्यार्थी शामिल हुए, जिनमें से 80.4% छात्र पास हुए। सितंबर 2024 में बैच 21-22 के बी.एससी नर्सिंग फर्स्ट ईयर के 13 हज़ार 106, पीबीबीएससी नर्सिंग फर्स्ट ईयर में 2 हज़ार 980, और एमएससी नर्सिंग फर्स्ट ईयर में 1 हज़ार 66 विद्यार्थी परीक्षाओं में शामिल हुए। इन परीक्षाओं के परिणाम भी जल्द घोषित किए जाएंगे। बैच 2022-23 के विद्यार्थियों की परीक्षाएँ मार्च 2025 में आयोजित की जाएंगी जिनमें 25 हज़ार विद्यार्थी शामिल होंगे।

पार्षद का अल्टीमेटम, श्वान को पकड़ो नहीं तो धरना देंगे

नर्मदापुरम। कमिश्नर कॉलोनी में एक कुत्ते ने पिता-पुत्र सहित एक महिला और अन्य को काटा, कुत्ते के काटने से पंकज मेहरा, समता श्रीवास्तव, गौरव दुबे, ब्यान मेहरा घायल हुए घायल हुए सभी लोग जिला अस्पताल इलाज करने पहुंचे।

सुबह घटी इस घटना पर सक्रिय हुए वार्ड नंबर 12 के पार्षद पति और पार्षद की सक्रियता देखने लायक रही जो प्रशंसनीय कही जायेगी, इधर कुत्ते को एक घंटे के अंदर पकड़ने का अल्टिमेटम देकर समय सीमा में कुत्ता नहीं पकड़ने पर पार्षद पूजा मालवीय ने धरना पर बैठ जायेंगी घोषित किया और उधर उनके पति अर्पित मालवीय ने सोशल मीडिया पर सभी को हिला डाला। फिर क्या था इस मामले को लेकर न केवल प्रशासन हरकत में आया बल्कि विधायक जी ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा डाली। तुरंत नगरपालिका की टीम ने लोगों को काटकर परेशान करने वाले कुत्ते को पकड़ दिखाया, विधायक जी के निर्देश का पालन तुरंत नगरपालिका ने कर दिखाया जिससे क्षेत्र वासियों ने राहत की सांस ली।

पार्षद पूजा अर्पित मालवीय ने इस त्वरित कार्रवाई के लिए सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया.. काश विधायक जी नगर की व्यवस्थाओं के लिए इतनी ही तन्मयता और सक्रिय भूमिका निभाकर प्रशासन सहित नगरपालिका को गतिशील कर पाते..

वेतन रोकने के आदेश से भड़के पंचायत सचिव, रोजगार सहायक, सौंपा ज्ञापन

काम बंद, कलम बंद कर न्यायालय में जाने की दी चेतावनी

देवास। जिले कि जनपद पंचायत देवास बागली, टोकखुर्द सोनकच्छ कन्नौद खातेगांव की ग्राम पंचायतों में कार्यरत ग्राम पंचायत सचिवो/रोजगार सहायको के माह दिसम्बर के वेतन के भुगतान पर अनिश्चीतकाल के लिये रोक लगाकर मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत देवास द्वारा निर्देशित किया गया है कि देवास जिले कि ग्राम पंचायतो में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार ग्यारंटी योजना में मजदूरी भूगतान 50 प्रतिशत से अधिक नहीं होने के कारण से पदस्थ पंचायत सचिवो और रोजगार सहायकों को वेतन से वंचित कर दण्डित किया गया है।

इस संबंध में मप्र पंचायत सचिव संगठन देवास जिलाध्यक्ष आनंदसिह ठाकुर ने मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत देवास को ज्ञापन सौंपकर वेतन भुगतान पर लगाई गई रोक को गैर कानूनी करा देते हुए कहा है कि पूरे देश मे मनरेगा का एक कनून है। यह मांग आधारीत मजदूरी मूलक योजना है। योजनांतंग मजदूर परिवारों की काम के प्रति मांग के आधार पर उनको मनरेगा में मजदूरी ग्राम पंचायत द्वारा उपलब्ध कराई जाती है। इन मांग आधारित नियमों का पूरी तरह से पालन पंचायत सचिवो और ग्राम रोजगार सहायकों द्वारा किया जा रहा है। जबकि मनरेगा योजना में बजट की समस्या है। इस विलंबित भूगतान प्रक्रियाओं के कारण मजदूरो का लगाव इस मांग आधारित मनरेगा योजना से मोह भंग हो गया है। ऐसी स्थिति में श्री ठाकुर ने कहा कि मजदूरो का रूझान नही होने से योजना ठप होने के कगार पर है।

इसके लिये पंचायत सचिवो रो. सहा. को का वेतन रोककर उनके सम्पूर्ण परिवारो को डण्डीत नहीं किया जा सकता शासकीय कर्मी-कर्मचारी पंचायत सचिव- रोजगार सहा. का वेतन रोक कर बल पूर्वक कार्य करने के लिये मजबूर करना राज्य के अच्छे नियोक्ता को शोभा नहीं देता शीघ्र ही इस गैर कानूनी वेतन रोकने के आदेश को निरस्त कर वेतन भुगतान नहीं किया जाता है तो जिले भर की ग्राम पंचायतों में पंचायत सचिव व रो. सहा. द्वारा काम बंद कलम बंद कर जनपद प्रांगणो में बैठ कर आंदोलन किया जाएगा। इसी आशय का ज्ञापन जनपद पंचायत कन्नौद के पंचायत सचिव व रोज सहा. ने अनुविभागीय अधिकारी राजस्व कन्नौद श्री प्रजापति को सौपकर शीघ्र वेतन भुगतान कराने कि मांग कि है।

इस अवसर पर पंचायत सचिव संगठन के ब्लाक अध्यक्ष शंकरलाल जाणी, धर्मेन्द्र जोशी, विनोद मेहन्दिया, हेमराज सांवले, दुर्गा प्रसाद गुर्जर, ईश्वर मण्लोई, संतोष धांनवे, कुलदीप जाट आदि उपस्थित थे।

स्वास्थ्य सेवाओं का सशक्तिकरण सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

पीएम-जनमन अभियान के अंतर्गत 66 मोबाइल मेडिकल यूनिट का किया शुभारंभ

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि स्वास्थ्य सेवाओं का सशक्तिकरण प्रदेश सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। हमारा लक्ष्य है कि प्रदेश के प्रत्येक कोने तक उत्कृष्ट स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचे, हर ज़िले में मेडिकल कॉलेज हों, अत्याधुनिक उपकरण उपलब्ध हों और पर्याप्त स्वास्थ्य अमला हो। उन्होंने कहा कि 46 हज़ार से अधिक स्वास्थ्य अमले की भर्ती के लिये स्वीकृति दी जा चुकी है। उन्होंने शीघ्र भर्ती प्रक्रिया पूरा करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सशक्त स्वास्थ्य सेवाओं और शिक्षा से कोई भी क्षेत्र विकास की छलांग लगाने के लिये तैयार होता है। सशक्त और विकसित प्रदेश के लिये इन क्षेत्रों का सशक्त होना ज़रूरी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने समत्व भवन से 'पीएम जनमन अभियान' के तहत 66 मोबाइल मेडिकल यूनिट (एमएमयू) को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। ये मोबाइल मेडिकल यूनिट प्रदेश के दूरस्थ और दुर्गम क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की सहज और सुलभ उपलब्धता का कार्य करेगी।

संसाधनों की कमी नहीं होने दी जायेगी- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मोबाइल मेडिकल यूनिट्स दुर्गम और स्वास्थ्य सुविधाओं से वंचित क्षेत्रों में पहुँचकर आमजन को ओपीडी, रोग निदान, उपचार और दवाइयों जैसी आवश्यक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करेंगी। प्रत्येक यूनिट में प्रशिक्षित स्वास्थ्य कर्मी और अत्याधुनिक चिकित्सा उपकरण उपलब्ध रहेंगे। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इस पहल से प्रदेश के स्वास्थ्य मानकों में बड़ा सुधार देखने को मिलेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं के सशक्तीकरण के लिये संसाधनों की कमी नहीं होने दी जायेगी। मध्यप्रदेश को स्वास्थ्य क्षेत्र में अग्रणी बनाने के लिये हम संकल्पबद्ध हैं।

87 विकासखण्डों के 1268 ग्रामों में पहुँचेगी यूनिट- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि मोबाइल मेडिकल यूनिट्स (एमएमयू) से 21 जिलों के 87 विकासखंडों में 1268 ग्रामों के लगभग 3,12,246 लोगों को स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएंगी। योजना में चिन्हित जिले अनूपपुर, अशोकनगर, बालाघाट, छिन्दवाड़ा, दतिया, डिंडौरी, गुना, गवालियर, कटनी, मंडला, मुरैना, नरसिंहपुर, सतना, शहडोल, श्योपुर, सीधी, शिवपुरी, जबलपुर, रायसेन, उमरिया और विदिशा शामिल हैं।

मोबाइल मेडिकल यूनिट दुर्गम क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवा प्रदाय में लायेंगी क्रांतिकारी बदलाव

उप मुख्यमंत्री एवं स्वास्थ्य मंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने के लिए स्वस्थ भारत के निर्माण की दिशा में मध्यप्रदेश सरकार युद्धस्तर पर कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि 'पीएम जनमन अभियान' के तहत प्रदेश के 21 जिलों के 87 विकासखंडों में 66 मोबाइल मेडिकल यूनिट्स स्वास्थ्य सेवाओं के प्रदाय में एक क्रांतिकारी बदलाव लाने का कार्य करेंगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश के वे क्षेत्र जो स्वास्थ्य सेवाओं में पिछड़े और दुर्गम हैं, वहाँ विशेष प्रयासों के माध्यम से स्वास्थ्य सुविधाओं को सुलभ बनाया जा रहा है।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि केंद्र और राज्य सरकार के बीच उत्कृष्ट समन्वय और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के सशक्त नेतृत्व और प्रगतिशील सोच से सिंचाई, स्वास्थ्य, शिक्षा, अधोसंरचना विकास और औद्योगिक विकास सहित विभिन्न क्षेत्रों में प्रदेश में नए मानक स्थापित हो रहे हैं। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने विश्वास व्यक्त किया कि स्वास्थ्य विभाग के पूरे अमले के समर्पण और निष्ठापूर्ण प्रयासों से मध्यप्रदेश निश्चित रूप से स्वास्थ्य के विभिन्न मानकों में अग्रणी राज्य बनने में सफल होगा।

मोबाइल मेडिकल यूनिट (एमएमयू) के लाभ

प्रत्येक मोबाइल मेडिकल यूनिट में प्रशिक्षित मानव संसाधन, जिसमें एक डॉक्टर, नर्स, एएनएम/एमपीडब्ल्यू, लैब टेक्नीशियन, फिजियोथेरेपिस्ट और ड्राइवर शामिल हैं, सेवाएँ प्रदान करेंगे। प्रत्येक यूनिट में 14 प्रकार की जांच सुविधाएँ, 65 प्रकार की आवश्यक दवाइयाँ और 29 प्रकार की स्वास्थ्य सामग्रियाँ उपलब्ध रहेंगी।

मोबाइल मेडिकल यूनिट्स के माध्यम से लोगों को संचारी रोगों और मूलभूत ओपीडी सेवाएँ, टीबी, कुष्ठ, मलेरिया, फाइलेरिया जैसी बीमारियों की पहचान और उपचार, प्रसवपूर्व एवं प्रसव उपरान्त देखभाल, उच्च जोखिम गर्भवती महिलाओं का चिन्हांकन, मधुमेह, उच्च रक्तचाप और गुर्दा रोगों की पहचान, नवजात शिशुओं में जन्मजात विकृतियों की जाँच एवं उपचार, परिवार नियोजन सेवाएँ, मानसिक स्वास्थ्य और पोषण परामर्श, वृद्धजनों की देखभाल और आकस्मिक चिकित्सा सेवाएँ प्रदान की जाएंगी। इन यूनिट्स को जीपीएस प्रणाली से लैस किया गया है, जिससे उनकी निगरानी और संचालन में पारदर्शिता बनी रहेगी। प्रत्येक मोबाइल मेडिकल यूनिट एक माह में 24 दिन तक सेवाएँ प्रदान करेगी और प्रतिदिन 2 गांवों में लगभग 50 मरीजों का इलाज करेगी। इस अवसर पर लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्य मंत्री श्री नरेंद्र शिवाजी पटेल, प्रमुख सचिव लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा श्री संदीप कुमार यादव और एमडी एनएचएम डॉ. सलोनी सिडाना सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

श्रीमंत ट्रॉफी मिस्टर मध्य प्रदेश बॉडी बिल्डिंग चैंपियनशिप

मोहम्मद अल्ताफ बने मिस्टर एमपी, पुष्पेंद्र ठाकुर ने जीता मिस्टर देवास का खिताब

देवास। देवास जिला बॉडीबिल्डिंग एसो. द्वारा आयोजित श्रीमंत ट्रॉफी मिस्टर मध्य प्रदेश चैंपियनशिप 5 जनवरी 2025 को स्थानीय सयाजी गेट पर आयोजित की गई। जानकारी देते हुए एसोसिएशन अध्यक्ष रेहान शेख ने बताया कि पूरे मध्य प्रदेश से इस चैंपियनशिप में भाग लेने लगभग 200 से ऊपर बॉडीबिल्डर देवास पहुंचे थे। बॉडीबिल्डरों के रुकने और खाने की व्यवस्था एसो. द्वारा ही की गई थी। प्रतियोगिता शाम को शुरू हुई जो देर रात तक जारी रही।

जन- गण- मन के साथ इस चैंपियनशिप का शुभारंभ किया गया। सबसे पहले मिस्टर देवास बॉडी बिल्डर चैंपियनशिप शुरू हुई। देवास के लगभग 30 से ऊपर बॉडीबिल्डर ने मिस्टर देवास बॉडी बिल्डर बनने के लिए इस चैंपियनशिप में हिस्सा लिया और स्टेज पर अपनी मांसपेशियों का जानदार प्रदर्शन किया। निर्णायकों द्वारा टॉप टेन बॉडीबिल्डर चुने गए, जिसमें से टॉप 4 को पुरस्कार दिए गए। चौथे स्थान पर बेस्ट इंप्रूव बॉडी संजय कंक, तीसरे नंबर पर (बेस्ट मस्कुलर बॉडी) सईद खान, दूसरे नंबर पर चेतन भन्नारे (बेस्ट पोजर बॉडी) और पहले स्थान पर पुष्पेंद्र ठाकुर ने जीत दर्ज कर मिस्टर देवास (चैंपियन ऑफ चैंपियन) का खिताब जीता। इस दौरान अतिथि के रूप में उपस्थित सभापति रवि जैन ने विजेता खिलाड़ियों को ट्रॉफी और नगद राशि से पुरस्कृत किया।

मिस्टर देवास के बाद मिस्टर मध्य प्रदेश का मुकाबला शुरू हुआ, जिसमें 200 से ऊपर बॉडीबिल्डर ने विभिन्न वेट कैटेगरी में अपना प्रदर्शन किया। हर कैटेगरी के विजेता बॉडीबिल्डर ने अंत में मिस्टर मध्य प्रदेश बॉडीबिल्डर चैंपियनशिप में हिस्सा लिया। सर्द हवाओं में बॉडीबिल्डरों ने अपनी मांसपेशियों का शानदार प्रदर्शन कर दर्शकों को देर रात तक बांधे रखा।

निर्णायकों की भूमिका अतिन तिवारी, प्रेम सिंह यादव, जितेंद्र सिंह कुशवाह, शेलेन्द्र व्यास, अमित कनोजिया, माज़ कुरेशी, आशीष टोक, मकबूल वारसी, कुलदीप त्रिवेदी, अर्जुन पंडित, साजिद खान ने निभाई।

मिस्टर मध्यप्रदेश चैंपियनशिप के विभिन्न वेट कैटिगरी के खिलाड़ियों के बीच हुए मुकाबले में चैंपियन ऑफ चैंपियन श्रीमंत ट्रॉफी मिस्टर मध्य प्रदेश पर भोपाल के मोहम्मद अल्ताफ ने अपना कब्जा किया। उन्होंने सभी खिलाड़ियों को पीछे छोड़ते हुए इस खिताब को अपने नाम किया और वह मिस्टर मध्य प्रदेश बने। इसी के साथ भोपाल के हाशिम अली को बेस्ट इंप्रूव बॉडी, नर्मदापुरम के मिर्जा जमाल को बेस्ट मस्कुलर बॉडी, भोपाल के अखरार हुसैन को बेस्ट पोजर बॉडी का खिताब दिया गया। इन सभी विजेताओं को ट्रॉफी और नगद पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। चैंपियनशिप में भाग लेने वाले सभी खिलाड़ियों को भी पुरस्कृत किया गया।

पूरी प्रतियोगिता में कुल 139,000 के नगद पुरस्कार का वितरण किया गया। एसो. द्वारा इस आयोजन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले साथियों को खेल मित्र अवॉर्ड से भी पुरस्कृत किया गया। निर्णायकों को भी सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विधायक सोनकच्छ राजेश सोनकर ने सम्मिलित होकर खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाया। जिला बॉडीबिल्डिंग एसो. के अकबर शेख (अज्जू), अध्यक्ष रेहान शेख, सचिव मनदीप सिंह पंवार, कोषाध्यक्ष रोहन वर्मा, खुमान सिंह बैस, खालिक शेख (चाचा), वीरेंद्र सिंह ठाकुर,चेतन राठौड़, चेयरमैन पंडित आशीष शर्मा, भास्कर बेस (सह सचिव), सम्राट सोनी, अंकित दुबे, जीशान शेख, प्रमोद चौहान, नीरज गेहलोद, निखिल ठाकूर, कुलदीप ठाकुर, शाबाज़ खान, अभिजीत सिंह बैस, मुर्तज़ा सैफ़ी, साहिल शेख, शुभम विश्वकर्मा, अमन बैग, मलिक शेख, आदि ने खिलाड़ियों को बधाई प्रेषित की। चैंपियन का सफल संचालन चंद्रपाल सिंह सोलंकी (छोटू) ने किया। उक्त जानकारी जिला बॉडी बिल्डिंग एसो. के मीडिया प्रभारी चेतन राठौड़ ने दी।

मध्य प्रदेश एवं हरियाणा विस की स्थानीय निकाय एवं पंचायती राज समिति की संयुक्त बैठक

भोपाल। मध्य प्रदेश एवं हरियाणा विधानसभा की स्थानीय निकाय एवं पंचायती राज संस्थाएं समिति की संयुक्त बैठक आज विधानसभा भवन भोपाल में संपन्न हुई।

बैठक में विशेष रूप से आमंत्रित मध्य प्रदेश शासन के संसदीय कार्य एवं नगरीय विकास विभाग मंत्री, श्री कैलाश विजयवर्गीय ने हरियाणा विधानसभा के उपाध्यक्ष एवं समिति के सभापति तथा मध्य प्रदेश की स्थानीय निकाय एवं पंचायती राज संस्थाएं समिति के सभापति के मध्य प्रदेश शासन के नगरीय विकास विभाग द्वारा संचालित

योजनाओं की जानकारी साझा कीं।

संयुक्त बैठक के आरंभ में मध्य प्रदेश विधानसभा के प्रमुख सचिव श्री अवधेश प्रताप सिंह ने श्री कैलाश विजयवर्गीय, आगंतुक समिति के सभापति एवं हरियाणा विधानसभा उपाध्यक्ष श्री किशन लाल मिड्ढा,मध्य प्रदेश विधानसभा सभा की स्थानीय निकाय एवं पंचायती राज संस्थाएं समिति के सभापति श्री रमेश मेंदोला का पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत किया तथा सचिव श्री अरविंद शर्मा ने हरियाणा विधानसभा के सदस्य सर्वश्री रणधीर पनिहार एवं मोहम्मद सिराज का पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत किया ।तत्पश्चात दोनों समितियों के संबंध में विचार-विमर्श कर जानकारियों का आदान-प्रदान किया गया । इस अवसर आगंतुक समिति को मध्य प्रदेश विधानसभा का स्मृति चिन्ह एवं अन्य प्रकाशन भी भेंट किया गया।

संयुक्त बैठक में मध्य प्रदेश विधानसभा की स्थानीय निकाय एवं पंचायती राज संस्थाएं समिति के सदस्य सर्व श्री अशोक ईश्वरदास रोहाणी ,विश्वामित्र पाठक, डॉ राजेश सनकर, दिव्यराज?सिंह, डॉ सतीश सिकरवार, हरियाणा विधानसभा के अधिकारी के साथ ही नगरीय विकास विभाग के प्रमुख सचिव श्री संजय शुक्ल भी उपस्थित रहे ।

31वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का हुआ समापन

यह कार्यक्रम भविष्य के वैज्ञानिकों को तैयार करने का एक महत्वपूर्ण कदम : डॉ. अनिल कोठारी

भोपाल। 31वें राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का समापन समारोह भोपाल के रवींद्र भवन में उल्लास, जोश और वैज्ञानिक ऊर्जा के साथ सम्पन्न हुआ। चार दिवसीय इस आयोजन ने स्वास्थ्य और कल्याण के लिए पारिस्थितिकी तंत्र की समझ थीम पर विज्ञान और नवाचार को केंद्र में रखते हुए हजारों छात्रों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान किया। 31वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस के समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. राजीव त्रिपाठी, विशिष्ट अतिथि के रूप में विज्ञान भारती के राष्ट्रीय सह संगठन सचिव श्री प्रवीण रामदास, राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान भोपाल के निदेशक डॉ सी सी त्रिपाठी के साथ साथ एन सी एस टी सी, डी एस टी की प्रमुख डॉ रश्मि शर्मा एवं मेपकास्ट के महानिदेशक डॉ अनिल कोठारी माननीय मुख्यमंत्री के सांस्कृतिक सलाहकार श्री श्रीराम तिवारी उपस्थित थे।

कार्यक्रम के प्रमुख तथ्य- कार्यक्रम में कुल 640 छात्रों ने भागीदारी की जिसमे 194 प्रोजेक्ट मॉडल प्रस्तुत किये गए। इसमें 10 अंतरराष्ट्रीय नवाचार मॉडल भी थे। 376 छात्राओं ने अपने वैज्ञानिक मॉडल्स के माध्यम से भागीदारी की। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में 28 राज्यों और 6 देशों के बच्चों ने भाग लिया। 16 सत्रों में विज्ञान के विशेषज्ञों और वैज्ञानिकों ने बच्चों के प्रश्नों के उत्तर दिए और उन्हें भविष्य में अनुसंधान के लिए प्रेरित किया। देश के भीतर सर्वश्रेष्ठ 20 एवं 06 अंतर्राष्ट्रीय मॉडल्स को स्मृति चिह्न और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस आयोजन में कतर, कुवैत, सऊदी अरब और अन्य देशों के छात्रों ने अपनी भागीदारी दर्ज कराई। विज्ञान पर आधारित नाट्य प्रस्तुतियाँ हुई। यह मॉडल कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित रोबोटिक डॉग का प्रदर्शन किया गया । इसमें अत्याधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों का लाइव प्रदर्शन किया गया। लखन प्रजापति द्वारा पोट्रेट प्रदर्शनीः विज्ञान और कला का अनोखा संगम देखने को मिला। विभिन्न विद्यालयों के प्रोजेक्ट मॉडलः छात्रों ने स्वास्थ्य, पर्यावरण संतुलन, ऊर्जा संरक्षण, जैव विविधता और सतत विकास पर प्रोजेक्ट प्रस्तुत किए। छत्तीसगढ़, कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, त्रिपुरा और दिल्ली के छात्रों को विशेष पुरस्कार प्रदान किए गए।

साइबर सेल ने 25 लाख रुपए के गुम मोबाइल खोजे

खोजकर मोबाईल मालिकों को दिया नववर्ष का उपहार, पूरे साल में 75 लाख के 440 मोबाईल खोजकर लौटाये

देवास/मोहन वर्मा। पुलिस अधीक्षक देवास को लगातार मोबाइल गुमने संबंधी आवेदन पत्र प्राप्त हुये थे जिन पर कार्यवाही करते हुये पुलिस अधीक्षक देवास द्वारा सायबर सेल देवास को गुम हुये मोबाइल फोन को खोजने हेतु निर्देशित किया गया । पुलिस अधीक्षक देवास श्री पुनीत गेहलोद के निर्देशन में एवं अतिरक्त पुलिस अधीक्षक देवास (शहर) श्री जयवीर सिंह भदौरिया के मार्गदर्शन में सायबर सेल देवास द्वारा गुमे हुये कुल 150 मोबाइल कीमती लगभग 25 लाख रूपये के खोजे गये हैं

सभी गुम हुए मोबाइल को नववर्ष के उपहार के रूप में आज दिनांक 06.01.2025 को पुलिस कंट्रोल रूम देवास में एक कार्यक्रम आयोजित कर पुलिस अधीक्षक देवास एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक देवास (शहर) द्वारा संबंधित मोबाइल स्वामियों को वितरित किये गए । साथ ही सायबर सुरक्षा एवं जागरूकता के संबंध मे जनता को जागरुक किया गया ।

सायबर सेल देवास द्वारा लगातार गुमे हुये मोबाइल फोन को खोजा जाकर वास्तविक स्वामियों को पहुँचाये जाते है जिसमें वर्ष 2024

में फरवरी में 160, अगस्त मे 130 एवं आज 150 सहित कुल 440 गुमे हुये मोबाइलो को खोजने में पुलिस सायबर सेल टीम देवास से उनि कपिल नरवले, प्रआर सचिन चौहान, शिवप्रताप सिंह, मप्रआर गीतिका कानूनगो, मुर्तजा कर्नल, आर योगेश कदम,सोनू कुमार,मआर आरती सिंह, नैना खान,आर राहुल बडोले,मोनू राणावत,मआर निशा पाटोरिया, ज्योति कुमावत का विशेष योगदान रहा । पुलिस अधीक्षक द्वारा साइबर सेल की टीम को नगद ईनाम से पुरुष्कृत करने की घोषणा की है ।

उल्लेखनीय है कि वर्ष 2024 में साइबर सेल द्वारा लगभग 400 मोबाइल क़ीमती लगभग 75 लाख रुपये के खोजकर आवेदकों को वापस किए हैं मोबाइल पाकर आवेदकों ने पुलिस अधीक्षक एवं सायबर सेल टीम को धन्यवाद दिया।

राइट क्लिक

सड़कों पर क्यों ठोकरें खाता है सरकारी नौकरी का ख्वाब ?

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

बिहार लोक सेवा आयोग (बीपीएससी) के परीक्षार्थियों का प्रारंभिक परीक्षा रद्द करने का आंदोलन तीन हफ्ते के भी बाद भी समाप्त नहीं हो रहा है तो इसको लेकर कई सवाल उठने लगे हैं। पहला तो यह राज्यों में सरकारी नौकरी पाने का युवाओं का ख्वाब अमूमन इस तरह सड़कों पर दर-दर की ठोकरें खाने पर क्यों मजबूर है? दूसरे, देश के अधिकांश राज्य लोक सेवा आयोग अक्षमता के शिकार हैं, ऐसा क्यों? उनके द्वारा भर्ती किए जाने वाले कल के अफसरों और अन्य कर्मचारियों के चयन की शुचिता क्यों नहीं रह पाती है? ऐसा होने के लिए जिम्मेदार कौन है, सरकारी नौकरी का सपना देखने वाले या फिर इन रूआबदार नौकरियों के लिए परीक्षा आयोजित करने वाले तीसरे, इन धांधलियों पर लगाम कब लगेगी और कौन लगाएगा?

बीपीएससी की 70वीं संयुक्त प्रारंभिक परीक्षा (सीपीई) के पेपर लीक होने की खबर के बाद से गुस्साए परीक्षार्थी सड़कों पर उतरे हुए हैं और पटना के गर्दनीबाग में धरना दे रहे हैं। गड़बडी की गंभीर शिकायतों के बीच बीपीएससी ने 4 जनवरी को री-एग्जाम (पुनर्परीक्षा) भी आयोजित की, लेकिन समस्या का समाधान नहीं हुआ। क्योंकि परीक्षार्थियों को बीपीएससी पर ही भरोसा नहीं है। (हालांकि किसी संस्था पर से भरोसा उठ जाना भी समस्या के समाधान में मददगार नहीं होता)। व्यवस्था और तंत्र पर आपको कुछ तो यकीन रखना ही होगा। बीपीएससी ने इतना जरूर माना कि बापू परिसर परीक्षा केन्द्र पर पेपर लीक हुआ। लेकिन उसने समूची परीक्षा रद्द करने से इंकार कर दिया। शक यह भी है कि परीक्षार्थियों के सड़कों पर उतरने के पीछे कोचिंग क्लास माफिया का हाथ है। क्योंकि वो सभी प्रतियोगी परीक्षाएं अपनी सुविधा और स्वार्थ के हिसाब से करवाना चाहते हैं। न होने पर आंदोलन करवा देते हैं। उधर यह राजनीतिक मुद्दा भी बन गया है। शुरू में कुछ विपक्षी दलों ने आंदोलनकारी परीक्षार्थियों के साथ खड़ा दिखने की कोशिश की, लेकिन बाद में जन सुराज पार्टी के प्रशांत किशोर द्वारा आंदोलन को हाईजैक करता देख, दूसरे दलों ने इससे दूरी बना ली। सत्तारूढ़ एनडीए के घटक दल तो इस आंदोलन को शुरू से प्रायोजित और नीतीश सरकार को बदनाम करने वाला बता रहे हैं। हालांकि कुछ राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि अगर मामला नहीं सुलझा तो परीक्षार्थियों का यह आंदोलन मिनी अन्ना आंदोलन में भी तब्दील हो सकता है, जो सत्तारूढ़ एनडीए के लिए खतरे की घंटी है। क्योंकि बिहारी छात्रों में राजनीतिक चेतना वैसे भी दूसरों से ज्यादा है। लेकिन क्या सचमुच ऐसा होगा या फिर राज्य की नीतीश सरकार इसे जितना लटकाएगी, उतना ही आंदोलन स्वतः कमजोर होता जाएगा, इसका उत्तर मिलना अभी बाकी है। वैसे आंदोलनकारी परीक्षार्थियों का मानना है कि असल में खतरे की घंटी तो नीतीश सरकार के लिए है, क्योंकि राज्य में इसी साल के अंत में विधानसभा चुनाव होने हैं। हालांकि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार इस आंदोलन को लेकर बेफिक्र दिखते हैं। उन्हें नहीं लगता कि प्रदेश के हजारों प्रतियोगी परीक्षार्थियों की नाराजगी आगामी विधानसभा चुनाव में उनके लिए पानीपत साबित हो सकती है। उनकी निगाह में यह आंदोलन भी बुलबुला है, जो फूट जाएगा। क्योंकि इस आंदोलन की हवा को चुनाव तक खींचना टेढ़ी खीर है।

प्रतियोगी परीक्षाओं में गड़बड़ियों को लेकर देश में अलग-अलग राज्यों में होने वाले विभिन्न आंदोलनों में बीपीएससी अभ्यर्थियों का आंदोलन अब तक का सबसे लंबा आंदोलन है। इसके पहले हमने उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र में भी सरकारी नौकरियों के लिए आयोजित राज्य लोक सेवा आयोगों की परीक्षाओं में गड़बड़ी और मनमाने फैसलों के खिलाफ परीक्षार्थियों को सड़कों पर उतरते देखा है। इससे एक बात साफ है कि आजकल अपवादस्वरूप ही कोई प्रतियोगी परीक्षा पूरी तरह निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से होती है। कहीं नीयत में खोट है तो कहीं व्यवस्था में जबर्दस्त खामियां हैं। परीक्षा आयोजन में प्रौद्योगिकी का बढ़ता इस्तेमाल उसकी शुचिता, पारदर्शिता और त्वरितता के लिए कम, हेराफेरी के लिए ज्यादा होता दिख रहा है। अव्वल तो राज्यों में सरकारी भर्ती के विज्ञापन ही कम निकलते हैं। निकले भी तो उसमें दस गलतियां होती है या जानबूझकर की जाती हैं। मान लीजिए कि विज्ञापन के बाद प्रतियोगी परीक्षा की तारीखें घोषित हो भी गईं तो तय तिथि को परीक्षा हो जाए तो खुद को किस्मत वाला समझिए। अगर परीक्षा भी समय पर हो गई तो परीक्षा के पेपर लीक होना, पर्चे बिकना, फिर रिजल्ट बरसों लटके रहना, रिजल्ट भी आ जाए तो नियुक्ति पत्र मिलने के लिए बरसों इंतजार करने की मजबूरी अब आमबात हो गई है। केवल यूपीएससी की परीक्षाएं काफी हद तक बेहतर ढंग से हो रही हैं। वरना अन्य प्रतियोगी परीक्षा के अभ्यर्थियों को हर बात में इंसाफ के लिए या तो सड़कों पर आना पड़ता है या फिर कोर्ट की शरण लेनी पड़ती है। ऐसा क्यों हो रहा है, इसका न तो कोई जवाबदेह है और न ही किसी को इसकी चिंता है। जबकि यह देश के युवाओं के भविष्य से जुड़ा गंभीर मुद्दा है।

बीपीएससी की कहानी भी इससे अलग नहीं है। वहां बरसों बाद बड़े पैमाने पर द्वितीय श्रेणी के सरकारी पदों पर भर्तियां निकली थीं। लेकिन उसमें भी अफरा-तफरी हुई। बताया जाता है कि बीपीएससी में पेपर लीक का विवाद परीक्षा के बापू सेंटर से शुरू हुआ। वहां कुछ पेपर कम पड़ गए थे तो दूसरे केन्द्र से मंगवाने पड़े। जिससे कई परीक्षार्थियों को थोड़े समय के अंतर से पेपर मिले। यकीनन यह बीपीएससी की बड़ी लापरवाही थी। अगर आयोग पर्याप्त संख्या में परीक्षार्थियों को प्रश्नपत्र भी उपलब्ध नहीं करा सकता तो इसे क्या कहा जाए? इस बीच खबर फैली कि पेपर लीक हो चुका है। यह सुनते ही छात्र भड़क गए और उन्होंने पेपर का बहिष्कार कर विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया। इस बीच एक आंदोलनकारी को पटना डीएम ने तमाचा जड़ दिया। उधर बीपीएससी का कहना है कि मामला चूंकि एक ही सेंटर का था इसलिए पूरी परीक्षा रद्द करने का सवाल ही नहीं है। लेकिन इस दलील पर परीक्षार्थियों को भरोसा नहीं हो रहा। उनका आंदोलन उग्र हो गया तो पुलिस ने लाठियां भी बरसाईं। अब जन सुराज पार्टी के प्रशांत किशोर इस आंदोलन के पुरोधा बनकर अपनी सियासी जमीन तलाशने की कोशिश कर रहे हैं। इस बीच कुछ अन्य नेताओं जैसे तेजस्वी यादव आदि ने भी शुरू में आंदोलनकारियों से सहानुभूति जताई, लेकिन बाद में हाथ खींच लिया। अब परीक्षार्थियों का कहना है कि वे मुद्दे को लेकर हाई कोर्ट जाएंगे।

कुलमिलाकर बिहार पीएससी परीक्षार्थियों को कोई राहत जल्द मिलेगी, ऐसा लगता नहीं है। हमने पिछले साल नंवबर में उत्तर प्रदेश पीएससी के परीक्षार्थियों का आंदोलन भी देखा,जो मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के हस्तक्षेप के बाद समाप्त हुआ था। वहां परीक्षार्थी यूपीपीएससी द्वारा नार्मलाइजेशन प्रक्रिया के बजाए पर्सटाइल पद्धति से परीक्षा कराने, पूरी परीक्षा एक ही पाली में कराने की मांग को लेकर आंदोलन पर उतरे थे। बता दें कि नॉर्मलाइजेशन से तात्पर्य किसी भी परीक्षा में परीक्षार्थियों की तादाद बहुत ज्यादा होने पर आयोजक दो पालियों में परीक्षा कराते हैं। ऐसे में अगर पहली पाली का पेपर कठिन आता है और उसमें अभ्यर्थियों के कम नंबर आते हैं तो दूसरी पाली का पेपर थोड़ा आसान होता है और उसमें अभ्यर्थियों के ज्यादा नंबर आते हैं तो कठिन पेपर वाली पाली के अभ्यर्थियों के नंबर में थोड़ी बढ़ोतरी कर दी जाती है। यही नॉर्मलाइजेशन कहलाता है। विरोध कर रहे अभ्यर्थियों का कहना था कि यह खेल के बीच नियम बदलने जैसा है और इसमें धांधली की पूरी गुंजाइश है। लिहाजा समूची परीक्षा एक ही पाली में कराई जाए। सवाल यह है कि जब यूपीएससी प्रारंभिक परीक्षा एक पाली में कराती है तो राज्य सेवा आयोग ऐसा क्यों नहीं कर सकते?

इसी तरह बीते दिसंबर में मप्र के इंदौर में 'नेशनल एजुकेटेड यूथ यूनियन' के बैनर तले एमपीपीएससी के अभ्यर्थियों ने न्याय यात्रा निकाली थी। उनकी मांग थी कि एमपीपीएससी की 2019 की मुख्यक परीक्षा की कॉपियां दिखाई जाएं और इसकी मार्कशीट जारी की जाए। साथ ही सभी विज्ञापित पदो पर एक साथ भर्ती की जाए। आंदोलनकारियों ने इंदौर में मप्र लोक सेवा आयोग के मुख्योलय पर धरना भी दिया। बाद में सरकार के दखल के बाद अभ्यर्थियों ने आंदोलन समाप्त किया। इसी तरह महाराष्ट्र में ठाकरे राज में महाराष्ट्र लोक सेवा आयोग द्वारा प्रस्तावित परीक्षाएं कोरोना के कारण रद्द करने पर नाराज अभ्यर्थियों ने राज्यव्यापी आंदोलन किया था।

॥ मंदिरम् ॥

05

सुरवाया की गढ़ी, शिवपुरी

शिवपुरी से 20 किलोमीटर दूर स्थित सुरवाया की गढ़ी नरवर शहर के ऐतिहासिक रत्नों में से एक है। एक किले, तीन हिंदू मंदिरों, एक मठ और एक बावड़ी के अवशेषों के लिए उल्लेखनीय, किला परिसर को पहले 'सरस्वती पट्टम' कहा जाता था। मंदिरों में कई पत्थर की नक्काशीदार मूर्तियों में से,एक सुंदर मूर्ति भगवान विष्णु की है जो गरुड़ पर सवार हैं। यहाँ की छत पर फूल उकेरे गए हैं, और खंभे पत्थर की नक्काशीदार मूर्तियों की सबसे आश्चर्यजनक वास्तुकला के साथ खड़े हैं। एएसआई ने सुरवाया की गढ़ी को राज्य के एक छिपे हुए विरासत रत्न के रूप में मान्यता दी, जो सुंदर कच्छ अपना खाता स्थापत्य शैली का प्रतिनिधित्व करता है। मध्य प्रदेश के शिवपुरी के पास एक छोटा सा किला छिपा हुआ है, जो वास्तुकला की चमक और सांस्कृतिक समृद्धि के भंडार से कम नहीं है। सुरवाया की गढ़ी मध्य प्रदेश की विरासत का एक छिपा हुआ रत्न है, जो राज्य के लिए आवश्यक है। शिवपुरी से 20 किमी दूर, शिवपुरी-झांसी रोड के पास, सुरवाया की गढ़ी नामक छोटा सा शहर स्थित है। एक शांत झील इस छोटे और विचित्र शहर के पुराने जमाने के आकर्षण को बढ़ाती है।

एमपी में बहुत जल्द होंगे आईएएस के तबादले

लंबे समय से एक ही जगह जमे अफसरों की भूमिका बदलेगी, एक-दो दिन में आ सकता है आदेश

भोपाल। मोहन सरकार एक साल का कार्यकाल पूरा करने के बाद जल्द ही नए साल की पहली प्रशासनिक सर्जरी करने वाली है। ये बदलाव एक-दो दिन में ही हो सकते हैं। जो आईएएस अधिकारी एक जनवरी को सचिव और अपर सचिव पद पर प्रमोट हो गए हैं और छोटे जिलों में पदस्थ हैं उन्हें या तो कलेक्टरी से हटाया जा सकता है या फिर बड़े जिलों की कमान सौंपी जा सकती है। इसके अलावा जिला पंचायतों में सीईओ की भूमिका निभा रहे आईएएस अफसरों को भी कलेक्टरी सौंपी जा सकती है। आठ कलेक्टर और दस जिला पंचायत सीईओ ऐसे हैं, जो दो साल या अधिक समय से एक ही जिले में पदस्थ हैं, इनके तबादले भी हो सकते हैं। चुनाव आयोग के निर्देश पर मतदाता सूची पुनरीक्षण प्रकाशन के चलते छह जनवरी तक कलेक्टरों के तबादले पर रोक थी। इसके चलते सरकार को मतदाता सूची के प्रकाशन का इंतजार था। अब मोहन सरकार कभी भी दो साल से ज्यादा अवधि पूरी कर चुके कलेक्टरों के तबादला आदेश जारी कर सकती है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सोमवार का दिन रिजर्व रखा है। इसलिए माना जा रहा है कि आज-कल में ही ट्रांसफर आदेश जारी किए जा सकते हैं। जल्द जारी होने वाले तबादला आदेश की प्रक्रिया में साल 2015-16 के आईएएस अधिकारियों को कलेक्टरी मिलने के चांस ज्यादा हैं। इस बीच यह बात भी सामने आई है कि कई आईएएस अधिकारी छह साल से एक ही पद पर जमे हुए हैं। ऐसे अफसरों को भी बदला जा सकता है। ऐसे अफसरों में अशोक कुमार चौहान, नियाज अहमद खान, विनय निगम, प्रीति जैन के नाम शामिल हैं। जो आईएएस अधिकारी चार साल से अधिक समय से एक ही सीट पर जमे हैं उनमें भावना वालिम्बे, मल्लिका निगम नागर, अरुणा गुप्ता, शिवशेखर शुक्ला, उषा परमार के नाम हैं। इसके अलावा तीन साल से अधिक समय से पदस्थ अफसरों की सूची में आरपीएस जादौन, राजेश ओगरे, राजेश कुमार कौल, प्रबल सिपाहा, मनीषा सेंतिया, अर्चना सोलंकी, अनय द्विवेदी के नाम शामिल हैं।

खेल गतिविधियां जीवन में सकारात्मकता का संचार करती हैं : मुख्यमंत्री डा यादव

नई शिक्षा नीति के माध्यम से स्पोर्टस टीचर्स भी बन सकेंगे वाइस चांसलर

मुख्यमंत्री ने 30वें इंटर प्रेस क्रिकेट टूर्नामेंट का किया शुभारंभ

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि खेल गतिविधियां जीवन में सकारात्मकता और ऊर्जा का संचार करती हैं। भारतीय संस्कृति में खेलों की समृद्ध और उत्कृष्ट परम्परा रही है। नई शिक्षा नीति के माध्यम से खेल के आधार पर डिग्री प्राप्त करने और स्पोर्टस टीचर को असिस्टेंट प्रोफेसर से लेकर वाइस चांसलर तक बनने की व्यवस्था स्थापित की गई है। खेल, व्यक्ति की दक्षता, क्षमता और योग्यता के प्रकटीकरण के प्रभावी माध्यम हैं। राज्य शासन प्रत्येक स्तर पर खेलों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश में सभी खेलों को प्रोत्साहित कर प्रतिभाओं को निखारने के लिए आवश्यक व्यवस्था स्थापित की है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में इसके परिणाम भी दिखाई दे रहे हैं। भोपाल में बेहतर क्रिकेट स्टेडियम विकसित करने की दिशा में प्रयास किए जाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव भोपाल के खेल पत्रकार संघ द्वारा आयोजित 30 वें इंटर प्रेस क्रिकेट टूर्नामेंट-2025 के शुभारंभ कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने ओल्ड केम्पियन ग्राउंड पर बल्लेबाजी कर टूर्नामेंट की शुरूआत की। इस अवसर पर खेल मंत्री श्री विश्वास सारंग, पूर्व विधायक श्री ध्रुव नारायण सिंह, सहित संघ के पदाधिकारी, मीडिया कर्मी एवं खेल प्रेमी उपस्थित थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने टूर्नामेंट के सफल आयोजन के लिए शुभकामनाएं दीं।

डेमोलाइट द्वारा पारिवारिक स्नेह मिलन समारोह का आयोजन

भोपाल। डिमॉन्सट्रेशन स्कूल भोपाल के पूर्व विद्यार्थियों का संगठन डेमोलाइट द्वारा रघुवर फॉर्म हाउस रायसेन रोड भोपाल में पारिवारिक स्नेह मिलन समारोह का आयोजन किया। इस अवसर पर वर्ष 1968 से लेकर 1995 बैच तक के पूर्व विद्यार्थी अपने परिवारजनों के साथ शामिल हुए और अपनी स्कूल लाइफ में गुजारे हुए समय को अपने दोस्तों से साथ याद किया। प्रकृति के खुश नुमा वातावरण के बीच किस्से कहानियों के चले दौर में सभी ने अपनी स्कूल समय की शरारतों को भी एक दूसरे से साझा करते हुए जमकर डांस, मस्ती, धमाल मचाया, साथ ही स्वादिष्ट भोजन का भी आनंद लिया। इस अवसर पर डिमॉन्सट्रेशन स्कूल के पूर्व छात्र और डेमोलाइट के सदस्य सेवानिवृत पूर्व अपर मुख्य सचिव, तथा वर्तमान चुनाव आयुक्त मध्यप्रदेश आईएएस मनोज श्रीवास्तव जी का शॉल श्रीफल से सम्मान किया गया। इस अवसर पर डिमॉन्सट्रेशन पूर्व विद्यार्थी संगठन डेमोलाइट के संरक्षक सदस्य श्री राजेंद्र सक्सेना, अध्यक्ष सतीश रायजादा, उपाध्यक्ष अजय शुक्ला, देवेंद्र साधो, कोषाध्यक्ष संजय कुदेशिया, महासचिव सुकांत जैन, केशव लालवानी, राजेन्द्र त्रिपाठी, संजीव श्रीवास्तव, वसीम खान, मनोज श्रीवास्तव, अरशद फारूक, सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, दीपक उपाध्याय, मुरलीधर लालवानी, डी. डी. सेठिया, इंदर शरण, शशेंद्र लहरी, राजेंद्र पाठक आदि उपस्थित रहे।

धोती-कुर्ता पहनकर खेल रहे क्रिकेट, संस्कृत में कमेंट्री

भोपाल में ग्राउंड पर यज्ञशाला जैसा नजारा, 19 टीमें खेलने आईं टूर्नामेंट

भोपाल। भोपाल के शिवाजी नगर स्थित अंकुर खेल ग्राउंड पर सोमवार को क्रिकेट मैच का नजारा बिल्कुल अनोखा था। खिलाड़ियों ने क्रिकेट की जर्सी की जगह धोती-कुर्ता पहन रखा था और हिंदी या अंग्रेजी के बजाय संस्कृत में कमेंट्री हो रही थी। माहौल ऐसा था, मानो यह क्रिकेट का मैदान नहीं बल्कि कोई यज्ञशाला हो। हर खिलाड़ी धोती-कुर्ता के साथ मस्तक पर त्रिपुंड और तिलक लगाए हुए था। गले में रुद्राक्ष की माला पहने हर खिलाड़ी का पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया। पिच पर रन लेने के दौरान भी सिर्फ संस्कृत भाषा का उपयोग हो रहा था। भोपाल में सोमवार, 6 जनवरी से महर्षि मैत्री मैच श्रृंखला-5 की शुरुआत हुई। आचार्य वेणीप्रसाद वरिष्ठ ने बताया कि महर्षि मैत्री समिति ने यह आयोजन किया है। उन्होंने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण भी गेंद का खेल खेलते थे। सदियों से क्रिकेट जैसी खेल परंपरा चली आ रही है। यह सांस्कृतिक और पारंपरिक खेल है, जो विचार और निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाता है। इसलिए पिछले 5 सालों से यह आयोजन हो रहा है। आयोजन समिति के अवनीश त्रिवेदी ने बताया कि इस बार पूरे मध्यप्रदेश से 19 टीमें आई हैं। धोती-कुर्ता में कर्मकांडी ब्राह्मण मैच खेल रहे हैं। पहला मैच आचार्य पाणीगृही चतुर्वेदी संस्कृत वैद पाठशाला और लक्ष्मीनारायण वैद्य विद्यालय के बच्चों के बीच हुआ, जिसमें आचार्य पाणीगृही चतुर्वेदी संस्कृत वैद पाठशाला की टीम विजेता रही। भोपाल में लगातार पांचवें वर्ष यह टूर्नामेंट किया जा रहा है। यह संभवतः प्रदेश का पहला ऐसा टूर्नामेंट है, जिसमें कमेंट्री संस्कृत भाषा में हो रही है। बता दें कि काशी में भी ऐसा ही एक टूर्नामेंट होता है, जिसमें संस्कृत भाषा में कमेंट्री की जाती है। प्रतियोगिता में पुरस्कार स्वरूप वेद की पुस्तकें दी जा रही हैं। 'प्लेयर ऑफ द मैच' को वेद पुस्तक प्रदान की जाती है, जबकि 'मैन ऑफ द सीरीज' के लिए पंचांग दिया जाता है। विजेता और उपविजेता टीमों को नकद राशि भी प्रदान की जाएगी।

पधारो म्हारा मध्यप्रदेश

एमपी अजब है-गजब है की टेग लाइन से आगे बढ़कर मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव ने नव वर्ष में प्रदेश की जनता के समक्ष एक अनुकरणीय उदाहरण पेश किया है। सीएम ने नववर्ष में प्रदेश और देश के पर्यटकों से पधारो म्हारा मध्यप्रदेश का संदेश दिया है। प्रदेश का मुखिया होने के नाते मुख्यमंत्री डॉ यादव ने नए वर्ष की शुरुआत महाकाल दर्शन और मध्य प्रदेश में सतपुड़ा की रानी पर्यटक स्थल पचमढ़ी में सपरिवार दिन बिताकर की।

मोहन का मंत्रालय

हर मंगलवार

आशीष चौधरी

पचमढ़ी में भोलेनाथ जी के दर्शन किए और पचमढ़ी की वादियों को नजदीक से निहारा। साथ ही प्रसिद्ध मढ़ई वन्य जीव पर्यटन स्थल का भ्रमण कर प्रदेश की जनता को मैसेज देने का प्रयास किया है कि नए वर्ष में अपना प्रदेश छोड़ कर अन्य स्थानों पर मनोरंजन के लिए जाने के बजाय मध्य प्रदेश में ही इतने पर्यटन स्थल हैं, जहां पर्यटकों को नए वर्ष की शुरुआत में जाने से परहेज नहीं होना चाहिए। इससे न केवल स्थानीय पर्यटन बढ़ेगा , बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था भी मजबूत होगी। मध्य प्रदेश धार्मिक पर्यटन से तो समृद्धशाली है ही , वहीं मध्य प्रदेश में वन्य पर्यटन स्थल भी देश में सर्वाधिक है। जब प्रदेश का पर्यटक इस ओर प्रेरित होगा तो अन्य राज्यों के पर्यटक भी मप्र की ओर रूख करेंगें मुख्यमंत्री की इस पहल को सभी ने सराहा है। बस इंतजार है आपकी परख का।

यहां भी चला शिवराज का जादू

केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान का जादू प्रदेश में कम होने का नाम नहीं ले रहा है। बीते दिनों खजुराहो में केन बेतवा नदी जोड़ो राष्ट्रीय परियोजना की आधारशिला कार्यक्रम में देखने को मिला। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंचासीन अतिथियों का क्रम से नाम लिया तो कार्यक्रम में मौजूद हजारों की जनता ने अभिवादन भी किया, लेकिन जब प्रधानमंत्री मोदी ने मंच पर मौजूद केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान का नाम लिया तो मौजूद जनता ने शिवराज का जोरदार करतल ध्वनि से न केवल स्वागत किया, बल्कि मामा..... मामा.... के नारे लगाकर सभा को गुंजित भी कर दिया। यह देखकर प्रधानमंत्री भी कुछ क्षणों के लिए रुक गए। यह बात अलग है कि प्रधानमंत्री ने मंच पर मौजूद एक पदाधिकारी का नाम नहीं लिया केवल सांसद कह कर संबोधित किया। इससे उनके के समर्थकों में घोर निराशा भी देखी गई। राजनीतिक हल्कों में इसके कई मायने निकाले जा रहे हैं।

ई-फाइलिंग बनी मुसीबत !

नए वर्ष यानी की 1 जनवरी से मध्य प्रदेश के प्रशासनिक मुख्यालय वल्लभ भवन में ई-फाइलिंग की व्यवस्था लागू की गई है। प्रशासनिक कामकाज में गोपनीयता बनाए रखने के लिए लागू की गई की फीलिंग व्यवस्था से मंत्रालय का स्टाफ अभी पूरी तरह प्रशिक्षित नहीं हुआ है और रोजमर्रा के काम में उन्हें ई फाइलिंग के जरिए आगे बढ़ाने में भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। मंत्रालय के सीनियर अधिकारियों का कहना है कि फाइल का हर मूवमेंट ई-फाइलिंग प्रोसेस में दर्ज किया जाए, लेकिन मंत्रालय का पुराना स्टाफ इसको कर नहीं पा रहा है या कहें कि ई-फाइलिंग के लिए कंप्यूटर ऑपरेट करना उसके बस की बात नहीं है। चूकि ई-फाइलिंग की मुख्य सचिव लगातार मॉनीटरिंग कर रहे हैं सो इसको लेकर कर्मचारियों को अधिकारियों की आए दिन नाराजगी का सामना करना पड़ रहा है।

एसीएस पीछे हटे

कभी राज्य सरकार की आंख, कान व नाक रहे अपर मुख्य सचिव स्तर के अधिकारी ने एक आयोग में अपने पुनर्वास के लिए उठाए कदमों को पीछे खींच लिया है। अपर मुख्य सचिव स्तर इस के अधिकारी ने आयोग में पुनर्वास के लिए शुरूआत में काफी जोर लगाया और इसके लिए लाबिंग भी की, लेकिन मौजूदा सरकार के कामकाज को लेकर एसीएस मन में अब निराशा घर कर गई। उन्होंने आयोग में पुनर्वास के लिए उठाए कदमों या कहें, दिये आवेदन को वापस ले लिया है। सूत्रों का कहना है कि एसीएस को अब को लगने लगा था कि आयोग में पुनर्वास के लिए उन्हें ऐसी चुनौतियां से रूबरू होना पड़ेगा, जो उनके स्वर्णिम काल में सामने आते तक नहीं थे। बता दें कि उक्त अपर मुख्य सचिव स्तर के अधिकारी इसी साल सेवानिवृत होने वाले हैं और कभी शासन की होने वाली बैठकों में सरकार के मुखिया एसीएस का बड़ी शिद्दत से नाम लेकर बुलाते थे।

जल्द गिरेगी सीई पर गाज

लोक निर्माण विभाग के एक मुख्य अभियंता पर जल्द ही गाज गिरने वाली है। रंगीले मुख्य अभियंता का रंगीन मिजाज फोटो इन दिनों विभाग में स्विमिंग पूल में उठती कृत्रिम लहरों की तरह हिलोरे मार रहा है। बताया जाता है कि सीई साहब ने नवागत पंजीकृत महिला ठेकेदार को तमाम नियमों को ताक में रखकर करोड़ों का भुगतान कर दिया और अपने मातहत अधिकारियों को भी इस अनियमित भुगतान में भागीदारी के लिए दबाव बनाने लगे। मातहत अधिकारियों ने इसकी शिकायत उच्च स्तर पर कर दी और मामला सीएम सचिवालय तक पहुंच गया। विभाग के सूत्र बताते हैं कि सीई पर जल्द ही गाज गिरने वाली है और उनके द्वारा नियम विरुद्ध स्वीकृत किए गए करोड़ों के देयकों जांच भी होगी।